डभियाएल गाम

डभियाएल गाम

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

DABHIYAL GAM (डभियाएल गाम)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-7-6
दाम: 251/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)
पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2016)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै
घरे-घर समाज कहि-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै
इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै
बनि-कनियाँ-पुतरा-पुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै
राति-दिन एकबट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै
घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छइ।

•••
••
•

कथा-सत्तैर:

गलफूलू

परिवारक कन्यादानक आइ नमम दिन छी। पसारी-उसारीमे खाली कुमहैन पछुआएल छेली, काल्हिखन हुनको साड़ी पहिरा विदाइ दऽ देल गेलैन। ओना, पसारियो-पसारीक अपन-अपन लीलाधाम अछि। एक पसारी नाई भेल जे अहाँक डाली घर करैत अपन डाली सजबैत सबेर-सकाल घरमुहाँ होइत तँ दोसर दिस पसारीक उसारी यज्ञक पछाइतो होइते अछि। शुभक लाल भाय दरबज्जापर बैसल काजक उसरनपर नजैर खिड़ौलैन तँ पसारीक पछाइत परसुका भाड़पर पहुँचलैन। भाड़पर पहुँचते मन नमसँ सम दिस बढ़लैन। बढ़िते जेना मन हल्लुक बुझि पड़लैन। हल्लुक ई जे भने एके सागे-भागे काजक सिमान टपि गेलौं। काजक सिमान टपैक माने भेल एक काजसँ निवृत्ति हएब। अपना ऐठाम कन्यादानक साल भरिक पछाइत दुनू पक्षसँ बेरा-बेरी भाड़ बनले रहैए, जइसँ बैंकक कर्जा जकाँ मूर लगिचाइयो जाइए तैयो सुइद चलिते रहै छै, तँए जहिना कन्यादानक हिसाबमे साल भरिक भारोक हिसाब अबिते अछि तहिना परिवारमे मृत्यु भेने सेहो सिर्फ तेरहे दिनक तेरहे-कर्मटा नइ ने छी, झमेलिया बिआहक ने बरियाती छी, नइ किछ तँ पहिने अण्डा भेल आकि बच्चा, तहू कहा-कही-ले झमेल ठाढ़ भइये जाइए। मुदा से नइ, जहिना बिआहक पछाइत साल भरि भाड़ दौड़ैत रहैए तहिना मृत्युक तेरहा-कर्मक पछाइत अधमासीसँ छाया शुरू भऽ मासे-मासे साल भरि ओहो दौड़ते अछि, जे बर्खी लग पहुँचा अपन रस्ता बिसरजन करैए। ओना, सोलहन्नी बिसरजन

नइ करैए, अपन रूप बदैल मातृनवमी वा पितृ एकादशी, जेकरा पितृपक्ष सेहो कहल जाइए, तइ रूपमे चलिते रहैए। मुदा तेकर हिसाब बर्खीमे नइ होइए। बर्खी अपना चालिये साले-साल चलिते रहैए माने पहिल बर्खीकेँ सराधक समकक्ष सेहो मानले जाइए। मुदा से सभ नइ, परिवारक काज छी, तँए परिवारे धरिक...।

ओना, बेरुका चाह पीबैक बेर शुभक लाल भायकेँ भऽ गेल रहैन तँए मने-मन चाहक हिसाब सेहो जोड़ैत रहैथ। चाहक हिसाब मनमे अबिते शुभक लाल भाइक देहमे फुनफुनी जगलैन। फुनफुनी ई जे चाहै तँ सभ किछु सभ अछि, मुदा एक कप चाहो की बिना अपना केने होइए? जँ हेबो करत तँ कि ओ अपना नियमानुसार हएत? ओ तँ हएत कर्ताक कर्मानुसार। तँए निसचित कहब कठिन अछिए।

चाहक केतली आ लोटा नेने शुभक लाल भाय कल दिस, माने अँगनाक पछुआर आ माल-जालक खरिहाँनक आगूमे कल अछि, चलला। दरबज्जासँ आगू बढ़िते पत्नीपर नजैर पड़लैन। ओना, पत्नियोँक नजैर शुभक लाल भायपर पड़लैन। दुनूक अपन-अपन विचारक दुनियाँ। पत्नी ई बुझिते जे सभ दिन पति चाह बना पीबै छैथ, तँए टीका-टिप्पणीक कोनो प्रश्ने ने अछि, मुदा परिवेशो तँ परिवेश छी। टटका जे कन्यादानसँ उबरल छेली! तहूमे अपना हाथे कन्या सन सम्पैत जे दान केने छेली! तेकर उखमज की नइ रहतैन?

दू-तीन लग्गा फरिक्केसँ पत्नी टोक देलखिन-

"सभ दिनक छीछा-बीछा एके रंग रहल! अँगनामे एते लोक अछि, तेकरा कहबै से नइ?"

ओना, पत्नीक विचारक पुछरी पकैड़ शुभक लाल भाइक मनमे उठलैन जे कहिऐन- जखन सभ-दिना काज छी, तखन सभ

दिन कहल जाए, ई केते उचित भेल? मुदा अपने चाहमे ओते बिलम हएत, तँए नहियेँ बाजब नीक बुझि केतली अखारै-धोइले आगू बढ़ि गेला।

केतली अखारि लोटामे पानि भरि अपन मुँह-आँखि-कान धोइत, पानि पीब चाह बनबए शुभक लाल भाय दरबज्जा दिस बढ़ला। ओना, पत्नीकेँ अखनो ओसारेपर बैसल देखि कनडेर आँखि देलैन तँ बुझि पड़लैन जे मने-मन बिहुँसि रहल छैथ। बिहुँसैक कोनो तारतमे ने भेलैन जे किए बिहुँसि रहल छैथ। की चुल्हि लगल काज देखि मन फुला रहलैन अछि? जे चुल्हि लग काज केनिहारे ने चुल्हियारि कहबैए। जखने पुरुख चुल्हियारि बनत तखने स्त्रीगणक ओते भार कमत। मुदा से विचार एतबे तक रहलैन, लगले दोसर विचार मनमे उपैक एलैन। उपैक ई एलैन जे जखन सभ-दिना काज अपन ऐछे, जे पत्नियोँ देखिते आबि रहली, तखन जँ आगू बढ़ि बजली, तँ जरूर किछु दोसर कारण अछि। मुदा से बुझब केना? जहिना चुल्हिमे जारन आगि दिस खोंरनीसँ घुसकौल जाइए, तहिना शुभक लाल भाय विचारकेँ खोरैले खोंरनी चलौलैन-

“सोझे चाहे बनबैक भार लेलौं आकि केतलियो अखारैक?”

पवित्री जेना हारैत होथि तहिना मुँह बन रखलैन, मुदा सौनक करियाएल मेघ जकाँ नजरियो आ आँखियो स्नेहिल नीरसँ निराएल टप-टप करैत रहैन। भरिसक तही निराउमे पतिक बात हेरा गेलैन। अपन बातक जवाब पत्नी-मुहेँ सुनैले शुभक लाल भाय, ओना, चलिते रहैथ, मुदा डेग छोट जरूर भऽ गेल रहैन। आँखि सेहो उठा बेर-बेर पत्नीपर दैत रहैथ। जेना पत्नीक जवाबक प्रतीक्षा करैत होथि।

बेर-बेर पतिक आँखि अपना दिस अबैत देखि पवित्री भौजीक

मनमे भेलैन जे भरिसक किछु चाहै छैथ। मुदा कहबैन की? मने-मन अख्यािसए लगली जे बाजल की छला। माने पति की बाजल छला। मनमे एबे ने केलैन जे चाहक केतली अखारि-धोइ अनैले बाजल छला। मनो केना रहितैन जखन शुभक लाल भाय बाजल छला तखन पवित्री भौजी अपन पवित्र यज्ञक बीच विचरण करैत ओइ जगहपर पहुँच गेल छेली, जेतए अपना हाथे अपन परिवारक कन्यादान करैत छेली। जैठाम अपनसँ आनोक कन्यादानकेँ धर्मकृत्ति-वृत्ति बुझि महिला फूलसँ फूलक माला बना हृदयमे लगबैक मनकामना रखै छैथ, तैठाम पवित्री भौजी नबे दिन पहिने जे कन्यादान केने छेली, ओ लगले केना मनसँ पड़ा जैतैन आ आन-आन विचारकेँ बास हुअ दइत। अपना हाथे कन्यादान केलौं, ऐ खुशीमे पवित्री भौजी दहलाइ-भँसियाइ छेली। कखनो हाथ निहारै छेली जे यएह हाथ छी जे कन्यादान केलक! तँ कखनो आँखि निहारै छेली जे यएह आँखि छी जे अपना आगूमे कन्यादान देखलक! आ यएह मुँह छी जे कन्यादानक मंत्र बाजल..!

शुभक लाल भाय अपन काजमे बिलम नीक नहि बुझि दरबज्जा दिस बढ़ला।

दरबज्जाक मुहथैर लग अबिते पाछूसँ पवित्री भौजी कहलखिन-

“हमहूँ अबै छी, केतली-लोटा रखू।”

कहि झटकल अँगनाक ओसारपर सँ उठि दरबज्जाक ओसार दिस बढ़ली। ओना, शुभक लाल भाइक मनमे ठहैक गेलैन जे किछु कहए चाहै छैथ। बिना कारणेँ टिटही थोड़े लगैए। बिना किछ बजने-भुकने चुल्हि लग केतलियो आ लोटो रखलैन। तैबीच पवित्रियो भौजी पहुँच गेली। ओना, शुभक लाल भाइक मनमे ईहो ठहकलैन जे हिनकासँ उपकारे केतए हएत! केतए जारन अछि आ केतए

गिलास? केतए चाह-पत्ती अछि आ केतए चीनीक डिब्बा से थोड़े देखल-बुझल छैन? ओ तँ अपने केने हएत। मुदा तैयो 'जत लवधं तत लवधं।' चुल्हिये पजारती..!

कन्यादानी हाथ पवित्री भौजीक बनि गेल छेलैन, बनबो केना ने करितैन। नारीक नारीत्वक तँ जहिना सन्तति जननक शुभ मुहुर्त अछि तहिना ने समाजो कन्यादानकेँ शुभ मानबे केने छैथ। तहूमे आइक परिवेशमे तँ कन्यादान छोट छीन यज्ञ नहियेँ रहल। ओ तँ समाजोक यज्ञ (पैघ यज्ञ)सँ नमहर बनल जाइए, यज्ञक पूर्व आ यज्ञक पछाइत विचारो आ जिनगीक क्रियामे सेहो उन्नत होइते अछि, जे पवित्री भौजीमे सेहो आबि गेलैन।

चुल्हि पजारि पवित्री भौजी शुभक लाल भायकेँ पुछलकैन-

"केहेन चाह पीबैक मन होइए?"

पवित्री भौजीक विचार सुनि शुभक लाल भाय चौंक गेला। चाह तँ चाह छी! ओइमे नीक-बेजा की? लगले मनमे ठहकलैन चाह तँ जिनगीक भूख छी, जे सभकेँ लगबे करत, मुदा चाहो तँ चाह छी, केहेन चाह..?

मनमे विचार तेना घुरिया गेलैन जे केना पवित्री भौजी चाह बनौलैन से शुभक लाल भाय देखबे ने केलैन।

अखन धरि माने आइ धरि पवित्री भौजी शुभक लाल भाइक सोझमे कहियो चाह नइ पीने छेली, एकर माने ई नइ जे ओ चाह नइ पीबै छैथ। अखनो गाम-घरमे एहेन ऐछे जे माता-पितासँ चोरा कियो तमाकुलो खाइ छैथ आ सिगरेटो पीबै छैथ, तँ कियो देखाइयो कऽ खाइते-पिबते छैथ। मुदा एना किए? एना ऐ दुआरे जे बेवहारक पाछू जे शब्द अछि ओ केतौ-केतौ अपन चालि बदैल लइए जइसँ काजक रूपमे बद-बदी आबि जाइ छै, जइसँ केतौ-केतौ बदलियो जाइए।

मुदा से नइ आइ निधोख भऽ पवित्री भौजी चाह पिबए बैसली। निधोखक पाछू पवित्री भौजीक अपन जे विचार रहल होइन, मुदा एते तँ आँखिसँ देखबे करै छेली जे साठि बर्खसँ ऊपर उमेर भऽ गेल, कमसँ कम एते दिन तँ पतिक धाक मानलयैन। आइ तँ ओहन परिवेशे बनि गेल अछि जे सभ निधोखसँ चाह पीबैए। आकि मनमे ई विचार उठल रहैन जे नारीक पहिल रूप सन्तान जननक अछि, जे जीवनक पहिल संस्करण भेल, दोसर संस्करण तँ कन्यादाने आ बरदाने ने छी, जे पवित्री भौजी प्राप्त कऽ लेलैन। ओना, उमेरक हिसाबसँ बेसी उमेरमे केलैन मुदा से केलैन अपना कन्या नइ रहने...।

आमने-सामने शुभको लाल भाय आ पवित्रियो भौजी बैस कऽ चाह पीब रहल छैथ, मुदा कियो किछु बजैत नइ। अपना-अपना मनमे जे रहल होइन मुदा एक-दोसरक मुहेँ किछु सुनए चाहि रहल छला। ओना, दुनूक मन अपन-अपन विचारक सागरमे झिलहोरि खैलैत मुदा दुनू दू सागरमे। एकक सुखसागरमे तँ दोसरक मिश्रसागरमे। तेकर कारणो दुनूक दू छेलैन, पवित्री भौजीक कारण छेलैन जे जहिना कोनो रचनाकारक रचनाक पहिल संस्करण बिनु गवाहीक मामला भेल तहिना पवित्री भौजीक कन्यादानसँ पूर्वक छेलैन, मुदा जहिना ओही रचनाक जँ दोसर संस्करण निकैल जाइ छै तखन तँ रचनाकारकेँ एते बिसवास तँ भेटिये जाइए जे पहिल रचनाक जेते क्रम संख्या, माने छपाइक संख्या छल, ओते गवाही भऽ गेला, भलेँ ओगरवाह बनैन वा नइ। मुदा एहनो तँ ऐछे जे जँ रचनाकारकेँ गवाहीक जरूरते ने होइन? तैयो अपन मनक गवाह तँ मनमे बनले रहत किने जे ई काज भेल अछि। तहिना कन्यादानक पछाइत पवित्री भौजीक दोसर संस्करणक खुशी मनमे नचिते रहैन। नचैक पाछू ईहो विचार नचैत रहैन जे किछ छैथ तँ परिवारक सिरजन तँ पतिये ने छैथ, तँए हिनका मुहेँ सुनी..।

होइते एहिना छै जे मरजाद भोजक जे बर-बरी बनौनिहारि रहै छैथ ओ बर-बरी बँटैक बेरक टक लगौनहि रहै छैथ जे कखन खेनिहार खा कऽ हमरा दिस तकता। तेहने टकटकी पवित्री भौजीक रहैन। शुभक लाल भाइक मनमे बिआहक कोनो हलचल नइ रहैन, ओ परिवारक यज्ञ बुझि परिवारजनेक हाथे सम्पन्न भेल काज बुझैथ, तँए कनियोँ हलचल नइ रहैन। यएह छी यज्ञ-सूत्र। ओना, दुनू गोरे चाह पीब लेलैन मुदा बीचमे कोनो यज्ञक टीका-टिप्पणी नइ भेल। शुभक लाल भाय पवित्री भौजीकेँ रंग-रूपसँ आँकि नेने छला जे जेठुआ फुलाएल धार जकाँ मनमे कन्यादानक धारा बहि रहल छैन। मुदा कन्यादानक तँ लेखा-जोखा काइये लेब अछि, जे की नीक भेल आ की अधला। माने सूत्र-वत भेल कि सूत्र-भंग। तहूमे समय मोड़पर अछि, तँए केते नव सम्बन्ध जुड़त आ पुरान सम्बन्ध छुटत...। तैठाम तँ ओ दहला रहली अछि! केना कोनो काज समगम होइत चलत? तँए किछु गप करैक आकि कोनो विचार करैक कोनो गरे ने शुभक लाल भायकेँ अँटैन। मुदा संजोग नीक रहल। संजोग ई जे चाह पीला पछाइत पानक खगता होइते अछि, नइ तँ मनो आ मुहोँ बिल-बिलाइत बिलाइ जकाँ होइत रहत...।

शुभक लाल भाय बजला-

“जहिना मन-भरि चाह पीयेलौं तहिना जँ पानो खुऐबतौं..?”

बदलल पवित्री भौजी, हरिआएल जिनगी, पतिक विचारकेँ लपैक पकैड़ बजली-

“तेते पान उगैर गेल अछि जे मासो दिन खाएब तैयो ने सठत। नेने अबै छी।”

कहि उठि बढ़ली।

शुभक लाल भाय मने-मन तारतम करए लगला जे भरिसक

अखनो पत्नीक मन उधियाइते छैन, जँ से नइ, तखन किए धान-चाउर जकाँ पानोकेँ मास दिनक बात कहलैन? आइ नअ दिन भेल अछि, गोटे आधे नीक हएत नइ तँ सभटा सड़ि गेल हएत, तैठाम आगूओ मासक बात बजै छैथ..!

पानक डाली, चुनक डिब्बा आ खएर-सुपारी जे उगरल छेलैन से सभ किछु पवित्री भौजी आनि आगूमे रखलकैन। केराक पातमे मोड़ल पान जखन खोलली, तँ अदहासँ बेसी सड़ले देखली। छँटिया कऽ निम्मन पात निकालि एक भाग करैत, पान लगा पतिक हाथमे देलखिन।

मुँहमे जरदा लइते शुभक लाल भाइक मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते बजला-

“कन्यादानी की सभ भेटल से कहाँ देखए देलौं?”

‘कन्यादानी’ सुनिते पवित्री भौजीक मनमे गंगाक पहलेजा घाट नहि, हरिद्वारक घाट भेट गेलैन। भेटबो केना ने करितैन, एक तँ ओहिना यज्ञक चपचपी रहबे करैन आ तैपर सँ फलो आगूमे आबि गेने जेहेन होइ छै तेहने भऽ गेलैन। फुरफुरा कऽ उठि पवित्री भौजी अपन राखल-उसारल वस्तु-जात आनए विदा भऽ गेली...।

शुभक लाल भाय नमहर साँस छोड़लैन। भने कजभुतनी हटल!

ओना, परिवारमे सिरजन होइतो शुभक लाल भाय ऐ काजमे गलफूलू भऽ गेल छला। ओना, चाउरक भातो गलफूलू होइए आ दालि सेहो, मुदा से नइ, विचारक गलफूलू।

ओना, गलफूलू भात आकि दालिकेँ कोनाह सेहो कहल जाइ छै मुदा सेहो नइ, शुभक लाल भाय मनफूलू भऽ गेल छला जइसँ काजक सूत्रमे विचार फूल जकाँ कुम्हला गेल रहैन, मुदा परिवारक

सिरजन काजमे जे कर्तव्य सिरजनक हेबा चाही तइमे केतौ शुभक लाल भाय कोनाह नइ भेला। सदिकाल समतल मन समतल बाट पकैड़ चलैक परियास करैत रहला...।

मनफूलू भेला पछाइतो शुभक लाल भाय ऐ बिसवासक संग यज्ञमे जुटल रहला जे जखने बिसबासू रस्ता पकैड़ काजकेँ आगू बढ़ाएब तखने ओइमे स्वत: बल आबए लगत आ हलसैत-कलशैत सम्पन्न हएत। तँए गलफूलू भेलो पछाइत शुभक लाल भाइक मनमे ओहन कुवाथ नइ पनपलैन। तेकर कारण बदलैत सामाजिक परिवेशो छल।

भेल एना जे जइ दिन सम्बन्धक सूत्र बनल, तइ दिन काजक संचालनमे अखाद्य पदार्थ भोजनमे शामिल कऽ लेल गेल, जइसँ शुभक लाल भाइक मन भिन-भिनेने विचारमे भिन्नता आबि गेलैन। माने ई जे बिआहमे माछ भोजन हेबा चाही। अखनो शुभक लाल भाइक मन ऐ विचारपर कायम अछि जे मिथिलांचलमे पान-माछ आ मखानक प्रशंसा अदौसँ होइत रहल अछि, मुदा परिवारक जे सामाजिक स्तरक भोज-भात होइ छल ओइमे माछ बर्जित किए छल? हँ, किछु दिनसँ एहेन वस्तुक प्रवेश भेल अछि। दोसर बात ई जे बेटीक प्रवेश परिवारमे होइते माए-बापक वायु गुंगुऐ लगै छैन, तेकर यएह ने कारण अछि जे 'बेटी बिआह' भारी भऽ गेल अछि। मुदा की भारी भेल अछि, केना ई हल्लुक हएत जे भ्रूण हत्यासँ लऽ कऽ दहेज हत्या धरि बन्न हएत?

तही बीच हलसैत-फुलसैत पवित्री भौजी, जहिना विद्वतजन सम्मानित भेल अपन वस्तु-जात नेने ठाढ़ होइत तहिना दुनू हाथे पँजियौने पवित्री भौजी वस्तु-जात पतिक आगूमे रखैत मुँहपर मुँह रखि मरजादक बर-बरी जकाँ देखए लगली।

अखन धरि शुभक लाल भाय काजक समीक्षाक दौड़मे ओतए पहुँच गेल छला जे काज करै-करबैक परिवेश नीक ढंगसँ बनल। जे काजक सफलताक द्योतक छी...।

मुस्की दैत शुभक लाल भाय बजला-

“एते लऽ कऽ की करब?”

जहिना भरल घैलक पानिमे ऊपरसँ आरो पानि देने घैलमे नइ प्रवेश कऽ ऊपरे-ऊपर खसै लगैए तहिना पवित्री भौजीकेँ सेहो भेलैन...।

बजली-

“सहए तँ अपनो सोचै छी।”



शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016

बिटगरहा

हमर जन्म मात्रिकमे भेल। जन्मक पछाइत जे शिक्षा-दीक्षा भेटैए तइमे मामा माएकेँ घरसँ विदाइ दिन खोंछि भरैत काल कहि देलखिन-

“पहिल जे भागीन हएत ओकरा अ-आसँ माने ओना-मासी सँ बिटगरहा खाँत तक पढ़ा देबै, तखन जे मन फुरतै से अपन करत।”

यएह तँ भेल जिनगी, जँ भोजनसँ लऽ कऽ शिक्षा-दीक्षा धरिक भार हल्लुक होइत उतैर जाए तँ मनुक्ख, मनुक्ख जकाँ किए ने रहत। ओना, माइक बिआह होइसँ पहिनहि, माने जहिया माइयक बिआहक गप-सप्प उठल तहिये, नानी आँगनमे अन्दोलन मचा जोर-जोरसँ नानाकेँ कहि देलखिन-

“बेटी बिआह छी, तँए सभ रस्ता झाड़ि-ओसा चलब बेसी नीक हएत।”

ओना, नानी अपन पेटक बात तँ नै खोललैन मुदा एकरारनामापर नानासँ ‘हँ’ कहा नेने छेली, नानीक सोझ-साझ बातमे नानाकेँ केतौ खोंच-खाँच नइ बुझि पड़लैन, बजला-

“एकरा के काटत।”

ओना, बेटी जहिना माइक तहिना पितोक, मुदा जिनगी देखैक अपन-अपन नजैर होइ छइ। नानीक नजैरमे माए बेटी छेली, जे जिनगी भरि बेटीक रूपमे देखए चाहै छेली, जखन कि पिताक नजैर बेटी बिआह तकक भार उतरबपर मात्र रहैन। होइतो अहिना छै जे

जेते लग रहत ओकरासँ ओते सिनेह रहत आ जे जेते दूर रहत ओकरासँ ओते दूरी बनिते अछि। तँए परिवारमे बेटीकेँ सासुर दिस बढ़ैत आ बेटा-पोताक लगक वंश होइत एकटा सीढी बनैए जे परिवारक संचालन सेहो करिते अछि।

ओना, नानी अँगनाक परदा तोड़ि माने एते-एते जोरसँ बजली जे नाना अकैछ कऽ विचार सुनैले तैयार भेल रहैथ। एकरारनामापर सहमत होइते नानी बजली-

“बेटीक पहिल सन्तान अपना ऐठाम हएत आ पछातिक पछाइत बुझल जाएत, तँए जखन सन्तानोत्पत्तिमे सात मास पूरि जाए तखन ओ अपना ओतए आबि जाएत आ जखन छह मासक बच्चा हेतइ, तखन फेर ओ सासुर बसत।”

माइक बिआहे होइ काल ई विचार भऽ गेल छल।

जखन हमर जन्म भेल तखन मामोकेँ आ माइयोकेँ जेना मोन पड़लैन। माए बेटाक पढ़ब धरिक भार उतरल बुझलैन आ मामाकेँ बिटगरहा तक पढ़ाएब मोन पड़लैन। जन्म भेला पछाइत जखन मामा आ माए एकठाम भेली तखन जहिना माइक मनक चुहचुही हरियाएल तहिना मामोक मन हरियेलैन। मामाक मन किए हरियेलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा बुझि पड़ल जे जेना संग चलैबला एकजन भेट गेलैन। माइक मन ऐ दुआरे चुहचुहाइत जे मातृत्व नैहरमे प्राप्त भेल।

ओना, दुनियाँ बड़ भारियो आ झमटगरो अछि, मुदा अपन जिनगी तँ अपन हाथक छी, तँए केतबो भारी अछि तँ अपना-ले हल्लुके अछि किने। रंग-रंगक हवा-बिहाड़ि दुनियाँमे बहै छै मुदा केतौ-ने-केतौ तँ लोको ठाढ़े अछि। तही बीच मामोक जिनगी छैन्हे। अपन जिनगी अपन मनोनुकूल बनबैत चलि रहल छैथ।

जइ दिन बहिनक बिआह भेलैन माने हमरा माइक, तइ दिन

तक ओ अपन परिवारक हिसाब-किताब नीक जकाँ बुझि गेल छला। बुझि गेल छला जे जहिना एक दिस अपन बेटा अछि आ दोसर दिस बहिनक बेटा, जे अपन बेटाकेँ व्रत रक्षक बुझि सेवा करैत अछि तँ दोसर दिस भागीनकेँ अबिसवासू बुझैए। भागिने किए बहिनोक संग तहिना अछि। मुदा तँए भागीनकेँ कुलपूज बुझि सिर नइ चढ़बैए, सेहो बात नहियेँ अछि। मुदा सभकेँ अपन-अपन ठौर छै, ठौरसँ चलला पछातिये ने ठौर भेटै छइ। ओना, मामाक मनमे ईहो प्रश्न बेर-बेर उठैत रहलैन जे एके बाप-माइक सन्तान बेटा-बेटी दुनू छी, मुदा दुनूक बेवहारमे एते अन्तर किए आबि गेल अछि?

ओना, मामा एक हरक जोतक गिरहस्त तहियो छला आ अखनो छैथ, मुदा तहिया आ अखनमे दूरी तँ बनियेँ गेल अछि। एक हरक गिरहस्तक माने भेल आठ बीघा खेती करैबला किसान। मुदा मामाकेँ अपन खतिऔनी दस बीघा जमीन छैन जइमे दस कट्ठा गाछी-कलम आ पाँच कट्ठाक अर-अगवास लगा घराड़ी, सबा बीघा खेत चारू जन आ पाँचम हरबाहकेँ बटाइ देने छथिन आ आठ बीघा अपने करै छैथ। जइ दिन मामा खेती करब शुरू केलैन तइ दिनमे कौलेज छोड़ि कऽ आएले छला। कौलेजे जीवनमे नोकरीकेँ अधला बुझए लगल छला। अधला कि नीक, प्रश्न से नइ प्रश्न एतबे जे किसानी संस्कारक गीत मनमे तेना संक्रमण करि गेलैन जे दोसरकेँ अखनो तक बास नइ हुअ देलकैन। ओ संस्कार गीत छी, उत्तम खेती। खेत उत्तम हुअए जइसँ ओकर जे उपजो हएत ओ उत्तम हएत, उत्तम अने-फल आ तीमने-तरकारी ने उत्तम शरीरो निरमौत। मुदा तेतबे किए, खेतबला जे परिवार अछि ओइ परिवारक तँ वएह सम्पैत ने ओइ परिवारक जीवन-पोषक अछि। आकि कोनो शहर-बजारक रंग-टीप..!

आइक परिवेशमे कृषि बहुआयामी भऽ गेल अछि, खेतीक

संग पशुपालन अछि, माछ पालन अछि। माछ पालैक आधासँ बेसी जमीनो ऐछे, जे चौर-चाँचरसँ लऽ कऽ पोखैर-बीरइ आ मरल धार-धूर सभमे अछि। मुदा से नइ, जइ दिन मामा कौलेज छोड़ि खेती करए लगला तइ दिनमे ने अपना बोरिंग रहैन आ ने पोखैर, मात्र पुश्तैनी इनार रहैन। खेतीक सेहो पुश्तैनी बेवहार रहबे करैन।

पुश्तैनी बेवहारक अर्थ अपन-अपन विचारे लोक बुझै छैथ। अधलोक परम्परा रहल अछि आ नीकोक परम्परा रहल अछि। ओ रहल अछि जे जेहेन समाज अपन सामाजिक ढाँचा बना बास करै छल ओइ अनुकूल। ओना, मामा कौलेजेक जिनगीक बीच जहिया मनमे रोपलैन जे कृषिकेँ जीविका बनाएब, तहियेसँ अध्ययनक दिशामे मोड़ एलैन। मोड़ ई एलैन जे खेती-पथारी सम्बन्धित अध्ययन सेहो करए लगला। एते अध्ययन जरूर भऽ गेल छेलैन जे मन मानि गेलैन- 'खेतीसँ जीवनक भरण-पोषण भऽ सकैए।' तेकर दोसर कारण ईहो मनमे रहबे करैन जे जखन पिताजी हमरा कौलेज तक ओही खेत आ खेतक उपजेसँ पढ़ौलैन, तखन अपन जे धिया-पुता हएत तेकरा किए ने पढ़ा सकै छी। ओना, जीवन-विज्ञानक दिशामे सेहो मामाक अध्ययन झुकि गेल छेलैन जइसँ अपन विकासक दिशाक बोध सेहो आबए लगलैन। आठ बीघा एक हरक जोत ओइ किसानी जिनगीक परिचायक छी, जइ जिनगीमे किसान सोलहन्नी प्रकृतिपर निर्भर छला, बरखा भेल तँ खेती भेल, नइ भेल तँ नइ भेल। बाढ़ि आएल दहा गेल, रौदी भेल जरि गेल.! यएह तँ छल किसानी जिनगीक परिवार।

ओना, धार-धूरक इलाका रहने गामक-गाम उपटान आ बसान सेहो सभ दिनसँ होइते आबि रहल अछि। धारमे कटि गेने गामक उपटान भेल, अखनो होइए, आ जेतए जा कऽ बसलौं ओ बसान भेल मुदा सोझे केतौ बसि जाएब आ केतौ खेत-पथारक संग बसल

छी, जे जीविकाक साधन सेहो छी, तैठाम जँ जीविका-साधन समाप्त भऽ जाएत, तखन केना जिनगी ठाढ़ रहत? ई आइये नइ सभ दिनसँ प्रश्न बनले आबि रहल अछि।

ओना, समेनुकूल सोच मामाक मनमे सेहो जगिये गेल रहैन जइसँ जहियेसँ खेती करए लगला तहियेसँ किछ-ने-किछ नब काज सतैत ठाढ़ करिते आबि रहल छैथ। जइसँ वएह पुश्तैनी दस बीघाक खेतमे एते अनो उपजा लइ छैथ, माने जैठाम खेतक उपजाक कोनो ठेकान नै छल तैठाम खर्चक ठेकान भऽ जाइ छेलैन। जइसँ बीस-पच्चीस गोरेक परिवार चलि जाइत रहैन। तैसंग दू पीढ़ीक परिवारमे अखनो ओहन सामंजस छैन्हे जे सभ सभसँ जेते सटलो छैन ओते हटलो छैन।

आइसँ तीस बर्ख पूर्ब, कौलेज छोड़ला पछाइत मामा पुश्तैनी सम्पैतपर काबिज भऽ दुनियाँक बीच अपन हिस्सा बुझि जिनगी शुरू केलैन।

ओना, माता-पिताक पछाइत भाए-बहिनिक परिवारक खाढ़ी अबैए। जइसँ दू-तीन तरहक मनुक्खक बीच सम्बन्धक सम्बन्ध अबैए। माने भाए-भाएक आ भाए-बहिनिक आ बहिन-बहिनिक बीच...।

ओना, अखन धरि यएह होइत आबि रहल अछि जे केतौ-केतौ भाए-भाएक बीच राम-लक्ष्मण सन सम्बन्ध अछि तँ केतौ कौरव-पाण्डव जकाँ। जइसँ एके समाजमे रामकेँ बनगमनक बीच कोल-भीलक संग ऋृषि-मुनीक सम्बन्ध बनै छैन तँ दोसर दिस महाभारतो मचिते रहैए। मुदा से नइ जहिना सौंसे राक्षसक लंकामे एकटा विभीषणेटा शेष छला, तहिना अपन गामो-समाजमे अछि। जखन गाम-समाजक लीला देखब तखन बुझि पड़त जे लंकामे कम-सँ-कम

विभीषणकेँ अपन पत्नी आ धिया-पुता तँ संग दइमे रहैन। मुदा अपन समाज तहूसँ ऊपरका लंका अछि जैठाम अपन धरोवाली आ धियो-पुतो कण्ठ मोकैले तैयार रहैए। भाए-बहिनिक बीच बापक सम्पैतमे हक-हिस्साक जे प्रश्न अछि ओ बेवहारिक जिनगीसँ सटल सवाल अछि, केतौ भाए-बहिनिक ओहन परिवार अछि जैठाम भागिने परिवारक मुख्य कर्ता-धर्ता बनल अछि, तँ केतौ भाए-बहिनिक बीच उच्च कोटिक अबिसवास सेहो बनल अछि, तँए ईहो नइ कहल जा सकैए जे बेटा आ भागीनकेँ एक बुझिनिहार लोक नइ छैथ। एक वृत्ति सभकेँ अछि, मुदा ओही वृत्तिमे आवृत्ति भेने वृत्तिक दुनू रूप पोनगैए। माने नीक-बेजाइक ओइ वृत्तिकेँ जे जेहेन बुझि चलनिहार से तेते ओइसँ आसक्त भऽ जाइ छैथ, जे भँसियेबो करै छैथ आ उबड़बो करै छैथ। पचास-पचपन बर्खक मामा, ओना नाना-नानी मरि गेल छैथ, अपन तीस बर्खक जिनगीमे उपैत करैत एते ऊपर आबि गेल छैथ जे समाजक बीच अपनो परिवारक महत रखने छैथ।

ओना, मामा पुरान परम्परानुसार जे खेतीक तरीका छल, पहिने सएह अपनौलैन, मुदा समेनुसार अपन परम्पराकेँ देखि-देखि विचार करैत क्रिया-रूप दैत आबि रहल छैथ, जइसँ अपन जिनगीक क्रियापर एते बिसवास बनि गेल छैन जे बिसवासू जिनगी जीब रहला अछि। मुदा तैयो ओ अपनाकेँ गामसँ हटल कहाँ बुझै छैथ। गाम तँ ओहन गाम छी जे जँ अहाँ अपन खेतमे गाछी-कलम रोपै छी तँ आड़िक कातमे पतिआनी लगा रोपि दइ छिऐ, एतबो ने विचारै छिऐ जे ओ गाछ केते पसरतै आ आन खेतबलाक उपज प्रभावित करतै। तहिना उपरौंझो केनिहारक कमी थोड़े अछि। अहाँ आमक गाछ रोपब तँ ओ हरोथ बाँसे अपनामे रोपि देता।

मुदा जेतए जे हौउ, मामा जहिना गौंआँक संग सटल छैथ

तहिना हटलो तँ छैथे। दुनू बेटाक बीच एक-एक कारोबार बढ़ा लेलैन। पचास-पचपन बर्खक मामाक देहमे ओहन ऊहि अखनो छैन्हे जे सतैत काजसँ सटल चलै छैथ। ओना, अपन खेतीक रकबा, जेतेमे खेती करै छला, कम कऽ केलैन मुदा जेते कम केलैन उपजा तेते बेसी बढ़ि गेल छैन। जिज्ञासु किसान जकाँ सतैत मनमे जिज्ञासा बनले रहै छैन जे माटिक जिनगी-ले पानिक खगता ऐछे आ रहबे करत। दू बीघा खेतकेँ जे अपने चरनुमा गहींर छल, ओकरा आरो गहींर कऽ ओइ माटिसँ पाँच कट्ठा ऊँचगर बाड़ी सेहो बना लेला, जइ पाछू जेठका पढ़ल-लिखल बेटा भरि दिन हेराएल रहै छैन। तहिना गाइयक पाछू छोटका। जहिना कारखानाकेँ अपन खान रहने आ अपन खनिज बनबैक ओजार रहने ढालनुमा दौड़ैत रहैए तहिना मामाक किसान परिवार सेहो दौड़ रहल छैन।

जन्म भेला पछाइत माइक संग सालमे एक बेर, दू बेर मात्रिक अबिते-जाइते छेलौं, मुदा जखन चारि बर्खक भेलौं तखन मामा अपना ऐठाम घेरैक जाल लगौलैन। जाल ई लगौलैन जे माइक संग अपनो ओतए गेलौं, फागुन मास रहै, धिया-पुताक संग खूब फगुओ-जोगीरा गेलौं आ टिकुलेसँ आमक गाछी मामाक संग सेहो जाए-अबए लगलौं। गाछक निच्चाँमे मामा छीलि-छालि कऽ चौरस बना मचान-खोपड़ी बनौलैन। पारखी मामा! तँए ने एकछाहा कलकतिया आमक आ ने एकछाहा सपेते आमक गाछी लगौने छला, सभ मेलक आमक गाछी लगौने छला। जइसँ दू-तीन मास आम खाथि। अनका जकाँ नइ जे एके रंगक आम लगौने छी आ पनरहे-बीस दिनमे सठा लेब। आम सन फल जे आम जनक छी, कोनो कि सेव-अंगूर छी जे दुखताहेटा खाएत, तँए आमेजन जकाँ दू-तीन मास खेबो-पीबो ने करब।

आधा जेठ बीत गेल। ताबे अ-आसँ य-र-ल-व तक सीख सेहो

लेलौं, अपनो मनमे हुअ लगल जे कनी आरो सीखी। ओना, अ-आ सीखबैसँ पहिने मामा सिखा देलैन जे अक्षर ब्रह्म छी, तँए एकरा गहि कऽ पकैड़ चली। मुदा जहिना ओ सीखबै काल बाजल छला तहिना हमहूँ सीता-राम सीता-राम जकाँ सीखियो लेलौं, मुदा माने अखनो तक ने बुझै छी।

चारि बर्खक भेला पछाइत हमर बोलियो नीक जकाँ फुटि गेल छेलए आ अपने पएरे खूब दौड़ै लगल रही। जहिना कोनो-कोनो शिक्षक अपन जिनगीक अनुकूल बच्चाकेँ बनबै दुआरे अधिक-सँ-अधिक समय अपना संगे रखि अपन जिनगीक बेवहारिक बोध सेहो दइ छैथ तहिना मामा हमरो दिअ लगला। य-र-ल-व तक आ पछाइत ककहारा शुरू हएत। मुदा अक्षर तँ बोध भेल छल मुदा अंकक तँ भेँटो ने भेल छल। कि मन फुरलैन मामाकेँ से तँ ओ जानैथ, मुदा एक-दूसँ गनबए लगला। जहिना अ-आ लिखबैसँ पहिने मुहजुआनी सीखौलैन तहिना एकाएक लिखबैसँ पहिने गनब सिखबए लगला। होइते अहिना छै जे लिखब आ पढ़ि कऽ बाजब दुनू दू भेल। जँ एकरा एक बुझि शुरू करब तँ कनी बेसी भइये जाएत, मुदा जँ दुनूकेँ दू खण्ड कऽ दू बेरकेँ सीखब तँ ओ कनी बेसी हल्लुक हेबे करत, सएह मामो केलैन।

आम पकैपर आबि गेल, माने खूब डम्हा गेल, मुदा वोनाएल नइ छल। माएकेँ अपना ओतए, माने सासुर जाइक दिन भऽ गेलैन। काल्हि ओ जेती। मामाक संग गाछीक मचानपर बैसल रही। आमक गाछक लद-लदी देखि मन खूब खुशी रहए। मामा बजला-

“बौआ, काल्हि गाम जेबहक?”

हमरा कि कोनो दिन-बेरागन बुझल रहए जे बुझितिऐ कौल्हुके दिन जाइक अछि। ओना दिन माइयक रहैन, धिया-पुताक कोन

दिन! बजलौं- “नइ।”

तखन मामा खोललैन- “माए काल्हि अपना गाम जेथुन।”

धिया-पुताक बुधि, बजलौं-

“ओ अपना गाम जाएत हम अपना गाममे रहब। आम सठा कऽ जाएब।”

जेना मामोक मन दहैल गेलैन तहिना बजला- “ताबे ते तोरा बिटगरहा तक खाँतो आ बिटगरहा अक्षरो सीखा देबह।”

जहिना कौआ-मेना अपन लोल बच्चाक लोलमे मिला बोलक घोल पिअबैत तहिना हमरो मामा पिआबए लगला। पुछलयैन-

“मामा, बिटगरहा खाँत आ बिटगरहा अक्षर की भेल?”

मुस्की दैत मामा बजला-

“जहिना अंक एकहारासँ शुरू होइत दोहारा तेहारासँ दोहराइत-तेहराइत आगू बढ़ैए तहिना पौआ, कनमा जकाँ पाछूओ घुसकैए, तहिना शब्दोक अछि आ लोकोक अछि।”

पुछलयैन-

“लोकक की भेल?”

बजला- “वएह बिटगरहा समाज भेल, जेहेन बाँस रोपब तेहने ओकर कोंपर हएत।”



शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016

आब नइ आगि लगैए

दस साल जहल कटला पछाइत सुरूज भाय गाम एला। ओना, बुझल रहए जे बरस्पैत दिन भाय गाम औता, किएक तँ बुधे दिन केसक सजा पूरि जेतैन, जहलसँ निकैल गाम पहुँचैमे एक दिन लगबे करतैन। तँए बरस्पैत दिन एबे करता, मुदा पहुँचता कखन से निसचित नइ छल। ओना, चारि बजेमे भाँज लगेने छेलौं, तँ तखन नइ अबैक जानकारी भऽ गेल रहए। मुदा मन तँ छनगले रहए जे कखन भाय औता आ भेँट हेता। मुँहक लाली केहेन छैन से बिना एकठाम भेने थोड़े बुझब।

ओना, लालियो कि कोनो एके रंगक होइए। पोरोक पाकल फड़मे लाली सेहो होइए आ अन्हार रातिक गुलबिया चानमे सेहो होइए, तहिना पाकल फलमे सेहो होइए आ लाल रंग फुटा कऽ सेहो होइते अछि। ओना, लालो रंग तीन रंगक होइए, हल्लुक लाल, गाढ़ लाल आ आल लाल।

किरिण डुमैपर भऽ गेल। आधा सुरुज डुमि गेल छल आ आधा ऊपर उगल छल। अपन काज माने माल-जालक थैर-गोबर करैत, ओछरा दैत घूरोक जोगार करैक अछि। मनमे ईहो धड़फड़ी रहए जे अपन काज निबटल रहत तखन जे भाय औता तँ दुनू भाँइ चारियो घन्टा जे एकठाम बैसबो जे नइ करब तँ एते दिनक बँकियौता गपो केना हएत। तँए धड़फड़ करैत काजमे लागल रही। घूर छोड़ियो सकै छेलौं, किए तँ माल-जालक जिनगीसँ ओकर कोनो सम्बन्ध नइ छइ।

मुदा धन सोझे धनेटा नइ ने छी, ओकरा जोगा-जगा कऽ रखौ पड़ै छै किने। ओही जोगबै दुआरे घूरो जरूरी भऽ गेल अछि। तेते ने बड़का-बड़का टाँगबला मच्छर फड़ि गेल अछि जे ने भरि राति माल-जालकेँ चैनसँ रहए देत आ ने दूहए-गाड़ए देत।

किरिण डुमैत-डुमैत अपन सभ काज निबटा निचेन भेलौं तखन मनमे भेल जे आब सुरुज भाइक अबैक बेर भऽ गेल, भाँज लागत तखन जा कऽ भेँट करबैन तइसँ नीक ने हएत जे जखन अपन समय ओही काजे बना नेने छी तखन पहिनहि किए ने पहुँच जाइ। सएह केलौं, सुरुज भाय ऐठाम विदा भेलौं। हमरा पहुँचैसँ पहिनहि सुरुज भाय पहुँच गेल छला। मनमे भेल जे पुछिऐन जे कती काल एना भेल। जइसँ अपन जे भाँज लगौल छल, ओइसँ भँजिया जाएत। फेर भेल जे सुरुज भाय कियो आन छैथ, जे एते घुमा-फिरा कऽ गप करब। सुपुटे किए ने कहि देबैन जे भाय घूर-घुआँ करैमे कनी देरी भऽ गेल। मन मानि गेल मुदा लगले दोसर विचार मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ ई भेल जे अखन सुरुज भाय जहलसँ आएल छैथ आ अपने कहियो जहलक मुँह आँखि नइ देखलौं, तखन पुछबैन की?

किछ फुरबे ने करए जे की पुछिऐन। फेर लगले भेल जे जहिना सभ भेँट भेलापर बजैए जे 'नीके-ना छी किने', सएह कहबैन। फेर भेल जे से केना पुछबैन। कोनो कि सासुरसँ एला अछि आकि गाम-गामाइतसँ, जहलसँ आएल छैथ। कहू जे एहनो पुछब हएत! तेरहो करम करबैले तँ लोककेँ लोक जहल दिस ठेलैए तैठाम नीके-ना की! मुदा सेहो केना पुछबैन?

ओना, सुरुज भाय बहुत उमेरगर छैथ। जइ दिन हुनका अगिलग्गी केसमे फँसौल गेलैन, तइ दिनमे बच्चे रही। सुरुज भाइक

संग एगारह गोरे मुद्दालह भेला आ हम सभ देखनिहारे बनल रहलौं। दसो संगी जे सुरुज भाइक संग अगिलगी केसमे फँसल छला, ओ सभ बेरा-बेरी, कियो दू मासक पछाइत तँ कियो चारि मास-छह मास बितैत-बितैत जहलसँ निकैल कऽ आबि गेला, खाली सुरुजे भायटा रहि गेल छला। होइतो अहिना छै, एके केसकेँ रंग-रंगक दफा लगा ठाढ़ कएल जाइए। तहिना भेल रहइ...।

हमरा पहुँचैसँ पहिनहि एगारहो गोरे गपो-सप्प करैत रहैथ, चाहो पीबैत रहैथ आ बीच-बीचमे ठहक्का मारि हँसबो करैथ।

लगमे पहुँचते दुनू हाथ जोड़ि आँखिक इशारामे सुरुज भायकेँ प्रणामो केलिऐन आ पँजरा दबि कऽ लगमे बैसबो केलौं। जेना कोनो उत्सव परिवारमे भेल रहैन तहिना पहुँचते एक गिलास पानि आ चाह आबि गेल। पानि पीब चाहो पिबए लगलौं आ आँखि दाबि कान उठा कऽ गपो सभ सुनए लगलौं। गप-सप्पक क्रमसँ निकैल सुरुज भाय बिच्चेमे पुछलैन-

“बौआ, आब नइ आगि लगैए।”

सुरुज भाइक बात सुनि अकबका गेलौं। मुदा पुछने तँ हमरे छला, तँए किछु-ने-किछु जवाब तँ अपने दिअ पड़त। तैबीच बाँकी गोरे जे ओतए बैसल छला, ओहो सभ अपन मुँह बन्न कऽ हमरे दिस अँखियेबो केलैन आ कनियेबो केलैन। बुझि पड़ल सभ हमरे बात सुनैले कनखड़ल छैथ। मुदा लगले रेडियो-अखबारक समाचार मनमे आबि गेल। कहलयैन-

“भाय, अहाँ जहलमे बन्न रहलौं तँए कि बुझै छिऐ जे आगिये मिझा गेल? गाम-गामक गहुमक पाकल चासमे आगि लगैए! गामक-गाम आगिमे जरि जाइए आ अहाँ बुझै छिऐ जे आब आगिये ने लगैए?”

हमरा बातक अर्थ भरिसक सभकेँ सभ रंग लगलैन। तँए किनको मुँह कसाइन भेल बिजकलैन, तँ किनको बिसाइन भेल सिकुड़लैन। मुदा सुरुज भायकेँ केहेन लगलैन से तँ ओ जनता मुदा मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे मने-मन मुस्किया रहल छैथ। जखने कियो कोनो विचारे कोनो काज करैले अगुआइए तँ ओत्तैसँ आगि सेहो उठैए। जेकरा कियो अगिया, तँ कियो अगिलह, तँ कियो अगिलगौन सेहो कहिते छइ। मुदा भरिसक से सुरुज भाइक मनमे नइ रहैन। मनमे रहैन अगिलग्गी केस आ ओकर समय।

जखन भूमि आन्दोलन माने जमीनक लड़ाइ शुरू भेल तखन अगिलग्गी केस जोर पकड़लक। सेशन केसक दफा, जेकर साधारण कोटमे ओकर सुनबाइ नइ भेने, अगिलग्गी केसमे फँसनिहारकेँ ता-जमानत जहल जाइये पड़ैए। भलेँ घरक अगिलग्गी केस हौउ चाहे बनौउए किए ने हौउ। एहनो केसक कमी नहियेँ रहल अछि जे एक बोझ नारमे लोक आगि लगा गामक-गाम लोककेँ मोकदमामे फँसौलक। कहबियो छै 'इनू-इनू-इनू एके महक तीनू, केस ठाढ़ करैबला सँ लऽ कऽ केसक फैसला करैबला तक एक्के गाछक डारि तीनू।'

सुरुज भाय तेसर बेरक केसमे जहल गेल छला, ओना पहिलुको दुनू केसमे जहल गेल छला, मुदा ओ जहलक मद्दी नइ भेल छेलैन, ओ हजतिया हिसाबमे रहि गेल छेलैन। पहिल बेर जखन अगिलग्गी केसमे फँसौल गेला तँ हुनका संग दस-बारह गोरे गौओं संगी रहैन, मुदा जमानतपर जे हाजतसँ निकलला से फेर दोहरा कऽ जहल नइ गेला। ओना बारह-चौदह बर्ख कोट-कचहरीक चक्कर लगबए पड़ल रहैन। से मनसँ हटि गेल छेलैन, होइते अहिना छै जे कोट-कचहरीक लड़ाइक फल जहले छी। जँ सजा पेब जहल चलि गेलौं तँ हारब भेल, जँ नइ गेलौं तँ जीतब भेल।

ओना, पहिल केसमे सुरुज भाय ओहन सजा नइ पौलैन जे जहल जाए पड़ितैन, मुदा एते तँ चेतावनी कोर्टसँ दैये देल गेल रहैन जे एबेर छोड़ल जा रहल अछि, दोसर बेर जहलक सजा हएत..! भाय! मारल लहाश उठबैमे जँ आना-कानी करब तखन ओइ लहाशक सदगति हएत आकि आरो मुइलोपर दुरगतिये हएत? यएह सदगति आ दुरगतिक विचार सुरुज भायकेँ अगिलगौन बना देने रहैन। मुदा से सभ सुरुज भाय-ले धैनसन। जखन जिनगी जीबैक अछि, तखन नीक-अधलाक विचार केनहि जँ जीब लेब सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। जखन मानव बनि जीबै छी, तखन उचित-अनुचितक विचार नइ मानब तखन ओ जिनगीए आ जीवने की भेल..! ओना, हमर बात जे जेना सुनने होथि, माने सुरुज भाय छोड़ि बाँकी गोरे, मुदा सुरुज भाय गौरसँ सुनि गौर करए लगला, जे गाड़ामे सेहो उतरए लगल छेलैन जइसँ मुँहक चुहचुहीक रंग बदलए लगल छेलैन। तैबीच एकटा आरो भेल, भेल ई जे जे बाइली गोरे रहैथ ओ एका-एकी उठि-उठि ई कहि विदा भऽ गेला जे भोरमे फेर भेँट हएब। ओना, हुनका सभकेँ जहलक हवा-पानि बुझले रहैन तँए बेसी गपो-सप्प नहियेँ रहैन। रहैन एतबे जे दस बर्खक पछाइत गामक दरबज्जापर भेँट भेला अछि। जहलक गेटपर जा-जा सभकेँ सभ भेँटो करैन आ नीक-बेजाइक गपो-सप्प करिते आबि रहल छला। तैसंग हुनका सभकेँ ईहो भेल रहैन जे जखने स्टेशनपर टेनसँ सुरुज भाय उतरला, तखने एकटा गौंआँ भेट गेलैन। भेटिते ओ गौंआँ कहलकैन-

"सुरुज भैया, अहाँ ताबे सभसँ भेँट-घाँट करैत आउ, हम आगू बढ़ि परिवारमे समाचार पहुँचा देब।"

ओना, सुरुज भायकेँ जेते चिन्हारए सभसँ भेँट-घाँट, कुशल-छेम करब नइ रहैन तइसँ बेसी देश-कोस देखैपर रहैन, ओ तँ

ओहिना नइ हएत, देखैत-सुनैत, बुझैत-गमैत जाएब तखने हएत। सएह केलैन, जइसँ गाम अबैत-अबैत अपन जे संगी रहैन, सभसँ भेँट भऽ गेलैन। ओना, हुनका सबहक–माने दसो-बारहो गोरेक–उठि कऽ जाएब नीके लागल। नीको केना ने लगैत। भाय! जे भारी-भरकम बात रहल ओ ने लोक लग बजलासँ भरियाएल रहैए, मुदा छोट-छीन बात जँ लोक लग बाजब तँ ओ बेदरे ने बुझता। सभ चाहैए जे हम सियान-चेष्टगर बनी आ हम अपने चालिये बेदरे बनि जाइ! तँए मने-मन खुशीए उपकैत रहए।

दरबज्जा खाली भेने हहरैत मन हरहरा गेल। ओना, सुरुज भाय बेर-बेर आँखि उठा-उठा हमरे दिस तकै छला जे की बजैए। मुदा हमरा तँ बजैक कोनो गर भेटबे ने करए जे किछु पुछितिऐन आकि कहितिऐन। तरे-तर मनकेँ दौड़बए लगलौं। मुदा लगले सिरे एकटा बात भेट गेल। भेटल ई जे पहिल केसमे जहल गेबे ने केलाह, बाहरसँ बाहरे रहि गेला, जखन कि ओहो अगिलिये-केस छल, आ दोसरमे दस बर्ख जहलमे रहला, से केना भेल?

मनमे उठिते विचार फुरफुराएल। बजलौं-

“भाय साहैब, अखनो धरि ई नइ बुझि पेलौं जे पहिलुक बेर किछु ने भेल आ दोसर बेर..?”

केना कहितिऐन जे जहल कटलौं। तहिना ईहो तँ नीक नहियेँ होएत जे कहितिऐन जे दस बर्ख जहलक वासी रहलौं, तँए मुँहसँ निकलैमे कनी देरी होइत रहए। मुदा से भेल नइ सुरुज भायकेँ जेना धक्-दे मोन पड़ि गेलैन तहिना बिच्चेमे धकियबैत बजला-

“बौआ, दुइये नइ ई तेसर केस छेलइ।”

‘दोसर-तेसर’ सुनि हमरो मन सुगबुगाएल। सुगबुगाइते कहलयैन- “हमरा ते दुइए-टा बुझल अछि, तेसर कोन भेल?”

सुरुज भाय मुदा सम्हारि लेलैन। सम्हारैत बजला- “पहिलुक जे दुनू केस छल ओ गवाही दुआरे खारिज भेल। मुदा तेसरमे गीताक सप्पत खा-खा गवाहियो आ मुद्दैयो तेहने सत् बात बाजल जे गीतो फुसियाहक फुसि भऽ गेल।”

ओना, हम ‘हूँ-हूँ’ भरैत रही मुदा सेरिया कऽ सभ बात नइ बुझैत रही। सुरुज भाय जेना आगामी लोक रहैथ तहिना हमर मनक बात बुझि गेला। बजैक क्रम रहबे करैन, आगू बजला-

“फुसियाहक फुसि आ झुठियाहक झूठक बेपार तेते ने दुनियाँमे पसैर गेल अछि केतेको बैंक डिरिआइए! तेठाम हमर-तोहर कोन बात?”

जहिना कोनो गीत गौनिहार मुहसँ गेबो करै छैथ, आँखिसँ रूपो तैयार करै छैथ आ हाथसँ इशारो करै छैथ, तहिना सुरुज भाय सेहो उपक्रम बनौलैन जे देखिते हँसी लगि गेल, मुदा सुरुज भाय सन लोकक लगमे हँसियो केना ओहिना देब। पुछलयैन-

“भाय साहैब, फुसियाहक फुसि आ झुठियाहक झूठ की भेल?”

ओना, हम हँसिते हँसीमे कहलयैन मुदा सुरुज भाय कोन ऐनामे की देखलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा गम्भीर भऽ गेला। जे चेहराक रूपसँ बुझि पड़ल। बजला-

“बौआ, जेकरा न्याय करैक भार देल गेल अछि वएह बलुआह अछि!”

हाइ रे बा! ई की सुरुज भाय कहि देलैन? पुछलयैन किछ आ जवाब देलैन किछ! मुदा से केना कहितिऐन जे भाय भँसियाएल जवाब भऽ गेल। मुदा गर भेटल। बजलौं-

“से की भाय?”

अहिना होइते छै जे जखन केकरो मनक बिखाएल विषयक बात पुछब तखन ओकरा अपन बीख भरल बेथा व्यक्त करै कालमे खुशी होइ छइ। सुरुजो भाय तहिना खुशी होइत बजला-

“बौआ, जहिना बलुआह महादेव–माने बाउल-माटिक बनल महादेव–पर जेम्हरेसँ एक लोटा जल देभुन कि ओम्हरेसँ ढहि जाइ छैथ तहिना।”

सुरुज भाइक जवाबक कोनो अरथे ने लगल, बजलौं- “से की?”

गम्भीर होइत सुरुज भाय बजला- “बाउलो माटिये छी आ मटियार सेहो माटिये छी, जेकर रूपो आ गुणो चिकने होइ छै तँए चिकनी माटिक आ बेसी दिन भेने माटिये पाथरो बनि जाइए आ पाथर बनला पछाइत तनुकसँ सक्कत माने कोमलसँ कठोर बनैत शीला बनि जाइए, तहिना विचारोक छइ।”

सुरुज भाइक बात सुनि मन गद-गद भऽ गेल। गदगदाइत बजलौं- “भाय, अहाँ जहल गेलौं आ हमरा छोड़ि देलौं, कि सभ जहलमे छइ?”

सुरुज भाय बजला- “बौआ, जहल जे बुझै छहक माने छहरदेवालीक बीच, तेतबे थोड़े अछि।”

अखन तक तँ सएह बुझै छी, मुदा सुरुज भाय कि कहलैन से बुझबे ने केलौं। जहिना बाल-बोध बच्चा जखन कोनो एकटा शब्द सीखैए आ सबहक सोझा वएह बजैए, तहिना फेर बजलौं-

“भाय, से की?”

‘से की’ सुनि सुरुज भाय जेना हमरा राय-छित्ती होइत बुझलैन तहिना समटैत बजला- “बौआ, जहियेसँ लोककेँ जानवरसँ हटि कनी बेसी बुधि भेल तहियेसँ कोढ़ि हुअ लगल, किएक तँ

जानवर जकाँ अपन जोगार अपने करए से आगू बढ़ि गेल, तहियेसँ अब्बल देखि-देखि दाबए लगल आ ओकरासँ कमबा-कमबा उदर-पुरन करए लगल, अही बीच ओझरी लगि गेल अछि।”

सुरुज भाइक विचार सुनि जेना नमहर साँस छुटल, मन खाली भेल। बजलौं-

“अपने केने ने लोक फरिछौत। डॉक्टर रोगीकेँ रोगक इलाजक उपाय बतबै छै आकि ओकर साती दवाइयो खाएत?”

सुरुज भाइक बात नीक नइ लगल। नीक ऐ दुआरे नइ लगल जे जे घास आकि लत्ती जकाँ माटिपर पसरल अछि जेकरा डाँड़मे एते दम नइ छै जे ठाढ़ हएत तेकरा बिना साँगह देने ठाढ़ केना करब?

हमर बात जेना सुरुज भाइक मनमे ठेकलैन। ठेकिते बजला-

“बौआ, राजा दुखी परजा दुखी, जोगीकेँ दुख दूना, कहे कबीर सुनह भाय सधना, एको घर ने सूना।”



शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016

कटौज

पचतल्ला होटलक भण्डार घरमे चाउर-दालिक बीच फेर काटौज बढ़ि गेल। ओना, ई कटौज बजारेक गोदाम लग शुरू भेल। शुरू भेल जे जखन होटलक चाउर-दालिक पुरजा नेने ड्राइवर गोदामक गेट लग जा कऽ ट्रक लगा गोदामीकेँ होटलक आदेशक पुरजा हाथमे थमबैत बाजल-

“भाय, जेहने कुलक तूँ गोदामी छह तेहने हम ट्रक-ड्रइवर छी, तँए कहै छिअ जे ता-जिनगी भैयारी निमाहैत चलह।”

भाय मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, जहिना भरि मन खटैए तहिना भरि मन खाइए आ तहिना ने एक-दोसरसँ भरि मन हबो-गब करए चहैए। रोपब ‘गब’ भेल आ हूबाक संग मनसूबा ‘हब’ भेल। ओना, काज पुरबैक भाँजमे माने ड्यूटीक समय पुरबैमे दुनू, तँए गनल कुटिया नापल झोर जकाँ दुनूक मन खनहन रहबे करइ। काजक जिनगीक तँ आगू-पाछू सिकड़ी जकाँ कड़ी लगले अछि, माने गोदामी लग जखन मटिया चाह-पान कऽ कऽ औत तखन ने गोदाममे काज शुरू हएत, तैबीच जँ गोदामी अपन ड्यूटी पुरबैले पहुँच गेल तँ ताबे गोदामक चौकीदारी करैत रहह। ओना, भिनसुरके समय, करीब सात बजैत रहइ, मुदा भिनसरो तँ केते रंगक अछि। कियो तीन बजे रातिकेँ रातियो कहै छैथ आ कियो तीन बजे भोरो। एक दिस तरगर राति भेल तँ दोसर दिस बड़का भोर। मुदा जेतए जे हौउ, ने ओइ वेचारा ड्राइवरकेँ ट्रकक दुनियाँ छोड़ि दोसर दुनियासँ

मलतब छै, आ ने ओइ वेचारा गोदामीकेँ दोसर दुनियासँ मतलब छइ। मुदा दुनू ऐ दुआरे खुशी अछि जे जे परमात्मा सृष्टिक रचना केलैन ओ सबहक अँटावेशो सेहो तँ करबे केलैन। तखन तँ जेकरा भागमे जेते छै, सएह ने लेत। बिसवास या तँ देखि-सुनि कऽ वा किछु गवाहक गवाहीसँ सभ करिते अछि।

गोदामक आगूमे ट्रक लागल आ गोदामक बगलेक कोठरीमे गोदामीक डेरा, गोदामी ड्राइवरकेँ कहलक-

“भाय, दुनियाँमे के एहेन हएत जे भैयारी नइ चाहत, मुदा दुनूक एक-आत्माक बास हुअए तखन ने।”

डेरामे असगरे गोदामीक पत्नी बैसल टी.बी. देखैत। पाँचे मिनटक बात-चीत जहिना ड्राइवरक तहिना गोदामीक आत्माक तारकेँ तेना जोड़ि देलक जइसँ वीणा जकाँ स्वर निकलए लगल। तइ बिच्चेमे बेरागी जकाँ ड्राइवर वीणाक बीच अपन स्वर निकाललक-

“भाय, हमर-तोहर जिनगीकेँ कोनो ठेकान अछि, कखन अछि कखन चलि जाएत, तँए जेते काल आँखि तकै छी, तेतबे-टा दुनियाँ बुझह। तइमे जे जिनगी अछि तेहीमे ने आगू दिस तकैत चलबो अछि।”

ओना, ड्राइवरक बात गहींर रहितो उथराह अछि जे बात गोदामी बुझि गेल। मुदा दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ अभ्यागती निमाहैले किछु बाजल नइ। ‘उथराह’ ई जे भेल जेते गोदामीक जिनगी समटल शान्त जगहमे छै, तेते रोडपर दिन-राति चलैबला ड्राइवरक थोड़े छइ। तखन एहेन बात किए बाजल..?

मुदा होशगर गोदामी मने-मन मानि गेल जे वेचारा ड्राइवर दुनू गोरेक जान मिलबैत बाजल तँए जिनगीक लीला छूटि गेलइ!

तैबीच गोदामीक डेराबला कोठलीक मुँहपर दुनू गोरे पहुँच

गेल। घरमे टी.बी. देखैत गोदामीक पत्नीकेँ देखि ड्राइवर बाजल-

"भाय, तूँ ते रजो-महराजासँ ऊपर छह!"

'महरानी' सुनि गोदामीक पत्नी मुस्कियेली तँ मुदा मन रहैन टी.बी.क सिरियलमे, जइमे बाधा भेने मन थोड़े जरौ लगलैन। जरबो केना ने करितैन, जेरक-जेर गामक लोक दिल्ली-बम्बैक सड़कपर वौआ रहल अछि, तैठाम जे लोक गौंआँ-घरूआसँ चीन-पहचीन राखत, तखन सभटा कमा कऽ ओहीमे फूकि देत आ अपन बाल-बच्चाकेँ, जेकर भार कन्हापर छै, ओकरा बेरमे रोडपर टहलत..?

ओना, भीतरे-भीतर पत्नी जरैत रहथिन मुदा बेवहारो तँ बेवहार छी, केना नइ मुँह दाबियो कऽ एक लोटा पानि आ एक कप चाहोक आग्रह करती! तइले जँ पतिक आज्ञाक आशा तकती तखन तँ खूब लूरिगैर भेली!

गोदमी अपना डेरामे चाहो पीबैत आ खिड़की देने मुड़ी उठा-उठा गोदामो दिस देखैत। तीनटा मटिया अपन ड्यूटी करए अपना कार्यालयक गेटपर पहुँचल, तँ आगूमे ट्रककेँ ठाढ़ देखलक। काजक भोर देखि तीनू मटिया एक-दोसरकेँ शुभकामना देलक। शुभकमनो केना ने दैत, एक तँ ट्रक छी, जैपर कमो लदाएत तँ दू साए बोरा लदेबे करत। तहूमे समयकेँ आगू बढ़ने एते तँ भेबे कएल जे एक दिस बोरा छोट भेल, माने पहिने अढ़ाइ मन अँटैबला सोनक बोरा होइ छल, अखनो ठाम-ठीम अछिए। जे अपनो एक सेरसँ ऊपरेक होइए। आब तँ तेहेन प्लास्टिकक बोरा बनि गेल अछि, जे जेतबे वौस रहत तेतबे-टा ओकर साइज बनतै। अन्नक बोराक सीमा अछि, खुदरा गहिंकी आ थौक गहिंकी जँ थौक गहिंकीकेँ छोट वौसमे समान देब तँ ओ अनेरे गनबैत-गनबैत हाथक आँगुरो दुखौत आ काज दैत गोनू झाक पनपिआइ जकाँ...। तँए पचास किलोबला बोरा उपयोगी भेल। तहूमे पहिलुका सोनक बोरा जकाँ ऊपर-निच्चाँ

सिलहट थोड़े रहैए, आब तँ तेहेन कान बोरामे लगा देल गेल अछि जे चाहे एको हाथे नइ तँ दुनू हाथे कान पकैड़-पकैड़ फेकैत जाउ...।

रेलबे स्टेशनक पसिन्जर जकाँ मटियाकेँ देखिते गोदामी गोदामक मुँह लग पहुँच कहलक-

“दू साए बोरा चाउर आ पचास बोरा दालि लोड करैक छह।”

जहिना कियो अपन जिनगीकेँ काटि-छाँटि चौबीस घन्टाक बना ओछाइन छोड़ैसँ पहिने चौबीसो घन्टाक आमद-खर्चक संग जिनगीकेँ बैसबैत ओछाइनसँ उठि अपन नित्य-क्रिया दिस बढ़ए चाहै छैथ, सएह भेल जिनगीकेँ थाहि कऽ चलब। तहिना मटिया सभ अपन थाहलक। जखने थाहल जिनगीक धारमे चलब तखने केतबो तेज धारक पानिक गति किए ने होए मुदा थाही तँ थहिया-थहिया थाहि-थाहि चलबे करत किने।

गोदामीक बात सुनि तीनू मटिया अपन चौबिसो घन्टाक जिनगी थाहिते तुष्ट भऽ गेल। एक बाजल-

“दू घन्टाक काज भेल।”

दोसर बाजल-

“हँ, सएह हएत!”

तीनू मटिया अपनामे गप-सप्प करिते छल कि ड्राइवर सेहो पहुँच गेल। एकटा मटिया पुछलकै-

“भाय, ई तोरे ट्रक छिअ?”

मटियाक बात सुनि ड्राइवर थकमका गेल। थकमका ई गेल जे जँ ‘हँ’

कहबै तँ झूठ बाजब भेल, गाड़ी तँ होटल-मालिकक छिऐ, हम तँ ओकर नोकरी करै छी। फेर होइ जे जाबे हमरा जिम्माम गाड़ी छै

ताबे तक तँ हमरे ने भेल। जँ केतौ गाड़ी एक्सिडेन्ट हेतै तँ ओइ लागल हम मरब आकि गाड़ी-मालिक? अही विचारमे वेचारा ड्राइवर ओझराएल, तँए जवाब दइमे कनी देरी होइत रहइ। तैबीच दोसर मटिया बाजल-

"चुप किए छह! केकरो चोरा कऽ आनि गोदामक आगूमे लगा देलहक हेन?"

ओना, ड्राइवरो तँ ड्राइवर छी, जिनगीक ड्राइवर, गाड़ीक ड्राइवर, काजक ड्राइवर आदि सैयो रंगक अछिए। मुदा गोदामी तइ बिच्चेमे बाजल-

"भाय, गोदामे छिऐ, ऐ एरियाक चाहे सड़ल-पाकल रहौ आकि चोरी-छिनरपनक, सबहक ने गोदाम छी। तँए अनेरे तूँ सभ वकबास करै छह।"

गोदामीक विचारसँ ड्राइवरकेँ सह भेटलै, बाजल-

"भाय, अखन तोरा ऐठाम असगरे आएल छिअ, तूँ सभ पहुनाइ कहासँ करेबह तँ अनेरे चोर-बङोर बनबै छह।"

मटिया सभकेँ बुझि पड़लै जे वेचाराकेँ दुख भऽ गेलइ। एकटा बाजल-

"भाय केते दिनसँ ड्राइवरी करै छह?"

जहिना एक जिनगीक बेथा-कथा दोसर जिनगीकेँ बेथित-कथित बनाइये दइए तहिना ट्रक-ड्राइवरकेँ सेहो बना देलक। 'केते दिन' सुनि ड्राइवर थकमका गेल। थकमका ई गेल जे जँ कम दिन कहबै तँ कहत जे तूँ नव-सिखुआ छह तँए तोरा जिनगीक कोनो ठेकान नइ जे कखन छह कखन नइ छह। मुदा लगले फेर भेलै जे जँ बेसी दिन कहबै तँ कहत जे सभ गेल गंगा नहाइले आ तूँ रहि गेलह ट्रके चलबैत! माने ई जे जँ जिनगी एक-रसिया चालि पकैड़ कौल्हुक

बरद जकाँ अपने थैर भरि घुमैत रहल तँ ओहू जिनगीकेँ तँ गतिशील नहियेँ कहल जा सकैए। ओहो तँ ठमकले भेल किने! तत्-मतमे ड्राइवर मने-मन गुन-धुन करए लगल जइसँ जवाब दइमे देरी होइते रहइ। तही बीच दोसर मटिया बाजल-

"भाय, एना धखाइ किए छह। ऐठाम कि कियो आन अछि सभ तँ अपने सभ छी।"

मटियाक बातकेँ आरो सम्हारैत गोदामी बाजल-

"से तँ छीहे। जहिना तूँ सभ चाउर-दालिक बोराकेँ घर-बहार सभ दिन करै छह, तहिना ने हमहूँ करै छी आ ईहो वेचारा ट्रकसँ अनबो करैए आ लैयो जाइए।"

गोदामीक बात सुनिते तेसर मटिया बाजल-

"एकरा के काटत! तीनू ते एके ने भेलौं। जखने एक भेलौं तखने ने खेनाइ-पीनाइ, बात-विचार सभ एके हएत।"

ड्राइवरकेँ सह भेटलै, बाजल-

"एकरा के काटत!"

ड्राइवरक बात सुनि पहिल मटिया बाजल-

"देखह भाय, तूँ हमरा सबहक पाहुन भेलह, मुदा छह तँ बजारसँ कनी हटि कऽ। ऐठाम देखिते छहक जे ने अपन डेरा अछि आ ने चाह-पानक दोकान , जे खुएबो-पीएबो कैरतिअ आ गबो-सप्प करितौं। करितौं की, मन तँ होइए जे तोरा भरि मन कनाडियन रस पीऐबतौं, मुदा मटिया-तोंटियाक जिनगीक मद्दीए की।"

दोसर मटिया सम्बन्धकेँ बढ़बैत बाजल-

"चाहे-पानकेँ सीमा-नाङैर छै, तीनू गोरेक काजो तँ सेरिआएले अछि, हमहूँ तीनू गोरे ट्रकपर काज करब। तोहूँ जहिना खाली गाड़ी

अनलह तहिना भरि कऽ नेने जेबह आ गोदामी भायकेँ अढ़ाइ साए बोरा चाउर-दालिक बिकरी भइये गेलैन।”

दोसर मटियाक बात सुनि पहिल मटिया बाजल-

“पाहुनक पहुनाइ आकि अपेक्षाक अपेक्षितारे चाहे-पानटा सँ थोड़बे होइए। दू-हाथ ताशे खेलह। बुझल छह किने अही ताशक खेलमे केते राजा-रजबार डुमि गेल आ केते दोबर भऽ गेल?”

घन्टा भरि ताश खेलेलाक पछाइत दोसरो होटलक गाड़ी पहुँचल। काजकेँ बढ़िआइत देखि सभ अपन-अपन काज दिस बढ़ि गेल।”

चाउरक गोदाममे रंग-रंगक चाउरक छल्ली लागल, मुदा चाउर छोड़ि आन वौस नइ छल। अरबा-उसना, मोटका-महिक्का, सुगन्धित-बिनु-सुगन्धित इत्यादि अनेको चाउर, मुदा छी तँ सभटा चाउरे माने मनुक्खेक भोज्य पदार्थ।

दू साए चाउरक बोरा लोड होइते गोदामी दालिक गोदाम खोललक। किसिम-किसिमक दालि, मुदा रंग सबहक एक रंगाहे, जहिना चाउरक एक छहा रंग तहिना दालिक सेहो।

गाड़ीपर दालिक बोरा लोड होइते, दालि-चाउरक बीच कहा-कही शुरू भेल। कहा-कहीक कारण भेल अपन-अपन महत्तक अपन-अपन बड़प्पन। बोराक चाउर बाजल-

“हमरा परतापे तोहर जिनगी छौ तँए हम महँथवार बनि हाथीपर चढ़लौं आ तूँ महींसवार बनि महींसपर चढ़ैक कोशिश कर।”

चाउरक विचारकेँ कटैत दालि बाजल- “केहेन-केहेन नाओंबला तँ डुमि-खपि अपन नाको कटौलक आ नामो घिनौलक आ तूँ बर नाओंबला महँथवार बनै छह! अपन टेटर सुझै छह जे एक

किलोक जेते मोल हमर अछि तइमे तूँ तीनो किलोसँ ने पुरबह?”

ओना, दालिक बात चाउरकेँ छुलकै, मुदा छुनैटा सँ थोड़े होइ छइ। अपन-अपन गुणकेँ महत तँ होइते छइ। मुदा तँए कि गेंग रोपनिहारक बीआ उपैट गेल? जखन सुरुज-चानक ठेकान नइ अछि जे कहिया नमहर हएत आ कहिया छोट, तखन बात-विचार आ गप-सप्प ओइसँ अलग थोड़े अछि।

दालिक झमारसँ चाउरक मन झमान भऽ गेल। बाजल-

“देख! दुनियाँ भरिमे अपन जे सचार-विचार रहल अछि आ अखनो अछि, तइमे दुनू गोरे सहयोगी जकाँ छी। माने ई जे भात-दालिक भोज्य विचार जे अपना ऐठाम अछि, ई सिस्टम केतौ ने अछि। तँए आँखि देखेमे से नइ छजतौ।”

चोटाएल साँप जकाँ दालि फुफकार छोड़लक-

“कहबे तँ केलियौ, जे हमर एक-किलोक मोल अछि, ओ तूँ चारियो किलोमे ने हेमे। तखन तोहीं बाज?”

दालिक बात चाउरक अभ्यंतरकेँ छुबि देलक। बाजल-

“तोरा जकाँ हम निरलज नइ ने छी, नीड़-जल छी, मुदा अपन बात नइ कहबौ ते तोहर मन रहतौ। बाज ते तोहीं, पुछही ते गाड़ीबला सँ जे दिनका राशन कीनै जाइ छहक तँ बेसी चाउरमे पाइ लगै छह आकि दालिमे?”

ओना, ड्राइवरो बोरे लग ठाढ़ भऽ गनैत रहए, मुदा मने-मन ने बोरा गनैत रहए, कान तँ खलिये रहइ जइमे दुनूक बात तँ जमा होइते रहइ। तहूमे गाड़ीबलाक नाओं सुनलक तखन आरो चकोना भेल। चकोना होइते मन किराना दोकानपर चलि गेलइ। मुदा वेचारा ड्राइवर अपने विचारमे ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे पाबैन-दिनक दोकनदारी आ अनदिना दोकनदारीमे दू रंग खर्च होइए। पाबैन-दिन

देहरादुनबला चाउर कीनै छी तँ साठि रुपैये किलो दइए आ अनदिना जे मोटका उसना चाउर लइ छी तँ पनरह रुपैये दइए। चारि साए ग्राम चाउर लइ छी आ साए ग्राम दालि लइ छी। साए ग्राम दालिक दाम दस रुपैआ लगैए आ देहरादुनबला चाउरक दाम चौबीस रुपैआ लगैए आ अनदिना जे चाउर लइ छी तँ छह रुपैआ लगैए..!

हिसाबमे तेना वेचारा ड्राइवरक मन नंग-चंग हुअ लगलै जे पिनैक गेल। पिनैकते चाउरो आ दालियोक बोरा दिस दहिना हाथक आँगुर उठबैत बाजल-

“संच-मंच भऽ रस्ता चलै-चलह नइ जँ केतौ रस्तामे झगड़ा केलह आ हमर गाड़ी उनटल तँ कहि दइ छिअ!”

जहिना गमैया पनचैतीकेँ मानि तँ लइए मुदा कहा-कहा चलिते रहै छै, तहिना ड्राइवरक बात चाउरो आ दालियो मानि गेल मुदा कहा-कहा मेटाएल नै लधाएले रहलै।

होटल पहुँच भण्डार-घरमे दुनूकेँ पसिन्जर गाड़ीक डिब्बा जकाँ कसि कऽ रखि देलक। के केतए अछि तेकर कोनो ठेकान ने रहलै। सभपर सभ चढ़लो आ उतरलो, तँए केकर बात के सूनत, सभ अपने बेथे बेथाएल रहए। मुदा जखन भण्डार-घरसँ दुनूक एक-एक बोरा भानस घर पहुँच सामना-सामनी भेल आ अपन आगूक धधकैत चुल्हि देखलक आकि दुनूक मन डरसँ पसीज गेलइ। दुनूक मनमे भेलै आब बलिक छागर जकाँ नहबैले लऽ जाएत! दालि दिस चाउर ताकए आ चाउर दिस दालि। तखने चाउर कहलकै-

“जहिना हम भाय-चाउर भेलियौ तहिना ने तोहू बहिन-दालि भेलेँ। जखन दुनूक पुरुखा बीच सभ दिन भाए-बहिनक सम्बन्ध रहल अछि, तखन आजुका सम्बन्ध तँ हमहीं-तोहीं ने निमाहब।”

चाउरक बात सुनि दालिक अभ्यंतर मन बाजल- “भैया, हमर-

तोहर सम्बन्ध कि कोनो आइये भेल, जहिना सभ दिन प्रेम-भावसँ रहलौं तहिना दिन बीत जाए, सएह ने मनक मनोरथ भेल।”

दालिक बात सुनि भरदुतिया-भाए जकाँ चाउर बाजल-

“समय छल बहिन, जखन श्रमक अनुकूल दुनू गोरेक महत बरबैर रहए। मुदा आइ कोसी कातक पड़ोसियाक बीचक कटान जकाँ दुनूमे दूरी बनि गेल अछि..!”



शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016

बाल बोध

आने दिन जकाँ भोर भेल, सुर्जक लाली पसरल। राति भरिक अन्हारक संग पुरनिहार रात्री वायु बहैत माटिक नीड़ानन्द सुगन्ध सेहो ओहिना निकलैत, गाछ-बिरीछसँ अकास धरिमे चिड़ै-चुनमुनी ओहिना अपन-अपन बोलमे नीक-अधला बात सेहो बजैत, मुदा तैयो सुधनी काकीकेँ ओछाइनसँ उठैक साहस नइ होइ छैन। ओना, नीन टुटि गेल छैन मुदा आँखि बन्न छैन, कान तँ बन्न होइबला छी नइ, ओ तँ जागल सिपाही छी...।

चिड़ै-चुनमुनीसँ लऽ कऽ सूर्जक लाली धरि सुधनी काकीकेँ बुझि पड़ैन जे सभ जेना हमरे मुहोँ दुसि रहल अछि आ चालियो-कुचालि देखि रहल अछि। कहू ई केहेन भेल जे नअ बर्खक बेटीकेँ ओहन पैघ संस्थागत विद्यालयमे पढ़ए पठेलौं जे अपन जिनगी-उठैक बात बुझत, तँ बुझि गेल उठल ज्ञानक किरिया!

चकित भेल सुधनी काकीक मनमे उठलैन- ई एना भेल किए? तीनियेँ बर्खक बेटी जखन रहए, तहिये ओकरा ओहन विद्यालयमे प्रवेश दिएलौं, जैठाम दोसर कोनो बाहरी विद्याक प्रवेश नइ। अपन भोजन, अपन रहैक बेवस्था, अपन विद्यालयक पहचान, अपन वस्त्र-जात आ अपन विचारक पढ़ै-लिखैक बेवस्था आदि सभ किछु तँ विद्यालयक अपन अछि, तैठाम एना किए भेल?

मुदा लगले अपन मन लटुआ कऽ अपनापर खसि पड़ैन जे लोक तँ यएह ने बुझत जे केकर बेटी छी। तइ काल हमरा छोड़ि

दोसर माए दोखी हेतइ। सभ कहै छै माए गुण 'घी', ई कलंक केकरा सिर चढ़त। आँखि खोलि जखन चारू दिस तकैत तँ बुझि पड़ैन जे सभ किछ भगा रहल छैन। मुदा घरसँ आकि गामसँ भगा रहल छैन, तैठाम आबि सुधनी काकीक विचार अँटैक जाइन।

कौल्हुके समाचार छी। ओना, समाजमे एहेन काजकेँ लोक घटने कहै छैथ, मुदा ई घटना नइ भेल। घटना भेल ओ जेकर घटितक पूर्ति नइ होइत, मुदा प्रेम-प्रसंगमे कोनो लड़का आ कोनो लड़की समाजसँ डरि कऽ कतौ पड़ा जाइए, से केना घटना भेल।

भेल ई जे सुधनी काकीक नअ बर्खक बेटी- सोनी सतमे किलासक छात्रा, सतमे किलासक छात्र- किशलयक संग केतौ चलि गेल। ओना, दुनू पड़ाएल चारि बजे भोरमे, आने दिन जकाँ ट्यूशन पढ़ए विदा भेल आ तखने भोरुका गाड़ी पकैड़ लेलक। मुदा आन किए बुझत जे दुनू पड़ाएल जाइए। सभ दिन तँ देखबे करैए जे भोरुका गाड़ी पकैड़ हाट-बजारक काज सेहो करिते अछि। ट्यूशनसँ लऽ कऽ विद्यालय धरि संगे रहैए, तँए किए अनका नजैरपर पड़त। मुदा सुधनी काकीक नजैरमे ओतै काँट जकाँ गरि जाइन जे ट्यूशन पढ़ि कऽ आन दिन अबै छल, आइ किए ने आएल। मुदा लगले ओ काँट हाथेसँ निकैल जाइन। निकैल ई जानि जे एहेन आइये तँ नइ भेल, केता दिन तँ एहेन होइते आबि रहल अछि जे भोर जे सोनी निकलै छल ओ सात-आठ बजे राति धरि अबैत छल।

ओना, दस बजे करीबमे बुधियार काकाकेँ स्कूलोसँ फोन आएल छेलैन जे सोनी स्कूल नइ आएल अछि? तहिना ट्यूशनसँ सेहो फोन आएल छेलैन। मुदा तैपर जेते कान-बात देबा चाही से बुधियार काका नइ देलैन।

ओना, सुधनी काकी बुधियार काकाकेँ बेर-बेर कहैत

रहलखिन मुदा बुधियारो काका तँ भरि दिन बुधियारियेमे ने रहै छैथ। बिनु बिआहल बेटी मरे से कि बुधियार काकाकेँ नइ बुझल छैन, छैन्हे।

एक तँ सभ दिन बुधियार काका तरगरे उठिते छैथ मुदा आइ तँ आरो गामक टोह लइ खातिर सबेरे उठि गाममे टहलए लगला। भोरुका टहलबो नीक होइते छइ। जिराएल मन निड़ाएल रहिते छै, जेकरा मीड़बैमे सेहो सुविधा होइ छै आ एकान्त बुझि किए लोक अनेरे सोझा-सोझी रक्का-टोकी कऽ झगड़ा बेसाहत। तहूमे जँ बुधियार लोक बुड़िबकसँ रक्का-टोकी करैत अपन इज्जत उतारि लिअए तँ ओ कोन बुधियार लोकक बुधियारीक लक्षण भेल। ओ तँ सोझे भेल कि बुड़िबक संग चुम्मक लोहा जकाँ बुड़िबक बनब। तँए अधिकांश लोक यएह ने कहता जे हमरा बुझले ने अछि। भाय जखन अहाँ अपन सिलपट जकाँ चौकियाएल चौमास सन बनले छी तखन जे ओइमे नीक चीजक नीक बीआ बाउग हुअए आकि अधला चीजक अधला बीआ, गाछ तँ वएह जनमत जेकर जे गुण-धर्म छइ आ जेकर जेहेन गुण-धर्म छै ओ तँ ओहने फड़बो-फुलेबे करत।

..मनुक्खो तँ मनुक्ख छी, देवी-देवताक रूप-रंगक भिक्षू। जेहेन मनमे गढ़ैक विचार हेतै तेहेन गढ़ि लेत आ तेहने रूपो-सोभाव दऽ देतइ। दऽ कि देतै जे छइहे, अपन बुझलो हरल-मरल विचार दाबि कऽ रखि लेत आ ओकरे सन जीअल-जान ठाढ़ कऽ देत। तहिना बुधियारो काका गामक टोह लैत अपन बीआ बाउग करैमे लागल छला।

ओना, गामक हवामे मन्द-मन्द ईहो वायु उठि गेल जे दुनूक बीच अपकर्म, अपकाज वा अपवृति भऽ रहल अछि। मुदा अनकर घेघ निहारैसँ बेसी लोक अपना गाड़ामे घेघ नइ हुअए तइ परियासमे लागल। मुदा ई हवा छल काल्हिये तकक। जे काने-कान बीआ बाण

छल मुदा गुपे-गुप गुपबाण बनल छल। भोरुका ट्यूशनक पछाइत ओइमे एक झोंकी जकाँ झोंक उठल। उठल ई जे सोनी आ किशलय दुनू गोरे आइ ट्यूशन पढ़ए नइ गेल! जासूसियो तँ जिज्ञासूए छी, अनेरे रंग-रंगक प्रश्न छात्रो आ शिक्षको सबहक बीच उठए लगल। एकटा छात्र बाजल-

"जखन दुनू घरसँ निकलल आ ट्यूशन तक नइ पहुँचल तखन अछि केतए?"

मुदा लगले शिक्षको जे कानमे तेल ढारि लैथ सएह ने नीक हेतैन, अपन मोटा अनके दिस ने फेकब नीक। तँए जवाब देलखिन-

"परिवारमे अनेको रंगक काज होइ छै, जँ केतौ कोनो जरूरी काजे गेल हुअए, तेकरा जँ अबलटक नजरिये देखी ओ नीक नइ।"

दोसर छात्र निर्णय करैत बाजल-

"जखन फुल फुलाएल तखन महको निकलबे करतै, तइले जे हम सभ औगुता कऽ किछ बाजि दिऐ से नीक नइ।"

एक तँ ट्यूशन पढ़ै-पढ़बैक दर्जनो छात्रक समय, अनेरे किए कियो बैलूनमे हवा भरि अकासमे उड़ौत। तँए हवाक पहिल झोंकीक गति मन्द तँ पड़ल मुदा बन्न नइ भेल।

फेर दोसर झोंकी स्कूलक किलासमे उठल, तहूमे बाल बोधक जमात, एकटा छात्र बाजल-

"दुनू दिल्लीक गाड़ी भोरे पकैड़ लेलक।"

शतरंजक गोटी जकाँ दोसर सह दैत बाजल-

"दिल्ली नइ बम्बैआ टेन पकैड़ लेलक!"

सोनी आ किशलयक भागबकैँ समाजक लोक मने-मन मानि लेलक जे दुनू उमेर आ ज्ञानक दोखक चलैत एना केलक। से भेल

मने-मन। मुदा समाज तँ मने-मनक मोइन छी; जैठाम समाजक विघटनो होइए आ निर्माणो होइए, तैसंग मने-मनक दोसर कारण जे रूढ़ स्वरूप अछि ओ अछि, कोट-कचहरी जकाँ पैछला पचास बर्ख पूर्वक जे समाज छल ओइ अनुकूल जे चिन्तन प्रक्रिया छल तइ अनुकूल आइयो सोचब आ करब। ओना, मथनसँ मक्खन निकलै छै, तँए ओहो जरूरी। मुदा आइक जे सामाजिक परिवेश बनि रहल अछि ओइ परिवेशमे केना प्रवेश कएल जाए..?

साँझ पड़ैत-पड़ैत काल्हिसँ बेटीक सम्बन्धमे सुनैत-सुनैत सुधनी काकीक कान बहीर भऽ गेलैन। ने भानस करैमे मन अँटलैन आ ने भूखे-पीयासक तृष्णा बुझि पड़लैन। मनमे तेना अपन बेटी नचैत रहैन जे किछु नीके ने लगैन। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ ओछाइनपर पहुँच पड़ली।

चौहद्दी बान्हि–माने गाम घुमि–बुधियार काका घरपर पहुँचला। सून-सान जकाँ घर-दुआर बुझि पड़ैन। परिवारक रूपक रंग देखि बुधियार कक्काक मनमे एलैन- एना किए अनोन-बिसनोन जकाँ बुझि पड़ैए? तैबीच सुधनियोँ काकी आँगनसँ निकैल दरबज्जाक मुँह लग पहुँचली। दरबज्जाक मुँहक आगू मुँह नइ खुजलैन मुदा पति-पत्नीमे पहिने के बाजैथ, एहेन तँ प्रश्न नइ अछि। अपना खगते कियो बजैए। मन्हुआएल कहियौ कि मरहन्ना, परिवार देखि जँ परिवारक अभिभावक मुँह नइ खोलैथ तँ धराउए कहिया-ले रखता। पुरुषक तँ पुरुषार्थे ने भेल जे जेते नमहर काज सोझमे आबए तइसँ अधिक पुरुषार्थसँ ओकर सामना करी। जँ से नइ तँ परिवार निच्चे-मुहेँ ढलैक जाएत! भिनसुरका सुर्जक बाल-कली जकाँ मुँहमे चुहचुही आनि बुधियार काका बजला-

“अनेरे ने मनकेँ एते दबने छी, अखन तक जे चुल्हो-कौल्ह ने झाड़लौं-बहारलौं-निपलौं हेन, तखन चाह कखन बनाएब?”

ओना, सुधनी काकीक मनमे रहैन जे बेटीक विषयमे किछु कहता, मुदा से भेल नहि। जइसँ सौनक मेघ जकाँ दुनू आँखि सुधनी काकीक करिया लगलैन। नोरक सिरखार सेहो जागए लगलैन। जे बुधियार काका बुझि गेला। कोनो जीवित घटनाकेँ मोड़ैले दोसर-तेसर घटनाकेँ आगूमे ठाढ़ कएले जाइए, यएह सोचि बुधियार काका बेटीक बातकेँ टारैत, खाइ-पीबैक बात उठौलैन। मुदा से सुधनी काकीकेँ मनमे नहि पचैत देखि बजला-

“देखियौ, जँ आइ अपने बेटीक कोनो बातटा रहैत तँ ओ भेल परिवार स्तरक काज, मुदा गाममे जखन दू परिवारक, तहूमे दू जातिक बीचक बात छी, तैठाम जँ अहाँ चिन्तासँ मरिये जाएब, तँ ई मरब कोनो मरब भेल। ई तँ भेल बलउमकी।”

ओना, सुधनी काकीक मनमे ईहो जगि गेल रहैन जे पहिने चाहे बनाबी। जखने अपनो चुल्हि लग बैसब, तखने मनो बहला जाएत। चाह पीला पछाइत निचेनसँ दुनू परानी कोनो रस्तो निकालब। चाह बनबए सुधनी काकी गेली।

गोबर गाँठक करसीक आगि हुअए आकि बन्हन दइबला जौड़क जरैत आगि, दुनू भुमहूरे आगि कहबैए, तहिना गाममे काने-कान, मुहेँ-मुहेँ सोनी आ किशलयक समाचार अखबारक पहिल पेजक मुख समाचार जकाँ बनल अछिए। जइ अखबारकेँ देखू, तइमे पहिल समाचार तँ वएह अछि। तँए दुआरे-दुआर, अँगने-अँगने आ अँगने-दुआरे आकि दुआरे-अँगने अही समाचारक दौड़-बरहा चलि रहल अछि। मुदा टीका ढेरी टीपै-जोकर एकोटा ने! सभकेँ सभ दुसबे करैत मुदा समाज जखन समुद्र छी तखन ई नान्हिटा काज केना पचत, तइ दिस कियो तकबे ने करैत आकि बुझबे ने करैत, से तँ ओ जानैथ मुदा समाजमे एहेन काज आइये भेल, सेहो बात नहियेँ अछि, तखन जे डकहर जकाँ बड़का लोल अलगा कऽ सोझे देखैत

रहब सेहो तँ उचित नहियेँ अछि।

गाममे जे समस्या ठाढ़ भेल ओ केहेन समस्या अछि ऐपर तँ विचार करए पड़त। एहनो घटना तँ होइते अछि जे एके परिवारक लड़का-लड़की रहैए। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे दुनू एके जातिक बीचक रहैए, तेकरो नकारल नहियेँ जा सकैए। तैसंग जातिक बीच सेहो अछि। तेतबे किए, एक धर्म माननिहारकेँ दोसर धर्म माननिहारक बीच सेहो होइते अछि। के विचार करत?

चाह पीबैत-पीबैत जेना सुधनी काकीकेँ जान-मे-जान एलैन तहिना बजली- "जे बाप-माए बेटा-बेटीकेँ जनम दइ छै, से तँ मुइला संग जाइते ने छै आ धिया-पुता-ले जँ जान गमाएब तखन तँ एको दिन जीब कठिन अछि। मुदा रहब तँ अही गामो-समाजमे आ अही परिवारोमे।"

आगूक बात सुधनी काकीक मुहेँमे रहैन कि बिच्चेमे बुधियार काका पान साए नम्बर देल पानक पीत फेकैत बजला-

"कोन रोग छै जेकर दवाइ नइ छै, अनेरे अहाँ मन खसौने छी। केकरो मन खसै छै कि उठै छै ओ अपना करमे, तइले अनेरे किए माथ भरिऔने छी।"

बुधियार कक्काक बात सुनिते सुधनी काकीक मन खने-खन खनहन हुअ लगलैन। बजली-

"आगू की हएत?"

भाय केतबो किछु हुअए मुदा घरवाली लग आ सासुरमे जँ पुरुखपना नइ रखलौं तखन पुरुखे केना भेलौं। जखन पाण्डु रोगसँ ग्रसित, जे रोग जनन-शक्तिये कमजोर करैए, ओहन पाण्डवकेँ जखन युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल आ सहदेव सन बेटा भऽ सकैए तखन तँ अपने कहुना निरोग छी..!

बुधियार कक्काक मनमे बुधियारी लगलैन। बजला- “अहाँ अँगना-घरमे रहै छी तँए दुनियाँ-दारीक गप-सप्प नइ बुझै छिऐ। जेते शास्त्र-पुराण अछि सभमे एहने-एहने घटना सबहक चर्च अछि, हम-अहाँ कोन माल-मे-माल छी जे...।”

आगू बजैले बुधियार कक्काक बात पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे सुधनी काकी बाजए चाहली। बजैक कारण भेलैन जे पतिक मुहेँ जे शास्त्र-पुराण सुनलैन। शास्त्रे-पुराण ने कोनो अधला काजकेँ नीक बनबैए आ पापक प्रायश्चित करैक दम सेहो रखैए। छोट-छीन धारक बाढ़िकेँ के कहए जे कोसियो-गंगाक बन्हतोरा बाढ़िमे जखन चुटियो सन कोनो खढ़-पातक सहारा भेट गेने ओहन बाढ़िक डरे ने करैए तखन मनुक्ख तँ सहजे मनुक्ख छी, बेंगोसँ कठजीव...।

मने-मन विचारक धारमे सुधनी काकी वौअए लगली। जेते वौआइ छेली तेते डरो होनि आ मनो खुशी होइत रहैन। बजली-

“जखन संगी बनि हाथ पकड़लौं आ संग दइक शपथ अहाँ आगि छुबि कऽ खेने छी, तखन जँ आगिसँ डर करब तँ शपथ केना पूरित हएत?”

सुधनी काकीक विचार सुनि बुधियार काकाकेँ विचारक सिरसँ नइ जड़िसँ कोंपर देलकैन। कोंपराइते मन चहैक उठलैन। बजला-

“गाममे की की भेल अछि आ की की होइए, से अहाँ थोड़े बुझहै छिऐ। जँ बुझनौं हएब तँ कि मोने हएत, मौगी-मेहैरक ने बुधि छी केते काल कोन विचार मन रहत तेकर कोन ठेकान।”

‘थोड़े बुझै छिऐ’ आकि ‘बेसी बुझै छिऐ’ आकि ‘बुझबे ने करै छिऐ’ से सुधनी काकीक मनमे फरिऐबे ने केलैन।

एक तँ पति-पत्नीक बीचक बात, दोसर कियो आन सुननिहारो नहियेँ, तँए सुधनी काकी किए चुप रहती। बजली- “लोक

की सब बजैए?”

पत्नीक बात बुधियार कक्काक अभ्यंतरकेँ जेना छुबि लेलकैन। छुबाइते बमकए लगला-

“गामक लोक कथी बाजत! पहिने अपन टेटर निहारि लिअ!”

‘अपन टेटर’ सुनि सुधनी काकीक टेटराएल जाइत मन थमलैन। थमिते बजली- “की टेटर?”

बेथाक बराबरीक मुँह बुधियार काकाकेँ खुजि गेलैन। बाजए लगला- “रहमाकेँ देखने रहिऐ, पाँचटा धिया-पुता भेला पछाइत अपने दोसर मौगी घर लऽ अनलक आ अपना बोहुकेँ छोड़ि देलक।”

सुधनी काकीकेँ जेना भक्क-दे भकइजोत भेलैन। बजली-

“ओइ पनचैतीमे तँ अहूँ रहिऐ किने?”

बुधियार काकाकेँ पत्नीक बोल अपन वाणीकेँ सह देलकैन। बजला-

“हम कि कोनो चोरा कऽ बजै छी, तीनटा बेटी रहै आ दूटा बेटा, जइमे एकटा बेटा-एकटा बेटी बापक हिस्सामे देलिऐ आ दूटा बेटी आ एकटा बेटा माइयक हिस्सामे। देखै छिऐ केहेन जीबठगर मौगी अछि जे पदमिनी भेल मलिकाइन बनल अछि। बेटा तेते कमाइ छै जे बापोक हिस्सा माइयेकेँ दइए।”

बुधियार कक्काक बात सुनि सुधनी काकीक मन दहललैन। दहैलते बजली- “हँ से तँ आँखिसँ देखै छी।”

अपन विचारमे दोसराक सहमत भेने जहिना विचारमे सकतपन अबैए तहिना बुधियारो काकाक विचार सकतेलैन। बजला- “अखन अपने माथपर भार पड़ि गेल अछि, तँए पहिने चिन्तू भायकेँ भेँट करबैन, ओ जँ पाँच थापर मारबो करता आकि पाँचटा

बातो कहता तँ सहि लेब। किछु छैथ तँ गामक मेह तँ हुनके मानै छिऐन। घुमि कऽ अबै छी तखन गामक खेरहा केहेन पाकल खेरही जकाँ चनकैए से सुनब।”

पतिक विचार सुनि सुधनी काकी जेना विभोर भऽ गेली तहिना बजली- “की खेरहा-खेरही कहलिऐ?”

पत्नीक पिपाशु मन देखि बुधियार कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते विचार उठलैन। जखन घरमे आगि लगि रहल अछि तखन पहिने घर शान्त करब जरूरी अछि। मुदा प्रश्न अछि अशान्त मन शान्त केना हएत? ओना, पोथी-पतराक विचार मनक विचारकेँ जरूर मथित करैत अछि मुदा मनमे जेते शान्ति आँखिसँ देखने होइए ओते कानसँ सुनने तँ नहियेँ होइए। मनक बिसवासे ने मनकेँ शान्ति दइ छइ। तइले समाज समुद्र जकाँ सोझामे ऐछे...।

मने-मन बुधियार काका सोचलैन जे गाममे कहिया-कहिया केतए की-की भेल ओते ने बुझल हएत आ जे बुझलो हएत तँ सभटा मनो नहियेँ हएत। मुदा हाल-सालमे जे सभ भेल हेन से तँ दुनू परानीकेँ देखलो अछि आ सुनलो तँ अछिए। तँए जँ दू-चारिटा एहेन उदाहरण जँ आगूमे देबैन जे कोन-कोन बेटी घर छोड़ि-छोड़ि गामसँ पड़ाएल, तखन अपने आँखि सोझ हेतैन। जखने देखती तखने मनमे हेतैन जे ओहो माए-बाप तँ समाजमे जीबते छैथ। तखन हमहीं किए एते औगता कऽ मरैले तैयार छी। जिनगी कि बड़ सस्ता अछि जे जखन जे मन हएत तखन तेहने बना लेब...।

बुधियार काका पत्नीकेँ परबोधैत बजला- “अनका जेकाँ हम सभ निरलज नइ ने छी, परिवारमे जे घटना भेल अछि, तेकर सोल्होअना दोखी माइये-बाप अछि, से मन कहाँ मानैए? समाजोक दोख केतौ-ने-केतौ जरूर हएत, मुदा अखन तँ ओ विद्यालय छोड़ि

समाजमे पएर कहाँ रोपलक जे समाजकेँ दोख लगाएब। तखन बचल विद्यालय।”

बुधियार कक्काक धारा-प्रवाह वक्तव्य कथाक रहैन कि कथनीक से सुधनी काकी बुझबे ने केली। तँए डकहर जकाँ लोल अलगौने बुधियार काकाकेँ देखैत रहली।

पत्नीक डक-धियान जेना बुधियार काकाकेँ किछु इशारा केलकैन। खग जानए खगक भाषा। भरल पेट थोड़े जरल पेटक सुख देखत, ओ तँ खगले पेट देखि सकैए जे बेटीक बिआह हौउ आकि पढ़ाइ-लिखाइ, पुरबैमे सभ परिवारकेँ एके रंग अनुभव होइए, ईहो केना मानल जाए। बुधियार काका बजला- “गामेमे कि देखै छी, एके गोरे सत-सतटा बिआह केने अछि, जइमे तीनटा-चारिटा फुसलौआ रहैए आ गोटे-आधे समाजक देलहा आ किछु किनलोहो रहिते अछि।”

बुधियार कक्काक मुँहक बात ‘फुसलौआ’ सुनिते सुधनी काकीक मन सुगबुगेलैन। सुगबुगाइते बजली-

“ने अहाँ केतो पड़ाएल जाइ छी आ ने हम केतौ धारमे भँसियाएल जाइ छी जे कोनो औगताइ रहत। जाउ पहिने चिन्तू भैयाक भेँट करियौन, जे कहता से करब।”

पत्नीक सह पबिते बुधियार कक्काक छाती जेना दू इंच आरो बढ़ि गेलैन। बजला- “अहाँ कोनो चिन्ता नइ करू, हम सभ अपनामे विचारि लेब।”

सुधनी काकी- “गामक मौगी सभ जे कुटिचाल करत से?”

बुधियार काका- “घटनामे तँ दुनू अछि किने माने लड़को आ लड़कियो, आधाक भार तँ मौगियोक छै किने, अपन विचार समाजमे राखह।”

चाह पीब चिन्तू काका समाजक बीच होइत घटना चक्रक चक्कीमे अपन मनकेँ पीसैत रहैथ, कि बुधियार काका पहुँच टोकलकैन- “भाय, गोड़ लगै छी।”

चिन्तू भाइक जाबे भक् खुजैन तइसँ पहिने बुधियार काका प्रणाम केने छला, तँए नइ सुनलैन। मुदा भक् खुजैत आगूमे बुधियार काकाकेँ ठाढ़ देखि हाथोक इशारा दैत आ मुहोँसँ बजला- “आबह, बैसह। हाल-चाल कहह।”

‘हाल-चाल’ सुनि बुधियार काका कनी मिड़मिड़ेला मुदा मनमे साहस बटोरि बजला-

“भाय, बच्चियाबला बात तँ बुझने हएब किने।”

“हँ! अखने किछ पहिने सुनलौं। सहए छगुन्तामे पड़ल छी!”

चिन्तू कक्काक बात सुनि बुधियार काका बजला- “उपाय?”

चिन्तू काका बजला- “उपाय, अखन किछ ने। घरसँ भागल तँ चाहे कलकत्ता जाएत नइ ते दिल्ली। बम्बै नइ जाएत, किएक तँ बम्बै भगैए बेजोर माने हीरोइन भगैए हीरो-ले आ हीरो भगैए हीरोइन-ले। लड़का लड़की-ले आ लड़की लड़का-ले, मुदा ऐठाम तँ जोड़ा लगल अछि। जँ अपन जिनगीक भार अपने उठा जीब लेत, तेकरे खगता ने सभकेँ छइ।”



शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016

डभियाएल गाम

आने गाम जकाँ हमरो गाममे पंचायत चुनावक आवाज पहुँचल। लोकक मने उड़ि गेल जे जिला-पार्षद भेल, मुखिया भेल, पंचायत समिति भेल, सरपंच भेल, सरपंचक संग-संग मुखियोक पंच भेल, ओहीमे उपमुखिया आ उप-सरपंच सेहो भेल, तहूमे आरक्षण भेने तँ आरो घरे-घर पद-प्रतिष्ठा सेहो पहुँचत। जखन सभकेँ लड़ै आ पद पबैक अधिकार छै तखन किए ने एके परिवारक सभ बनत। एक गोरे मुखिया, दोसर सरपंच, तेसर पंचायत समिति, चारिम पंच आ जखन सभ अपने हाथ चलि औत तखन जे गाड़ीक-गाड़ीक चाउर-गहुम सरकार दइ छै तँ अन-पानि उपजबैक खगता की रहत। दोसर दिस बान्ह-सड़कक कमीशन नगदा-नगदी सेहो एबे करत, तखन किए ने एक धक्का देखिऐ। यएह धक्का मारि धकियबैक मन दर्जनक-दर्जन नेताकेँ एक्केबेर ठाढ़ कऽ देलक। जइसँ बुझि पड़ए लगल जे राजनीतक जेना बिर्ड़ो गाममे उठि गेल। मुदा दुर-भाग कहियौ आकि अपन-भाग कहियौ मरलाही पंचायत जे अखन वीर्तमान अछि, ओइ क्षेत्रक (जमीनी) कियो अखन तक पंचायतिक जे पद-भार होइ छै से पौने नै छला। तेकर अनेको कारणमे प्रमुख भेल पंचायत क्षेत्रकेँ असथिर रहब।

मरलाहीए गाम जकाँ सरलाही, जरलाही, हरलाही इत्यादि बीस गाम मिला एकटा पंचायत बनल, जइमे ऐ सभ गामकेँ बिना दगने पंचायतक नाओं सोनबैरसा पड़ि गेल।

ओना, जहिना ऐबेर गामे-गाम समाजक विकासक काज

केनिहार उठि कऽ ठाढ़ भेल अछि तहिना देशक आजादीक समय सेहो गामक विकासक बात उठल छल। मुदा दुनूक दू परिस्थिति दू मन:स्थिति पैदा केलक। ओइ समय, माने आजादीक समय सबहक मनमे रहैन जे गाममे रहब अछि तँए गामक विकास ओते तँ जरूर भऽ जाए जे रहै-जोकर होइ। मुदा हुनका सबहक संगे आरो विषम स्थिति रहैन। गामक-गाम डभियाएल पड़ल अछि। किसानक देश भारत, जेकर आधार कृषि, जे सालक-साल बाढ़ि-रौदीक चपेटमे पड़ैत रहैए। मुदा बाढ़ि-रौदीक तँ अपन हिसाब छइ। बेसी बरखा भेल तँ बाढ़ि आएल उपज दहा गेल आ रौदी भेल तँ उपज जरि गेल। मुदा दुनूक अपन-अपन बान्हल समय छै, बाँकी तँ बिसवासू समय अछि। तइले किछु ने भेल। किसान आन्दोलनसँ पछिमी कोसी नहर बनैक योजना बनल। मुदा केते खेतकेँ नहरसँ लाभ होइ छै आ केते उपजाउ खेत मारल गेल? खाएर जे भेल से भेल मुदा चुनाव सनक महापर्वकेँ नीक जकाँ सफल करब मरलाही गामक लोकक मनमे जागले अछि। टोले-टोल, जातिये-जाति पंचायत चुनाव लड़ैक क्रममे आबिये गेल अछि। मुदा कोनो उम्मीदवारकेँ मुद्दा नइ भेट रहल छै, जे एक उम्मीदवार दोसरकेँ पछाड़ि केना जीतत। सभ एक रंगाहे एक चलिये...।

आजादीसँ पहिने हजारो बर्खक शासन देशक बाहरी लोकक रहल जइसँ जनतांत्रिक पद्धतिक विचार लोकक मनमे कहियो जगबे ने कएल। बाहरी शासक रहने देश गुलामीक जंजीरमे जकड़ल रहल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत पंचायतिक रूप-रेखा तैयार भेल, जे गामक लोकक माध्यमसँ संचालित हएत। ओना, आजादीसँ पूर्व गामक सीमांकन वित्तीय गामक रूपमे छल, जमीनक मालगुजारियो आ देखो-भाल जमीन्दारक हाथमे छल।

देश आजाद होइते जमीन्दारोक जमीन्दारी आ रजो-रजबार

ढहल। पंचायतक सीमांकान नव सिरासँ भेल। बीस गाम मिला कऽ सोनबैरसा पंचायत सेहो बनल। सभ गाम सभ रंगक अछि, कोनो गाम रकबो आ जनसंख्योक हिसाबसँ नम्हरो अछि आ कोनो छोटो अछि। मुदा जे अछि से अछि पंचायतमे एकटा मुखिया आ एकटा सरपंच तँ बनबे कएल।

किछु दिनक पछाइत किछु गाम कटि कऽ दोसर पंचायतमे गेल, फेर किछु गाम कटि तेसरमे गेल। अखन ओ बीसो गाम पाँच पंचायतमे विभाजित भऽ गेल अछि जइसँ जनसंख्यो आ रकबोक हिसाबसँ पंचायत छोट बनि गेल अछि, मुदा तैयो मरलाही गामक ने एकोटा मुखिया बनल आ ने सरपंच।

ओना, असगरो मरलाही गाम ओहन अछि जे जनसंख्या-हिसाबे पंचायतिक शर्त पूरा केने अछि। जइसँ पैछला सालक सीमांकनमे पंचायत बनियोँ गेल। अखन तक आने-आने गामक मुखियो आ आनो-आन पद आने-आने गामक लोकक हाथमे रहलैन। गाम-घरमे अखनो पंचायतिक शासनक माने लोक चीनी-गहुम-मटिया तेलक कोटा आ गमैया पनचैतीक अलाबा किछु ने बुझैत।

तीन हजार भोँटरक पंचायत मरलाही गाम, ओना धिया-पुता लगा पाँच हजारसँ ऊपरे जनसंख्या छइ। मुदा भोँट देबाक अधिकार अट्ठारह बर्खसँ ऊपर रहने, तीन हजार भोँटर अछि। कहैले दस-एगारह जातिक गाम अछि, मुदा छह-सात जाति ओहन अछि जे एक-घरासँ लऽ कऽ सत-घरा धरि अछि। आरक्षण भेने किछ-ने-किछ सब जातिक हिस्सेदारी पंचायतमे हेबे करत तँए सभ जातिक बीच पंचायतिक जिम्माक उनमुनी तँ आबिये गेल अछि। जे एको घर अछि ओहो कोनो पदक अधिकारी बनियेँ जाएत।

चारि जातिक संख्या कशम-कश अछि, माने पान साएसँ हजार भोँटरक। ओना, अखन तक समाज-संचालनक जे पद्धति आबि रहल अछि ओ मैनजनी-पद्धतिक अनुकूल अछि। जे जमीन्दारी पद्धतिसँ जुड़ल अछि। मुदा ओ तरे-तर दिवरलग्गु-घुनलग्गु भऽ गेल अछि जेकरा जीब कठिन अछि। मुदा तैयो जाति-धर्म हाबी नइ अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गामे-गाम कि सौंसे राज्येमे चुनावक घोषणाक संग आचार-संहिता सेहो लगि गेल। नोमीनेशनक तारीख सेहो तँय भेल। अन्हराकेँ महींस बीएला पछाइत जहिना गामक लोक, माने दुहनिहार डाबा सोन्हबए लगैत तहिना पंचायत चुनावक चर्च सुनि गामक लोक सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ो केना ने होएत, जनतंत्र छिऐ किने, सभकेँ ने भार सम्हारैक अधिकार अछि। ओना, गामक जे अल्प-संख्यक छैथ हुनका सभकेँ जे आरक्षण भेटलैन तइसँ सभ जातिक, माने पाँचो-छबो जातिक लोक मने-मन संतुष्ट छला। सन्तुष्टक दुनू कारण- पहिल जे एक परिवारसँ उठल दू-चारि समलित परिवारक जे श्रेष्ठ-जन छैथ, हुनकापर सभ सहमत। तेकर बेवहारिक पक्ष ई जे अखन तक परिवार-विभाजनक पछाइतो ओ सिरजन अपन परिवार जकाँ सभकेँ बुझै छैथ। दोसर कारण ईहो जे जैठाम अधिक मतक महत हएत तैठामक महते केते। ऐठाम विपरीत विचार अछि। एक विचार अछि जे एक वैदिक साए अवैदिकसँ श्रेष्ठ, जे बेवहारिक ज्ञानक हिसाबे नीको अछि, जनतंत्रमे मतक विचार भेने अनाड़ी विचारोक महत बढ़ि जाइए। जे हजार जनसंख्याक अछि ओइमे खुटे-खुट माने दियादे-दियाद पंचायतिक मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो लेल ठाढ़ भऽ गेल। जइसँ अठारह-अठारहटा केन्डिडेट मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो-पदक लेल ठाढ़ भऽ गेला। ओना, मरलाही गामक आइ धरि ने कियो

पंचायत चुनाव लड़ल छल आ ने गाममे राजनीतिक हवा बहल छेलइ। ओना, एम.एल.ए; एम.पी. चुनावमे सेहो आ पंचायत चुनावमे सेहो भोँट खसबैत जरूर आएल छल मुदा ओकर प्रभाव सीमित छेलइ। सीमित ई जे एम.एल.ए.-एम.पी. चुनाव जाति-धर्मक हिसाबसँ होइ छै तइमे वएह भेल राजनीति आ पंचायितक चुनावक आधार ई भेल जे बीस गामक पंचायत भेने विकास नइ होइए, तँए छोट भेने बेसी हएत, जे पंचायत तीन बेर कटान भेल, वएह आधार बनल रहल जे राजनीति बनल रहल।

ओना, गाममे तेते केन्डिडेट भऽ गेला जे जँ एक-एको छअ कोदारिक माटि उठा कोनो सड़कपर देथिन तँ ओ नीक सड़क बनि जाएत, मुदा से नइ दू दाँतक बच्छा जकाँ सभ हरछुट्ट, तँए ने ओकरा हर लगा सिखबैक अछि। मुदा तेहेन ने जातिये-जाति आ खुटे-खुट लड़ाइ ठाढ़ भेल जे पहिने जाति-जातिक बीच फरिया लिअ। मुदा जे भेल से भेल, पैछला सेवाक कोनो आधार कोनो केन्डिडेटकेँ नहि, तँए सभ मोगलक हींग वेपारी जकाँ जे चैतक करारीपर जहिना हींगक वेपार करैए तहिना सभ केन्डिडेट आगूक काज परचारक आधार बनौलक। मुदा एकटा गुण अछि, गुण ई जे सभ पहिल-पहिल जवाब-देहीक विचार रखि रहल छला, किनको पैछला खएल-पीअल अनुभव नहि जे केना कोटाक चाउर-गहुमक आमदनी अछि, आ केना इन्दिरा आवासमे कमीशनक जोगार। केना रोडक कमीशन होइ छै आ केना तरे-तर स्कीम गोल होइए।

सत्तासँ अलग रहल सभ केन्डिडेट, तँए सत्ताकेँ जुआ बुझि किए पाशापर बैसता। मुदा एते तँ सभकेँ बुझले रहैन जे आब जाति-धर्मपर भोँट नइ होइ छै जँ से होइतै तँ एके-जातिमे चारि-चारिटा केन्डिडेट होइत, जाति केकरा भोँट देत? तहिना धर्मोक भऽ गेल अछि एके धर्मक पँच-पँचटा उम्मीदवार भऽ गेला, तइमे किनका

नमहर धरमात्मा मानल जाए? समाज-ले तँ अखन तक कियो एकटा माछियो ने रोमलैन अछि! आन-आन गाममे केतौ साए रुपैये भौंट तँ केतौ हजार रुपैये भौंट खरीद-विकरी होइ छइ। ओना, मरलाही गाममे अखन तक खरीद-बिकरीबला हवो नै आएल छल, तँए जहिना राजनीतिक दृष्टिसँ तहिना खरीद-बिकरीक दृष्टिसँ मरलाही गाम डभियाएले रहल अछि। जाबे ओइमे ताम-कोर नइ हएत, ताबे उपजाउ केना बनत?

देशक स्वतंत्रताक समय गामक विकासक प्रति जे जन-जागरण छल ओ तँ नहि अछि मुदा एते तँ ऐछे जे नव-नव योजना गाम तकक हुअ लगल अछि, जइसँ आर्थिक समृद्धता एबे करत।

पनरह साए बीघाक रकबाबला गाम मरलाही। जहिना उपयोगी जातिक बस्ती, माने समाजक जे जरूरत-मन्द जाति जेना-बरही, नौआ इत्यादि– मरलाही गाम, तहिना चौरीसँ घराड़ी धरिक माटिक बनाबट सेहो। सातटा पोखैर अखनो गाममे ऐछे, जे माल-जाल गाममे नइ रहने आ चापाकल भेने नहाइयो-जोकर नइ रहल, तहिना पानिक उपजा नइ भेने ओहिना लिढ़ियाएल, केचिलियाएल पड़ल अछि। दर्जनो इनार जे कहियो बैशाख-जेठ मास पनिसल्लाक धरमशाला बनल रहै छल ओ आइ अपने ढहि-ढनमना गेल अछि। जे अपन उपयोगी पजेबोकेँ माटि तर गरल देखि-देखि कानि रहल अछि। माने हजारक-हजार पजेबा माटिक तर दबल अछि। ओना, आठ साए बीघाक जे चौर-चाँचर अछि ओ, ओना, भरोसगर खेत नहियेँ अछि, चपगर जमीन रहने जँ अगते गोटे नमहर बरखा आबि बाढ़ि आएल तँ भरि छाती पानि लगि जाइए, ओना किछु जिबठगर किसान चौरियोमे बोरिंग गड़ा लेलैन अछि, जे सालक छह मास जे खेत सुखैए तइमे एक-दू बेर एहेन जजातिक खेती कऽ लइ छैथ जे बारहो मासक उपज तँ नहि मुदा छह मास तँ जरूर ओइ खेतकेँ

उपजाइये लइ छैथ।

ओना, ने कोनो गाम सोल्होअना डभियाएल अछि आ ने सोल्होअना उपजाउ। थोड़-थाड़ जहिना डभियाएल अछि तहिना थोड़-बहुत उपजाउ सेहो तँ अछिए। जहिना आन गाम अछि तहिना ने मरलाही पंचायत कहियौ कि मरलाही गाम सेहो अछिए। आने गाम जकाँ मरलाहियो गामक लोक, गाममे स्कूल नइ रहने आनो गाम आ आनो ठाम जा-जा पढ़बे करै छैथ। भलेँ ओ नाम-मात्रे किए ने होइ। तहिना बर-बेमारी भेने आनो गामक डॉक्टर ऐठाम आ दरभंगो-पटनाक अस्पताल जा-जा लोक इलाज करैबते छैथ, भलेँ ओकर जेहेन परिणाम हौउ। विचारोक तँ दुनियाँ अछि। जँ कियो अपन बाल-बच्चाकेँ समुचित शिक्षा नइ दऽ पेलक वा नइ पेब रहल अछि तँए कि ओकर मनक विचार थोड़े दोखी हएत। जेकरा कपारमे विद्या लिखल रहतै, ओ कहुना-ने-कहुना भइये जेतइ, सभ काञ्चीनाथ किरणे नइ ने हएत जे घसन विद्या आ लपट जोड़सँ दुनूक उपारजन बुझत।

सात साए बीघा जमीन मरलाही गामक ओहन अछि जइमे एगारह साए परिवारक बासो अछि आ जीविका-ले खेतियो तँ अछिए। ओना, ईहो बात सेहो ऐछे जे आने गामबला जकाँ मरलाहियो गामक लोक नोकरी-चाकरी करए पंजाबसँ लऽ कऽ बंगलोर तकमे रहिते छैथ। तैसंग सरकारियो नोकरी करिते छैथ। सभकेँ अपन-अपन जिनगी छैन आ अपन-अपन विचार छैन, जे जेतए छैथ ओ ओतए खुश छैथ।

जहिना सभ गाममे सार्वजनिक काज होइए तहिना मरलाहियो गाममे होइते अछि। सालमे एकबेर दुर्गापूजा आ ब्रह्मस्थानमे नवाह-कीर्तन सेहो होइते अछि। ओना, ई दुनू काज सार्वजनिको होइए आ घरे-घर सेहो होइते अछि। तेतबे किए सालक

अनेको पाबैन आ व्रत-उपास सेहो होइते अछि। तैसंग परिवार-परिवारमे मूड़न, बिआह आ श्राद्धो नइ होइए सेहो थोड़े नइ कहल जा सकैए, सेहो तँ होइते अछि। केतबो अपनामे भोज-भात-ले बारा-बारी आकि झगड़ा-झंझट होइए, तँए कि केकरो रान्हल भात सड़ि थोड़े जाइए।

प्रश्न अछि आजुक समेनुकूल विचारक संग समेनुकूल जिनगीक। जइ खेतपर गाम ठाढ़ भेल अछि ओइ खेतक दशा-दिशा की छइ? की गामक लोककेँ उदर-पूर्ति खेतीसँ होइ छै वा आन-आन उपाय करए पड़ै छइ? मनुक्ख तँ भोजनेपर ठाढ़ अछि जे अन्नेसँ पूर्ति हएत आ अन्न औत खेतसँ। तँए दुनियाँक ऐनामे देखैक जरूरत अछि जे गामक जमीन केते उपैज सकैए आ तइले की सभ खगता अछि। जाबे से नइ हएत ताबे गामक खेतीक उन्नैत केना हएत, तहिना जाबे जिनगीक अनुकूल रहैक बेवस्था नइ हएत ताबे जिनगी चलि केना सकैए। कहैले एगारह साए परिवारक गाम छी, मुदा केते परिवारकेँ अपन घराड़ी छै आ रहै-जोकर घर..?

रोग-वियाधिक निराकरण अखनो झार-फूक आ ओझाइसँ होइए, की यएह विचार एकैसमी सदीक मनुक्खक होय? मुदा डाभियो तँ डाभी छी किने जे एक दिस जहिना खेतक जोत-कोर नइ भेने स्वत: जनैम खेतकेँ डभियार बना दइए, तहिना दोसर दिस नव-नव ढंगसँ डाभी रोपि-रोपि डभियार सेहो ने बनौल जा रहल अछि, मुदा से बुझत के? पंचायत चुनाव परसू हएत मुदा गाममे जेना तना-तनी बढ़ि गेल अछि ओ चुनाव हुअ देत कि नइ हुअ देत, ई तँ परसूक पछाइत बुझब। मुदा एते तँ गामक लोक सुनियेँ रहला अछि जे जातिक बाधक जाति छी आ धर्मक बाधक धर्म। जँ से नइ तँ मानव जाति आ मानव धर्म की भेल, ई तँ मरलाही गामक लोको ने बुझता।

दस चरणमे पंचायत चुनाव हएत। पहिल चुनावसँ दसम चुनावक दूरी, सबा मास भऽ गेल। पहिल-दोसर चरणक चुनावकेँ प्रचार करैक कमे समय भेटल। ओना, कम समय ओकरो नइ भेटल किए तँ जखन एम.पी.क ओते नमहर क्षेत्रक प्रचार-प्रसार ओतबे दिनमे सम्भव अछि, तखन पंचायत-ले कम समय नइ भेल। जेना-जेना चुनावक चरण बढ़ैत गेल तेना-तेना प्रचार-प्रसारक समय बढ़ैत गेल। मरलाही पंचायतक चुनाव दसम चरणमे हएत तँए प्रचारक समय खूब भेटल।

परसू सोम छी, चुनावमे भाग लेबा-ले माने भोँट दइले सरकारी छुट्टी भेल। आइ पाँच बजे तक प्रचारक समय अछि। पाँच बजेक पछाइत लॉड-स्पीकरक आवाज एकाएक थमि जाएत। रघुनाथ सेहो शनियेँ दिन आठ बजे रातिमे गाम आबि गेला।

गामसँ पाँच कोस हटि मोहनपुर हाइ स्कूलमे रघुनाथ शिक्षक छैथ। आठ बजे गाम पहुँचला पछाइत अपन पितियौत भाए-सुजीतकेँ सोर पाड़लैन। ओना, सुजीतोकेँ बुझल जे सभ शनिकेँ रघुनाथ भैया गाम अबै छैथ। अबिते सोर पाड़ि गामक हाल-चाल पुछिते छैथ। अबिते सुजीत रघुनाथकेँ गोड़ लगि बाजल-

"भैया, भोँट की हएत जे गाममे बड़का झंझट ठाढ़ भऽ जाएत।"

सुजीतक बात सुनि रघुनाथ तारतम करए लगला जे पंचायतिक गठन कल्याण-ले भेल अछि, तैठाम सुजीत बुझैए जे बड़का झंझट ठाढ़ हएत। ओना, सुजीत हाइये स्कूल तक पढ़ने, मुदा कौलेज तकक शिक्षा होइ आकि स्कूलक आकि नहियेँ होइ, मुदा सभकेँ तँ अपन-अपन बुधिक अनुकूल विचारो होइ छै आ देखैक अपन नजैर सेहो तँ होइते छइ। बजला- "बौआ, की झंझट ठाढ़ हएत?"

जहिना कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ल प्रश्न भेटने परीक्षा भवनमे मन खुशी होइ छै तहिना बुझले बात सुनि सुजीतक मन सेहो खुशी भेल। खुशी होइते सुजीत मने-मन विचार करए लगल जे भैयाक प्रश्न एकेटा ने छैन, मुदा हमरा तँ अनेको उत्तर बुझल अछि। मुदा अनेको बुझल बात मे ई तँ समस्या ऐछे जे अपन पसन्दक उत्तर जे रहत आ ओ जँ प्रश्नकर्ताकेँ ओते रूचिगर नइ लगैतन जेते उत्तरकर्ताकेँ लगैए, तखन।

मुदा संयोग नीक बैसल, तखने चाह नेने रघुनाथक दस बर्खक बेटी–रूकमिणी–पहुँचल। चाह देखिते हाँइ-हाँइ सुजीत अपन मनक बात-विचारकेँ समटैत अकछाइत बाजल-

“भैया, कोनो कि एकेटा कारण अछि, अहाँ तँ गाममे नइ रहै छी तँ की बुझबै, मुदा सुनैत-सुनैत हमर कान बहीर भऽ गेल अछि, तँए कहलौं।”

सुजीतक सुढियाएल मन देखि रघुनाथ बजला-

“अच्छा, गप-सप्प हेबे करत पहिने चाह पिबह।”

एक तँ ओहिना सुजीतक मन बजैले तनफनाइत तैपर भफाएल चाह देखि मनो भफाएल। बाजल-

“पहिने अहाँ पीब तखन ने हम पीब।”

सुजीतक सुविचार देखि रघुनाथक मन पघिल गेलैन। पघिल ई गेलैन जे जे विचार अखनो समाजमे जीवित अछि- माने पहिने अहाँ तखन हम- ओ मरि जाए, सेहो नीक नहि। मुदा काल्हिये भरि दिन समय अछि, एकबेर जँ सभ उम्मीदवारकेँ एकठाम बैसा एक विचारमे आनि समाजक उन्नतिक दिशा दिस बढ़ब नीक हएत। मुदा से सम्भव कहाँ अछि। जिनकेसँ भेँट करए जाएब वएह बजता जे झगड़ा करैबेर जहिना धरहरिया केकरो पकैड़ मारि खुआ दइए,

सएह ने बुझत। आब देखौआसँ चोरौआ धरि सभ अपन-अपन मैनेज करैमे लागत, तइमे जँ हम किछु केकरो कहबै तँ सएह बुझत..।

रघुनाथक मन ठमैक गेलैन। मुदा लगले भेलैन जे रोगसँ बँचैक दुनू उपाय अछि। बेमारी होइसँ पहिने संजम आ बेमारीक पछाइत नीक इलाज। तँए जेते चिन्तनीय समस्या बुझै छी, से नइ अछि। मुदा अही समाजक तँ अपनो छी किने तँए किछु दायित्व तँ बनिते अछि।

चाह पीब रघुनाथ बजला- "बौआ, गाममे तँ हमहींटा हाइ-स्कूलक शिक्षक छी, तूँ कहै छह जे गाममे झंझट ठाढ़ हएत, तैबीच हम की करी?"

सुजीत बाजल- "आब अखन किछ ने करू, मन हुअए तँ भोँट खसाएब नइ हुअए तँ नइ खसाएब, किए केकरोसँ अहूँ दुश्मनी करब।"

सुजीतक विचार सुनि रघुनाथक मन मानि गेलैन जे अखन सबहक मनक चढ़न्त बेर अछि तँए चुपे रहब नीक। बजला- "से सएह?"

सुजीत- "हँ ते और की।"



शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016

एकबोलिया दादी

असलमे एकबोलिया दादीक नाओं सुबधी देवी छिऐन से सासुरक लोक किए बुझतैन, ओना नैहरोक तँ आब दीदी-दादी भेली तँए नवतुरियो किए बुझत, तहूमे तेहेन मोबाइल भऽ गेल अछि जे घरेमे बैसल दुनियाँक बाइसकोपो आ बाइसकोपक गीतो सुनैत रहू, मुँहमे पान-पराग आकि शिखर देने झुमैत रहू आ देशक आजादीक सुख-भोग भोगैत रहू। किए तँ देश उन्नतिक शिखरपर पहुँचै-पहुँचैपर ऐछे..!

ओना, सुबधी दादीक नाओं हेराइक दोसरो कारण अछि, ओ अछि- नारी जगतकेँ नैहरसँ सासुर प्रवेश करिते 'भौजी', 'काकी' इत्यादि समाजमे आ परिवारमे 'पुतोहुजनी', 'कनियाँ' इत्यादि उपनाम जुड़ि जाइए। ओना, ई दीगर भेल जे फगुआक खुमारीमे कियो 'नवकी', तँ कियो 'नकठरकी', तँ कियो 'गुलबिया' नाओं सेहो रखिते अछि।

अस्सी बर्खसँ किछु ऊपरेक एकबोलिया दादी छैथ। उज्जर धप-धप हाथ-हाथ भरिक केश, चाकर-चौरस-नमगर-छड़गर-गोर देह, आगूमे पड़िते बुझि पड़ैत जे ठीके लोक एकबोलिया दादी नाओं रखने छैन। जिनगीक अन्तिम परावपर पहुँचलो पछाइत एकबोलिया दादीक मनमे 'झूठ नइ बाजब आ 'केकरो अधला नइ करब' ओहिना छैन जेना कण्ठी बान्हि बबाजी बनि लोक संकल्प लइए जे माछ नइ खाएब।

ओना, विशाल दुनियाँक विशाल जिनगीमे दुनू संकल्प- 'झूठ नइ बाजब' आ 'केकरो अधला नइ करबै' सेहो विशाल रूपमे अवतरित भऽ जाइए, मुदा ऐठाम से नइ, ऐठाम पारिवारिक आ सामाजिक परिवेश भरि अछि- 'झूठ नइ बाजब' आ 'केकरो अधला नइ करबै', माने आन परिवार आ आनक, पुरुख प्रधान परिवारमे नारीक लेल एहेन परिस्थितिये ने बनैए, जेकर खगता हएत। मुदा से नइ दादीक बेकतीगत परिस्थिति भिन्न छैन। भिन्न ई छैन जे छब्बीस बर्खक अवस्थामे, जखन पान-सात बर्ख सासुर बास केलैन तहिये विधवा भऽ गेली। मुदा तैबीच सन्तान तँ दूटा भेलैन मुदा बँचलैन एकटा बेटा। ओना, जँ एकोटा बेटा बँचलैन तँ बेटा छैन। जँ एहेन बेटा एकोटा हुअए तँ कोन जरूरत छै रावण जकाँ एक लाखक। आज्ञाकारी बेटाक कारण छैन एक विचार आ एक चिन्ता।

छब्बीस बर्खक अवस्थामे सुबधी दादी जखन विधवा भेली तखन आन नारीसँ भिन्न परिस्थिति जिनगीक लेल बनलैन। भिन्न ई जे पुरुख प्रधान परिवारमे एक-दोसर परिवारक जे सम्बन्ध बनैए ओ पुरुखक अनुकूल बनैए मुदा नारीक प्रधानता भेने पुरुख परिवार आ नारी परिवारक बीच किछु अन्तर भइये जाइए। जखन परिवारक भार छब्बीस बर्खक अवस्थामे दादीक ऊपर एलैन तखन पति तँ बिसरा गेलैन मुदा पिता मन रहलैन। ओना, साल भरि पहिनहि पितोक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। मुदा बच्चामे सिखौल-पढ़ौल विचारो आ काजो मनमे नचलैन। मनमे नचिते दादीक पेटक पट खुजलैन-

"झूठ नइ बाजी आ केकरो अधला नइ करिऐ!"

दादीक मुहसँ निकैलते मन माता-पितापर पहुँचलैन। देखार रूपमे पिताक क्रिया-कलाप जरूर छेलैन, जिनगीक जे क्रिया-कर्म रहैन तइमे झूठ बजैक केतौ जगहे ने छेलैन जे झूठ बजैक आ केकरो अधला करैक प्रयोजनो होइतैन। समटल हाथक जिनगी, समटल

विचारक धारमे बहैत रहैन। माए तँ सहजे आँगन-घरमे रहैवाली, आन परिवारक लेन-देनमे पति बीचमे छेलैन।

ओना, बेकतीक समूह परिवार आ परिवारक समूह समाज छी, तँए एक-दोसरमे सभ जुड़ले अछि। मुदा ओही जुड़ावमे बेकतीक विचारो आ काजोक जुड़ाव ऐछे आ ओइ जुड़ावक जे क्रिया अछि तइमे विचार विचरित होइत रहैए। ओना, दुनूक बीच माने क्रिया आ विचारक बीच अन्योनाश्रय सम्बन्ध अछि, जे दुनूक बीच चलैत रहैए। माने ई जे विचारक अनुकूल लोक अपन जिनगीक क्रिया बनबैए आ क्रियाक अनुकूल विचारो बनै छइ। ओना, क्रियाक रूप सेहो विराट अछि, आ विचारोक तहिना अछि। मुदा विराट दुनियाँमे मनुक्ख एक अणु सदृश अछि। माने ई जे जइ दुनियाँमे करोड़ो-अरबो लोक अछि, अरबो-खरबो जीव-जन्तु अछि, जइमे देहधारी रहितो चलन्त अचलन्त सेहो अछिए। खाएर जे अछि, बुधिधारी तँ कनी-मनी ऐछो मुदा विवेकधारी तँ नहियेँ अछि। तँए विवेकधारी होइक कारणेँ मनुक्खेकेँ ने विचार करए पड़त जे बर्खाक एक बून पानि केना दोसर-तेसर पानिक बूनक संग सटैत-मिलैत छोट-छीन धाराक धार धारण करैत, विशाल धार बनैत अपन धाराक धारे-धार विशाल समुद्रमे समाहित भऽ शान्तसँ रहैत, हँसबो करैए आ उफैन-उफैन सिरजनो करैए! माने पानिसँ हवा बनि वादल सिरैज, बरखा बनि पुन: बून-बून धरतीकेँ सिंचैत अपन रस्ता पकैड़ पुन: समुद्रमे समाहित होइत अपन चक्रवत जिनगीमे चलैत रहैए, तहिना ने मनुक्खोक जिनगी अछि।

मनुक्खक जिनगी भेल जे अपन जिनगीकेँ जीवित राखि अपन विवेकपूर्ण विचारकेँ सेहो जीवित राखि चली। ई दीगर भेल जे असंख्य मनक असंख्य विचार सेहो उत्पति होइते अछि। जे देश-कोस, हवा-पानिक अनुकूल होइए। मुदा से नइ, कोनो परिस्थिति

किए ने हौउ, ओइ बीच दू-रंगक विचारो आ काजो चलैए। एक मनक विचार होइए जे जखन एते शक्तिशाली मनुक्ख बनि जन्म नेने छी तखन दोसरक ऊपर अपन जिनगीक भार लादि दिऐ, से कहाँ धरि नीक हएत। आ दोसर अछि ओ मनुक्ख जे सुविधा-भोगी आकि आलसी आकि कोढ़ि अछि, जे आनक जिनगी काटि-बाँटि अपन जिनगी बनबैए।

सम्पन्न परिवारमे सुबधी दादीक जन्म भेल छेलैन। ओना, सम्पन्नताक कोनो सीमा नइ अछि, किए तँ एके समाजमे भीख-मंगासँ लऽ कऽ हवाइ जहाजक सवारीसँ चलनिहार सेहो ऐछे, तँए समाज सम्पन्न अछि से केते दूर धरि कहल जाए। से नइ, दस बीघा जमीनबला किसान परिवारमे सुबधी दादीक जन्म भेलैन। पिताक जे परिवार रहैन ओ दियादवाद लगा बीस घरक टोलमे। बीसो परिवारकेँ अपन-अपन खेती बाड़ीक जीविका रहैन।

भरि दिन सभ अपन-अपन घर-परिवारसँ लऽ कऽ पेट पूजाक पाछू बितबै छला। मुदा किरिण डुबिते सभ अपन-अपन पारिवारिक क्रिया-कलाप उसारि एकठाम सम्मिलित होइ छला। चाकर-चौरस दरबज्जा, एकठाम होइते पहिने सभ अपन-अपन दिन भरिक क्रिया-कलाप आ नीक-बेजाइक गप-सप्प करै छला, पछाइत साहित्य-संगीतमे लगि जाइ छला, जे खाइ-बेर तक, माने रौतुका भोजन तक सभ अपन-अपन साजो बजबै छला आ आवाजो मिलबैत संगो-संग आ फुटो-फूट गीतो गबै छला।

सुबधी दादीक पिता मनोरथ दास जेहने कृषि कार्यमे ऊहिगर, तेहने साज सजबै-बजबैमे सूढ़िगर सेहो आ तेहने गेबोमे गतिगर। जिनगी की आ जिनगीक सच्चाइ की, ओ मनोरथ दासक जिनगीक क्रियामे झलकै छेलैन, जे अपनो बुझै छला आ आनो देखै छेलैन। अपनो कामना रहैन जे जे माता-पिता ऐ धरतीपर अनलैन वएह ने

मतिसँ प्रीति करैक जन्म सेहो देलैन। जाबे मतिमे प्रीति नइ हएत ताबे दुनियासँ प्रीति केना हएत? यएह विचार मनोरथ दास अपनो निमाहै छला आ समांगक संग दरबज्जापर नाचि-नाचि गेबो करै छला- “झूठ बजने जिनगी झूठा बनि जाइए तँए झूठ नइ बाजी। तहिना आनक एक अनुचित केने हजारो-लाखो अधलामे बदैल जाइए, माने जहिना अहाँ केकरो अधला केलिऐ, तहिना आनो करत। जे करोड़ो-अरबोमे पसरल अछि। तँए केकरो अधला केने अपनो अधला हेबे करत।”

जहिना बच्चेमे हनुमान सूर्यकेँ भक्षि लेलैन तहिना सुबधी दादीक पाँच बर्खक बाल-मन पिताक विचारकेँ भक्षण कऽ नेने छेलैन। जे पतिक मृत्युक पछाइत जगलैन।

मोन पड़लैन पिताक ओ विचार जे जे हरिदम बजैत-करैत रहै छेलखिन- ‘जिनगी जँ व्रतधारी नइ भेल तँ ओ जिनगी विचारधारी केना बनि सकैए आ जँ विचारधारी नइ बनि सकल तँ ओ मरुधारी भेल किने, ऐठाम तँ मरुधारीक संग जीनधारियो अछि। आ जँ मरुधारी धारकेँ बालुधारी नइ कहि जनधारी कहबै, तखन ओकरा पीलासँ आकि ओइमे नहेलासँ तृष्णा आकि सुफला जे भेटैत ओ केहेन भेटत?’

ओना, सुबधी दादीक दिशा-दशा देखेनिहार पति आ पिताक सेहो मृत्यु भइये गेल रहैन। मात्र एकटा तीन बर्खक बेटाक संग अपन जिनगीकेँ अपन मनोकुल बना चलैक छेलैन। ओना, पिता आ परिजनोक बीच सुबधी दादीक मन ओही दिन व्रतधारी बनि गेलैन जइ दिन मन मानि एक मन दोसरसँ पुछलकैन- “की भाय, पिता वचन छी जे पलै-पोसैक आ फुलैत-फलैतक छी।”

जहिना समुद्र आकि धार आकि पोखरिक एक समान पानिमे दू या तीन गोरे जँ एकठाम भऽ अपन अनुभवक विचार करता, तँ

एके रंग ने संवेदित होइत कथा-कथनी करता, तहिना दोसर मन टपैक सुबधी दादीकेँ कहलकैन-

“भाय, गाछ अपन फलकेँ केते काल अपना संग रखैए, ओतबे काल ने जेते काल ओ पकै नइए, मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे मोजर वा फूलसँ लऽ कऽ पकै तक संग नइ छल। जखने पकैए से चाहे आम हौउ आकि कटहर, लताम हौउ कि बड़हर खसबे करैए। मुदा तँए ओ अपन फलित-फुलित परिवार आकि परिजनकेँ थोड़े बिसैर जाइए?”

दुनू मनक विचारक बीच सुबधी दादी छब्बीस बर्खक अवस्थामे अपन जिनगीक मोटरी बान्हि अपना माथपर लऽ लेलैन।

ओना, सुबधी दादीक पिता सिर्फ संगीते-कलामे निपुण नइ छला, सामाजिक परिवेशकेँ सेहो अपना नजरिये देखै छला। देखै छला, जे जेकरा हम सभ स्वर्ण-युग वा स्वर्णकाल वा सत्-जुग कहै छी, की ओ समय पशुवत जिनगीक करीब नइ छल? मुदा से सभ नइ, सुबधी दादी नाम-गाम लिखनाइक संग अपन रचित-बसित विचारकेँ सेहो कहुना-कहुना लिखब सीख नेने छेली।

सुबधी दादीकेँ मोन पड़लैन जे दस बीघा खेत उपजा पिता पनरह गोरेक परिवारक भरण-पोषण करै छला, तैठाम अपना पाँच बीघा खेत अछि, जेकर सृजनकर्ता तँ अपने भेलौं, जे उपजाबी, जेते उपजाबी सभ अपने हएत। तैबीच मात्र एक बच्चाक संग अपने भेलौं।

पतिक मृत्युक पछाइते सुबधी दादीक मनमे बिसवास जगि गेलैन जे गाम-समाजमे जहिना लोक जीबैए तहिना हमहूँ जीब लेब। किछु दिनक पछाइत बेटाकेँ स्कूलमे नाओं लिखाएब। जेते अपने बुझै छी तेते पढ़ाइयो देबइ। जखन अपन आँखि-पाँखि हेतै दुनियाँकेँ

चीन्ह-परेख अपन जीबैक बसोबास बना लेत। अही व्रतक संग सुबधी दादी अपन जिनगी शुरू केलैन।

मुदा जिनगियो आ जिनगीक क्रिया सेहो एक रहितो एक रंग नहि रहि बेदरंग, भटरंग, कटरंग आदि बनियेँ जाइए। देखै छी जे खेतमे हर जोति ओकर सृजन शक्तिकेँ जगौल जाइए, तैठाम जरूरी अछि तँ ऐछे जे जमीनक ऊपरक जे परत छै ओकरा तैयार करब। मुदा ओ तँ सिरौरे-सिरौर जखन सघन रूपमे हर चलौल जाएत तखने हएत। तैठाम जँ हरक लागैन पकैड़ एक-एक हाथपर डाँरि खींच-खींच गबैत रहब जे ‘बाभनक खेतक हरबाहि आ रारक माए-बापक श्राद्ध भगवाने भरोसे होइए’ तइसँ काज चलत? काज चलत तखन जखन गाम-समाजक एक-एक क्रिया-कलापकेँ सोझड़बैत चलब। जँ से नइ तखन तँ ‘गरीबी दूर करब’ जहिना बजै तँ सभ छी मुदा गरीबी मेटाइए आकि मोटाइए सेहो तँ सबहक सोझहेमे अछि..!

अस्सी बर्खसँ ऊपरक आइ सुबधी दादी भऽ गेली मुदा जिनगी जीबैक आ जिनगीक विचार करैक अपन जे ढंग पिताक वचनकेँ पति मृत्युक पछाइत धेलैन ओ अखनो धेनहि छैथ। कहब असान अछि जे जखन बच्चा तीन-चारि सालक भऽ जाए ओकरा स्कूल पठा नीक शिक्षा दिऐ आ नीक इनसान बना धरतीपर ठाढ़ करी, जइसँ समाज उन्नैतशील हएत, मुदा समाजक एक सम्पन्न परिवार माने माता-पिता परिजन, आर्थिक दृष्टिये सेहो सम्पन्न छैथ आ दोसर दिस सुबधी दादी सन मसोमात सेहो एक बेटाक संग समाजमे छैथ, ओ कहाँ धरि अपन बेटाकेँ नीक स्कूलमे नीक शिक्षा दिया पौती जइसँ एकटा नीक इनसान ठाढ़ हएत? तहूमे जैठाम नीक शिक्षा नीक प्राइवेट संस्थामे भेट रहल अछि जइले नीक खर्चक खगता छै, ओ केते लोक पुरा पौत तहूमे सुबधी दादी सन परिवारक संतानकेँ? जखन कि समाजमे विधवाक वहिष्कृत ई मानि कएल जाइए जे जँ

विधवाक मुँह देखि यात्रा करब तँ अधला होएत! केहेन बेवहार ओइ वेचारी मसोमातक संग होइत आबि रहल अछि ई देखैले सभकेँ अपन-अपन समाज अछि। मनुक्ख समाजमे जन्म लइए, बढ़ैत-फलैत-फुलैत जिनगी अन्त करैए, तैठाम तँ विचारणीय प्रश्न अछिए।

शिक्षाक नाओंपर सरकारी विद्यालय अछि, मुदा कोन रूपमे विद्यालय ठाढ़ अछि, ओइपर नजैर देने बिना समाज एको डेग आगू केना बढ़ि सकैए। कम-सँ-कम इनसान केकरा कहबै आ प्रतिवर्ष केते नीक इनसान बनि रहल अछि, सेहो तँ विचारणीय प्रश्न अछिए। धरतीमे अन-फल-फूलक खेती आ राड़ी-डवहारी रोपि जँ धरतीकेँ परती बना मरूभूमि बनाएब ई कहाँ धरि उचित अछि?

सुबधी दादीक साठि बर्खक बेटा अखनो ई मानि चलैए जे माए खाली जनमदते नइ पलित-पोषित सेहो करैत एली अछि, ओना जहिना एकाएक आ दसे-एगारह एके रंग सभ सीखबो करैए आ पढ़बो करैए तहिना बेटा अखनो माइयक काजकेँ माने गाममे जे कोनो समस्या अबैत ओकरा अपना ढंगे दादी जेना समाधान करै छेली जे एक रस्ताक विचार सुबधी दादीक छेलैन, ओही रस्तासँ चलनिहार बेटा छेलैन। तँए विचारक क्षेत्र माइयक बुझि सुबधीए दादीपर थोपने छैन।

ओना, सुबधी दादीकेँ गामो आ आनो गामक लोक एक-बोलिया बुझि 'एकबोलिया दादी' सेहो कहै छैन। एकबोलिया तँ एकबोलिया छी जे सौंसे दुनियाँमे खेलाइए, जे जेना पकड़ब से पकैड़ अंगेज लिअ। एकबोलिया भेल जिनगीक बाट पकैड़ चलैत बाजब। जखन समाजमे जन्म नेने छी तखने ने समाज सबहक सझिया भेल। सभ कि उपटौए नइ ने छी, उपटाउ भेल जे आन गामसँ आबि बसब। मुदा जखन सभ एक गाममे बसल छी तखन सबहक बास

केना बनल रहत ईहो तँ मूल प्रश्न अछिए। रहल जे एकबोलिया ओहो भेल, जे नेपाली बहादुर जकाँ कन्हापर बन्दूक रखि चौकीदारी करैत रहत। मुदा नीक की आ बेजाए की, तेते ओकरा विवेक छैहे नइ तखन ओहन ‘एकबोलिया’क फल केहेन हएत?

गाममे एकटा घटना भेल। ओना, गामक पनचैती मरदा-मरदी होइए तँए सुबधी दादी दसनामा पनचैतीमे तँ नइ जाइ छैथ मुदा अपन मनक विचारकेँ दाबियो कऽ नहियेँ रखै छैथ। जहिना समाज छी तहिना ने अपन विचार अपन काज देखबैक जगह सेहो छी। घटना भेल बारह-बर्खक लड़की एगारह बर्खक लड़काक संग गामसँ पड़ा गेल। दुनू एके स्कूलमे पढ़ैत। गुण रहल जे दुनू एके धर्मक माने हिन्दू धर्मक अछि, मुदा अछि दू जातिक। जँ दू धर्मक रहैत तखन तँ दुनियाँक बमबाजी होइत, मुदा से रच्छ रहल जे दुनू एके धर्मक रहल।

मुदा रच्छ की रहल जे दुनू जातिक बीच तेना तना-तनी बढल, जे मोंछक भिड़ानी भेल। मोंछ केहेन अछि से अपन गौंआँ बुझत मुदा एते तँ ऐछे जे केतौ मोंछ करियाएल हरियाएल कहबैए तँ केतौ खिचड़ी कहबैए तँ केतौ सोलहन्नी पाकल तँ केतौ सोलहन्नी सफाचट।

गामक धटनासँ जेना सौंसे गौंआँ दलमलित छल, दलमलित ई जे केतौ मारि होइए तँ कोनो-ने-कोनो रूपमे गौओं प्रभावित होइते अछि। मुदा सुबधी दादीकेँ कोनो दलमली ने अपने छैन आ ने बेटे-पुतोहुकेँ। ओना, पुतोहुक मन खसलैन जरूर। खसबो केना ने करितैन, गाममे तेहेन मारिक सूमा अछि जे केतेकेँ चुड़ी फुटत, सिनूर धुआएत! तँए एक नारी होइक नाते कनियोँ मनमे बेथा नै होनि सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। खसल मन देखि पुतोहुकेँ सुबधी दादी कहलखिन- “कनियाँ, ओना नारीक हृदय अहाँक अछि, मुदा से

अछि अनाड़ीक। जखन पतिक गृह पत्नी घरवास-ले विदा होइ छैथ तखन हुनका पीठ ठोकि असीरवाद देले जाइए जे नारी बनि पुरुखपना हाँसिल करब, आकि सोझे आँखि झाड़ए लगै छी जे बेटी कष्टमे जाइए।”

सासुक बात सुनि पुतोहुक मन कनी खनखनेलैन। बजली-

“गाममे की हएत?”

पुतोहुक बातकेँ सुबधी दादी ऊपरे लोकि बजली-

“आब ओ जुग-जमाना रहल जे पतिक संग पत्नियोँ आगिमे जरै छेली। बदलैत परिवेशमे केना एहेन-एहेन समास्याक समाधान हएत ई तँ समाजेक दायित्व ने भेल।”



शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016

मरियाएल मन

जिनगीक एक टपान टपि बीस बर्खक बिसवास राय दोसर जिनगी शुरू करैसँ पहिने अपन बाट बटियबैक विचार करए असगरे अपन कोठरीमे बैसला। मनमे उठलैन डॉक्टरक डिग्री लऽ दुनियाँक बीच ठाढ़ भेल छी...।

मुदा लगले बिसवास रायक विचार जेना धूल-कणसँ झँपाए लगलैन तहिना आगू किछु सुझबे ने करैन। दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि साफ आँखिसँ आगू देखैक कोशिश केलैन मुदा मीड़ला पछाइत धूल-कण रहित आँखि किछु देखि नइ पेब रहल छलैन। एकाएक बिसवास रायक विकृत-मनमे उठलैन एना मन मरिया किए रहल अछि?

एम.बी.बी.एस. ग्रेजुएट राय एक सक्षम डॉक्टर, जे पढ़ल-बिनु-पढ़ल, बुझल-बिनु-बुझल रोगक इलाज करैक क्षमता अपने-आपमे रखैत। एकाएक बिसवास रायक मन अपन पुरवर्ती विचार आ विचारवानक विचारपर हुमरलैन। हुमैरते मन चकभौर लिअ लगलैन। चकभौर लैते जेना फेर मन मरियाए लगलैन..! बिसवासक मनमे पुन: उठलैन- एना किए बेर-बेर मन मरिया रहल अछि? मुदा डॉक्टरी-नजैरसँ चीतक चिन्ताक चिन्तन करैक प्रक्रिया विद्यार्थी जीवनमे पनैपिये गेल छेलैन, माने कोनो काजो आ आनो विषयक बात सोचै-विचारैक दिशा-बोधक कोंपर मनमे पोनैगिये गेल छेलैन, मुदा तेतबेसँ काज चलैए। मानि लिअ अहाँ अल्लू उखाड़ब, काज

बड़ भारी नइ, खुरपी नेने जाएब गाछे-गाछ पतिआनी लगल ऐछे, एक भागसँ पतिआनीमे हाथ लगा गाछे-गाछ उखाड़ैत जाएब, जड़िमे फड़ छै ओकरा तोड़ि-तोड़ि पथियामे रखैत जाएब, यएह भेल अल्लू उखाड़ब। मुदा से असान अछि? जाबे अहाँ अल्लू-खेतीक लूरि आ अल्लूक उपयोगी महत आ अल्लूक जिनगी नइ बुझि लेब ताबे केना हएत? हँ, एते सम्भव अछि जे अल्लूक जिनगी आ ओकर उपयोग बुझिऐ वा नइ बुझिऐ मुदा अपन जेठ-जनसँ रोपै-उखाड़ैक लूरि देखा-देखी सीखि नेने होइ। मुदा प्रश्न एतबेसँ तँ नइ फड़िआइए। ऐ संग ईहो तँ ऐछे जे अल्लूक जनम केना होइ छै, ओ वृद्धि करैत अपन चरम कोटिक अवस्थामे पहुँच अहाँकेँ सुस्वादु भोजनक संग सुपाच्य सुपोषण केना करैए? जाबे कोनो वस्तु आकि विचाराकेँ जड़िसँ छीप धरि नइ बुझि लेब, ताबे तँ यएह ने हएत जे कोनो वस्तुक इमारतक नीब नीक हएत तँ छज्जी अधला भऽ जाएत आ कोनोक छज्जी नीक हएत तँ नीब अधला हएत। तेतबे किए, ई तँ भेल अल्लूक जिनगी मुदा ऐ संग ईहो ने अछि जे केहेन खेतमे अल्लू उपजत आ केहेन हवा-पानि-रौद ओकरा चाहिऐ। जँ से नइ बुझल रहत तखन चौरी खेतमे अल्लू रोपैक विचार मनमे नइ औत? एबे करत! किए तँ अल्लू खेतेमे उपजैए आ चौरियो खेत छीहे..।

बिसवास रायकेँ ने धुरियाएल दुनियाँमे किछ देखि पड़ैन आ ने आगू तक किछु सोचिये पाबि रहल छला।

..देखियो केना पबितैथ बिसवास राय, अखन तक एकचलिया जिनगी जे रहलैन! एकचलिया भेल बच्चासँ एम.बी.बी.एस. तकक पढ़ाइ, खेनाइ-पीनाइ आ रहैक बेवस्था माता-पिताक आ अपन जिनगी खाली पढ़ैक। रहबो केना ने करैत, चाहे बाल-वर्ग हुअ आकि मध्य-वर्ग आकि उच्च-वर्ग, साले-साले जे श्रेणी ऊपर चढ़ैत जाइए ओइमे की ई विचार नइ अछि जे साल भरिमे अहाँकेँ केते भार देल

जाए! आकि ओइमे ई अछि जे सालक एगारह मास सिनेमा देखू, खेल देखू आ एक मास दिन-राति एकबट्ट कऽ पढ़ि लिअ आ परीक्षा पास कऽ जाउ? जँ किसान सालमे एक मास जगि खेती पाछू दिन-राति बेहाले भऽ जेता तँ की ओ सालो भरिक खेती पुरा लेता आकि ओकर उपज घर लऽ अनता? मुदा अनका जे हौउ, बिसवास राय बच्चेसँ अपन नियमित जिनगी बना आबि रहल छल, जेकरे फल रहल जे नीक विद्यार्थीक श्रेणीमे स्कूल-सँ-कौलेज धरि रहला। मुदा पढ़ैमे नीक रहितो दुनियाँकेँ नीक बना जीब लेब, बाल-बोधक धूरा-माटिक खेल छी? अपना मने जे जेतेक दुनियाँ बुझौथ मुदा ओ अछि तँ एकेटा, चाहे जेहेन हुअए, तहीमे ने सभ छीहो आ रहबोक अछि...। बिसवास रायक मनमे प्रश्न उठैन तँ जरूर मुदा कड़ौआ लगल केराक गाछ जकाँ अपने खसि पड़ैत।

बेर-बेर बिसवास रायक मन उठैत आ खसैत रहैन। उठैक कारण रहैन एक पढ़ल-लिखल स्नातक धरिक जिनगीकेँ उठाएब आ खसैक कारण भऽ जाइन जे आगूक समतल-समरस बाट देखिये ने पड़ैन!

उभर-खाभर रस्तामे जहिना जानक संग-संग डेगो बँचा-बँचा उठबए पड़ैत तहिना जखन कोनो बात बिसवास रायक मनमे अबैन तँ ओकरा विचारि कऽ विचार बनबए चाहैथ, मुदा बाटमे 'काका'केँ 'पित्ती' शब्दक प्रयोग भेने विचारक काज गड़बड़ाए लगैन। जखने जिनगीक काज गड़बड़ाएत तखने विचारक केहनो घड़ी-घण्टा सिंह-दरबाजापर लटका डोलाएब तइसँ किछ सीझत-पाकत थोड़े। सीझै-पकैले तँ काजुल मनुक्ख बनि रमौ-श्रेणीक विचार मनमे आनि भगवान जकाँ ब्रह्मचर्य आश्रममे शिवजीक देल जनकजीक धनुषकेँ तोड़ैक शक्ति राम सन ब्रह्मचारी ताकए पड़ैत। ई तँ नइ जे छी नाटककार आकि व्याकरणाचार्य मुदा पाठे अशुद्ध अछि!

केम्हरो बिसवास राय आँखि उठा तकैथ तँ कृष्णक दुर्वासा ॠषिसँ भेँटे ने होइन। भेँटो हएब असान अछि जँ से रहैत तखन ई तँ सभ बुझै छिऐ जे नशा-पान अधला छी, मुदा ओइ अधलामे की नीक अछि जे लोक जहल जाइले तैयार अछि, मारि खाइले तैयार अछि मुदा ओकर मन कोन पहाड़क तर पड़ि गेल छै जे निकैल कऽ ओकरा अधला बुझि थूक फेक देत? से किए ने भऽ पबैए? जिनगीक कोनो काज होइ ओ विचारक रस्ते प्रवेश करैए, मुदा विचारोक तँ चौबट्टी छै जेतए रंग-रंगक बाट एकठाम होइए, तैठामसँ जिनगीक टपान अछि..। ओही टपानक बीच बिसवास राय वौआ रहला अछि।

जहिना आनो-आन वृत्तिसँ जुड़ल आ शिक्षो-वृत्तिसँ जुड़ल किए ने हुअए मुदा बीस-बर्खक उमेरोक तँ अपन धाही छइहे। जखने ओ धाही जागत कि भर्लैं पहाड़क ऊपरके भागपर किए ने भिनसुरका रौद जकाँ पसरौ मुदा छी तँ धाहीए। जिनगीक बोनमे वौआइत बिसवास रायक मनमे संगीक जरूरत बुझि पड़लैन, संग पूरनिहारक खगता सभकेँ होइ छइ। चाहे ओ विचारक क्षेत्र हुअए आकि काजक। जखने दू विचारक मिलान हएत तखने दूटा काजोक हएत। पत्नी दिस बिसवास रायक मन भागिते जहिना सासुरसँ नैहर भागल जाइत कनियाँ जकाँ आगूसँ अनगौंआँ आ पाछूसँ गौंआँ रबारैत तहिना भेलैन। भेलैन ई जे भाय, हम तँ एम.बी.बी.एस. डॉक्टर छी, देहक रोगक इलाज करैबला, मुदा जे मनरोगी हएत ओकर इलाज हमरा बुते पुरौल हएत? देखै छी जे इन्जीनियर साहैबकेँ पत्नी छैन, दुनूमे सदिकाल झगड़े होइ छैन। झगड़ो केना ने हएत जखन इन्जीनियर साहैबक मन इन्जिनक पार्ट-पुर्जा खोलैत रहै छैन तखन पत्नी पंचम स्वरमे घुनघुनाए लगै छैन। कहू, ई अहींकेँ नीक लागत? एहेन संगी लऽ कऽ लोक की करत जे विचारी नइ बनि

विचारोक समयमे राक्षस जकाँ नाच करत..!

बिसवास रायक मन फेर चकभौर लेलकैन। चकभौर ई जे अनेरे जे पत्नी पाछू मनकेँ वौआबै छी ओ बेकार। जखन बिआह नइ भेल अछि तखन अनेरे ने संगी बुझै छी। अखन ओ थोड़े विचारी बनि आगूमे विचार देती। तहूमे जखन अपने डॉक्टर छी, डॉक्टरी नजैरसँ दुनियाँ देखै छी, तैठाम जँ ओ सुच्चा किसान परिवारसँ आबि जाएत, तखन तँ दू जिनगीक बीचक ने बात भऽ जाएत। मुदा तही काल विचारणी आबि बिसवास रायकेँ पुछलकैन-

“बौआ, चाहो-ताहो पीबैक मन होइ छह?”

केना ने माए खोज-पुछाड़ि करैन, जे बच्चाकेँ छाती लगा अहार दऽ जीवन दैत ओ बेर-कुबेरक विचार नइ करती।

विचारक दुनियाँमे वौआइत बिसवास रायक मनकेँ जेना अमृत पानक अमृत विचार बुझि पड़लैन। चाह सुनि हलैस बिसवास राय माएकेँ कहलखिन-

“माए, ओना जँ चाह पीआ देमे तँ आरो मन हल्लुक हएत, मुदा किछु विचार पुछैक अछि।”

बेटाक बात सुनि विचारणीक मन विचारमे विचरण करए लगलैन। बिच्चेमे विचड़ैत बजली- “बौआ, अखन तोरा कथीक भार पड़लह जे विचार पुछबह?”

कहि उत्तरक आशा छोड़ैत विचारणी चाह बनबए गेली। बिसवास रायक मनमे जेना बिसवास जगलैन। बिसवासो केना ने जगैत, जैठाम माता-पिता अपन परिवारक परवरिस केनिहार छैथ, तैठाम बेटा-बेटीक ऊपर एहेन भारे किए पड़त जे विचारैक खगता हेतइ। बड़-बेसी जँ हेबो करतै तँ बुझैक

खगता हेतइ। माता सिरिफ देहेक जनमदात्री नै छैथ, ओ बुधि

आ विवेकक सेहो जनमदात्री छैथ। तैसंग एक जिनगीक ओहन बटोही सेहो छैथ जे चालीस-पैंतालीस बर्खसँ दुनियाँक संग जीबैत आएल छैथ।

दू गिलासमे चाह नेने विचारणी बेटा लग पहुँच दहिना हाथक चाह बिसवासकेँ पकड़ा अपने वामा हाथक गिलास दहिना हाथमे लैत बेटा आगूमे, चौकीपर बैस पिबए लगली। चाहो पीबैत आ आँखि उठा-उठा ईहो देखैत जे बेटा की पुछए चाहैए। मुदा माइक आगू जेना बिसवास रायक मन डोलए लगलैन। जे माए बुझि गेली। मुदा अपनो आगूमे एकटा नमहर प्रश्न तँ आबिये गेलैन। प्रश्न ई जे अखन हम पढ़ल-लिखल बेटाक माए छी, तैठाम बेटा-धर्म केना निमाहब? ओ डॉक्टर छी, दुनियाँ देखै-सुनै आ बुझैक ओकर अपन खाढ़ी छै, हमर दोसर खाढ़ी अछि, तखन दुनूक समावेश केना हएत?

मुदा लगले विचारणीक मनमे उठलैन, भलेँ बेटाक जिनगीक रूप विचारानुकूल बदलत, मुदा ऐठाम एक जिनगीक टपान आ दोसरमे प्रवेश करैक बीचक ने अछि, जैठाम खाधियो भऽ सकै छै, समतलो भऽ सकै छै आ ऊपरो-निच्चाँ भऽ सकै छै, तैठाम तँ विचारणीय प्रश्न अछिए। विचारणीय प्रश्नकेँ मनमे अबिते विचारणीक विचार बिसवासक मनकेँ लपैक कऽ पकड़ैत बाजल-

“बौआ, एते दिन तोहर सेवा हम केलियह, आब तोहर बेर औतह। मुदा जे जिनगी जीबैत एलौं, ओइमे स्थायित्त्व केना बनल रहत से विचार पहिने विचारए पड़तह।”

माइक विचार सुनि बिसवास रायक मन आरो मरिया गेल...।

बेटाक मरियाइत मन देखि विचारणी बजली-

“बौआ, जिनगी ओहन खेलक गेन छी जे पृथ्वी जकाँ गोल

होइए जेकरा ओही गोलीमे गोल करैक अछि।”

जहिना कोनो पोखैर आकि धार-धूर आकि सागर-गंगा सागर किए ने होइ मुदा जँ पएर रोपैक जगह भेट जाइ छै तँ की ओकर मन थोड़े कबुल कऽ लेत जे डुबि जाएब। ओना, एहेन विचार बिसवास रायक मनमे सेहो उठलैन मुदा प्रश्न अछि पोखैर हौउ कि धार आकि सागर, माटिपर सँ डेग उठा पानिमे राखब! अखन तँ अनेको बाटबला दुनियाँमे ने अछि। अहीमे ने सभ किछु फुटो-फुट अछि आ संगो-संग तँ अछिए। अही बीच ने संगियोँ भेटै छइ। चाहे ओ जेहेन हुअए...।

एकाएक बिसवास रायक मन ठमकलैन। ठमकल मनमे उठलैन, अखन माइक सोझमे बैसल छी, तँए जँ कोनो बात-विचारकेँ मनेमे रखि लेब, ओ चोरियो भऽ सकैए। ओना, ई जरूरी नइ अछि मुदा कहियो काल नइ होइ छै सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...।

बिसवास राय बजला-

“माए, पढ़ाइ-लिखाइ तँ समाप्त भऽ गेल मुदा आब..?”

जहिना बच्चाक पिआसल मन माए ओकर मुँहक रोहानी देखि बुझि ओकरा आगूमे या तँ पानि या अपन छाती लगा दइ छैथ, तहिना विचारणी लगबैत बजली-

“बौआ, तूँ कहुना भेलह तँ पढ़ल-लिखल डॉक्टर भेलह, हम सभ दिन अँगना-घरक काज सम्हारैत दुआर-दरबज्जा होइत खेती-पथारी सम्हारलौं, से तँ तोहर ऐगला जिनगी नइ हेतह, जहिना तोरा मनमे अग-दिगी छह तहिना ने हमरो मनमे अछि!”

माइक विचार सुनि बिसवास रायक बिसवास जगल मन फुलाए लगलैन। बजला-

“माए, अपन विषय जकाँ खाली किताबेटा नइ पढ़लौं, काज

करैक लूरि, रोगक इलाज करैक ढंग सीखने छी।"

बेटाक बिसवास भरल बात सुनि विचारणीक मन मोम जकाँ पीघलए लगलैन। बजली-

"बौआ, सबहक अपन-अपन जिनगी होइ छै, जहिना हमरो अछि तहिना तोरो हेतह जे अपना-अपना ढंगे लोक करैए। मुदा..?"

बिसवास राय बजला-

"मुदा की?"

विचारणी बजली-

"बौआ, तोहर जिनगी की रहलह से तोरा छोड़ि आन थोड़े बुझत, माए होइक नाते जे भार छल से निमाहलिअ। आब तूँ जवान भेलह, बिआह-दान हेतह, कुटुम-परिवार समाज बढ़तह। तैबीच अपनो केना बढ़ैत चलबह, ओ तँ अपने ने विचारबहक।"

माइक बात सुनि बेटाक मन बोझिल नइ भेल। मनमे उठलै, एक भेल- 'ओझिल' आ दोसर भेल- 'बोझिल' आ तेसर भेल- 'सोझिल', मुदा..?

बिसवास रायक मन जेना फेर ठमैक गेल। होइतो अहिना छै जे अन्हार समय हुअए आकि अनभुआर रस्ता, बेर-बेर लोक ओतए ठमकबे करैए। बेटाक ठमकैत मनकेँ बुझि माए मुस्की भरैत बजली-

"बौआ, अपने ठेकानि कऽ अपने परेखबह किने?"

माइक बातकेँ बिसवास राय विचारए लगला जे जे अनठेकान अछि, बेठेकान अछि तेकरा तँ जाबे अपने अपनाकेँ नइ ठेकानि ठेकानब ताबे ठेकान केना पएब..?

बिसवास रायक मन फेर ठमकलैन। मुदा जहिना किसान खेतमे ठमकल जजात देखि मने-मन ठेकनबए लगैत जे कथीक

अभावे ठमकल अछि। ओकरा ठेकानि कऽ जहिना परिवेश बढ़बैक कोशिश करैत तहिना बिसवास राय मने-मन ठेकनबए लगला। जइसँ अक-बक बन्न रहैन। मुदा विचारणी से नइ बुझली। बुझली ई जे भरिसक कोनो नमहर चिन्ता बिसवासक चेतनाकेँ चहका रहल अछि। मुस्कुराइत विचारणी बिसवासक मुँह दिस ई सोचि तकैत रहली जे अवोध बच्चा माइक मुस्कीसँ मुस्कुराएत। मुदा बिसवासक मुँह दबल जे छल ओ दबले छल!

दबल मुँह देखि मुस्कियाइत-विचारणी आरो मुस्की भरैत बजली-

“बौआ! जखने अपने ठेकनगर मनुक्खक रस्ता पकैड़ चलबह, तखने एका-एकी जिनगीक ठेकान पबैत जेहब, तइले अनेरे मनकेँ एना दाबि किए मारै छह।”

बिसवास भरल माइक बोल सुनि बिसवास रायक मनमे सेहो बिसवास जगलैन। बिसवास जगिते मनमे उठलैन- जिनगी तँ कियो अपने बना ठाढ़ करैए। कुम्हार जकाँ बनौल शकल-सूरत माइक ओद्रसँ अबै छै, जइमे सभ किछ छै, हाथ-पएरसँ लऽ कऽ बुधि-विवेक धरि।



शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016

त्राहि-कृष्ण

परदेशमे रहै छी। परदेशक माने भेल जैठाम अपन बोली-चाली, खान-पान आ काज-उदेम पर हुअए आ अपन देश भेल जैठाम सभ किछु माने बोली-चाली, खान-पान आ काज-उदेम अप्पन हुअए। ओना, परदेश जाइक कारण भेल पढ़ि-लिखि कऽ बी.ए. पास करब।

..कहब जे पढ़ब-लिखब मनुक्खक उच्चकोटिक गुण अर्जन करब भेल, तँए एकरा कोन मतलब छै अपन देश आकि परदेश आकि दुरदेशसँ? मुदा जइ गाममे जन्म भेल ओइ गामक लोको जँ रहए देत तखन ने। से थोड़े होइए, जखने पढ़ि-लिखि कऽ खेती-पथारी करब कि माले-जाल पोसि जीवन-यापन करए चाहब, आकि कोनो वणिजे-वेपार करब तँ की गामक लोक किचाड़ब छोड़ि देत? ओ तँ किचाड़बे करत किने जे 'पढ़ै फारसी बेचै तेल देखियौ भाय कर्मक खेल!' कहबो केना ने करत, जे काज बिनु पढ़लो-लिखल लोक करैए सएह जँ पढ़ियो-लिखि कऽ लोक करत तखन तँ किचाड़ब उचिते भेल किने। ई दीगर भेल जे पढ़ि-लिखि कऽ लोक ओइ काजकेँ जड़ि-छीप बुझि अपन जिनगीमे अपनबैए जइमे अपन जिनगी चलैत देखैए, मुदा से सभ थोड़े बुझैए। देखो-देखीसँ तँ लोक ओही काजकेँ अपना अपन जिनगी चलैबते अछि, ओ किए ने बाजत।

बी.ए. कऽ छबे मासक पछाइतसँ कलकत्ताक एकटा पटुआ

फेक्टरीमे काज करै छी जेकरा आइ पनरह बर्ख भऽ गेल। परिवारो संगे रखै छी। जाबे माए-बाप जीबै छला ताबे असगरे रहै छेलौं आ जखन दुनू मरि गेला तेकर पछाइतसँ परिवार संगे राखए लगलौं। जेकरो आइ दस बर्खसँ बेसीए भेल हएत। ओना, जाबे परिवार गाममे रहै छल ताबे सालमे दू-बेर-तीन-बेर गाम अबै छेलौं, मुदा जहियासँ परिवार संगे रहए लगल तहियासँ गाम नइ आबि होइए। तेकर कारणो अछि, कारण अछि, जखन अपने छुट्टी होइए तखन चाहे तँ धिया-पुताक परीक्षा रहल आ नइ तँ घरेवाली बेमार रहली। आ जखन ओ दुनू नइ रहल तखन कारखानाक काजमे तेजी रहल, जइसँ छुट्टीए ने भेटैए। ओना, बहुत दिनसँ, माने आइ नअ बर्खसँ, मनमे उठैत रहल जे खुदरा-खानि पाबैन, माने जइ समयमे एकेटा पाबैन पड़ैत हुअए तइमे गाम नइ जाएब आ जइ समय अधिक पाबैन पड़त तइ समय गाम जाएब जे अधिक-सँ-अधिक पाबैनक पाबन पबनौट पाएब। तइ हिसाबे सालक दुइए-टा समय पकड़ाइए, एकटा आसीनक दुर्गापूजा जे रमन्तक पूजासँ भगवतीक विदाइ धरिक अछि, तैसंग पूर्णिमाक कोजगरो अछि। आ दोसर कातिकमे दिवालीसँ छठि धरिक अछि। मुदा दुर्गापूजा-समयमे तँ देश भरिक लोक कलकत्ताक दुर्गापूजा देखए एतै अबैए आ हम कलकत्तामे सालो भरि रहि दुर्गापूजामे गाम चलि जाइ, से नीक नइ बुझि पड़ैए। तँए कातिकेमे दिवालीसँ छठि धरि मनबैले गाम अबैक विचार मनमे पक्का केलौं।

ओना, कल-कारखानामे दिवालीमे उपहारो आ वोनसो भेटै छै, मुदा तइ सभकेँ मनसँ हटबैत पक्का-पक्की विचार मनमे रोपि लेलौं जे ऐबेर गाम जाएब।

दस दिन पहिनेसँ गाम अबैक तैयारी करए लगलौं। धिया-पुता आ पत्नीक संग गाम जाएब तँए आरक्षित टिकट सेहो बनबा लेलौं।

पाबैनक समय छी, तहूमे मिथिलाक छठि, जे बंगालमे नइ होइए, तँए कलकत्तामे अधिकतर रहनिहार गाम जेबे करै छैथ, जइसँ गाड़ीमे बेसी भीड़-भड़क्का भइये जाइए। तँए आरक्षिते टिकट बनाएब जरूरी भेल।

दिवालीसँ तीन दिन पहिने गाड़ी पकैड़ गाम विदा भेलौं। ओना, मनमे होइते रहए जे वोनस तँ पछाइतो लऽ सकै छी मुदा दिवालीक उपहार छूटि गेल..!

बारहे घन्टाक ट्रेनक रस्ता, तहूमे एक्सप्रेश ट्रेन, समैपर दरभंगा पहुँच गेलौं। आब गाड़ी बदलए पड़त। एते दूर बड़ी लाइनक बड़की गाड़ीमे एलौं, आब छोटी लाइनक छोटकी गाड़ीसँ जाएब। तहूमे आरक्षित जगह नहियेँ अछि। पनरह बर्ख पहिलुका मोन पड़ल जे दरभंगासँ चलैवाली गाड़ी तीमन-तरकारीवाली वेपारीसँ तेना भरल रहैए जे डिब्बामे प्रवेशो करब कठिन रहैए, तहूमे तेते ने जेबी टोबनिहारक जमघट रहैए जे सही-सलामत गाड़ीमे बैस कऽ चलबो तँ कठिन अछिए।

मुसाफिर-खानामे दुनू परानी अपनो आ दुनू बच्चो, जाजीम ओछा बैसलौं। ओना, मुसाफिर-खानासँ नीक प्लेट-फार्मे बुझि पड़ल। मुदा मनमे भेल जे जखन दरभंगा आबिये गेलौं, तखन किए ने हराही पोखैरो आ रेडियोओ स्टेशन कनी देखिये ली।

दुनू बच्चो आ पत्नियोँकेँ मुसाफिरे-खानामे छोड़ि अपने एक लपकन टहैल आएब। प्लेटफार्मपर सँ जाइ-अबैमे कनी रूकावट तँ भइये जाइ छइ। मुदा छी तँ दरभंगाक मुसाफिर-खाना, ठेहुन भरिसँ केतौ कम ने चिनियाँ-बदामक खोंइचा आ ने चप-मुरही खेलहा कागज-प्लास्टिकसँ खाली। मुदा दोसर उपाइये की..! ओना, दुनू धियो-पुता आ पत्नियोँ नाकर-नुकर जगह देखि करैत रहैथ मुदा

चारि घन्टा समयो ने बितबैक अछि। बजैकाल तँ लोक ओहिना बाजि दइए जे गाड़ी-सवारी बढ़ने समैयक बँचत होइए, मुदा जैठाम बड़ी लाइनक संग छोटियो लाइन सफर करैक अछि तैठाम जँ गाड़ियोक मिलानी रहत तखन ने, जैठाम गाड़ीक मिलानी नइ रहत तैठाम तँ उचिते ने समयसँ दोबर-तेबर समय खटिएबे करत।

तीनू गोरेकेँ बैसा बीचमे दुनू बैग रखि बजलौं-

“बौआ, तीनू गोरे तीनू-कात तकैत रहब, ई दरभंगा छी, खलिये मुँह तकैत रहि जाएब!”

कहि विदा भेलौं। पोखरिक कोण सीके जखन एलौं कि चाहक दोकान मोन पड़ल। दोकान मोन पड़िते भेल जे किए ने चाहो पीब ली आ अपन पहिलुका चीन्हल-जानल लोकसँ कुशलो-क्षेम कऽ ली। सएह केलौं।

पनरह बर्खक पछाइतो बुधन मण्डलक ओहने दोकान जेहेन पनरह बर्ख पूर्व छल। दोकानक ओलतियेमे पहुँचलौं कि हमरो नजैर बुधन मण्डलपर आ बुधनो मण्डलक नजैर हमरापर पड़लै। ओ धक-मका गेल। धकमका ई गेल जे चिन्हल चेहरा बुझि पड़लै। मुदा छीहो दरभंगाक चाहक दोकानदार, हमरा सन-सन केतेको लोक सभ दिन भेँट होइ छइ। ओना, घरक ठेकान आ दोकानक ठेकानसँ ठेकनबैमे हमरा बाधा नइ भेल, मुदा बुधनक मुँहक ऐगला दुनू दाँत टुटने चेहरा तँ कनी बदैले गेल रहइ। ओना, मनमे ई किए होइत जे गाम-समाजक दरबज्जा छी, जैठाम पहुँचला पछाइत घरवारीक दायित्व बनि जाइत अछि जे दुआरपर आएलकेँ आगू भऽ आदर करिऐन। ई तँ चाहक दोकान छी, चाह पीबू, पाइ दियौ, जाउ। ओना, जेतेक कालमे चाह पीब तेतेक काल दोकानपर बैसबोक अधिकार अछिए।

जहिना हमर नजैर बुधन मण्डलपर गड़ल तहिना बुधनक

सेहो। मुदा किछु छी तँ दोकानदारे ने छी, चालू-पुरजा तँ अछिए। बाजल-

"आउ-आउ, ब्रेंच खाली छै, चाहेटा पीब कि किछु खेबो करब?"

ओना, मनमे ईहो हुअए जे एते जे बुधन आग्रह करैए, से भरिसक चीन्ह गेल। मुदा ई तँ बुझबे ने केलिऐ जे बुधन अपन दोकानदारी छोड़ि दोसर एको शब्द नइ बाजल। तैबीच एकटा जरूर भेल जे दिल्ली जकाँ पएर आकि मुँह-कान धोइले पानि नइ देल जाइत, देल जाइत अछि पीबैले। से बुधनक मनमे नइ आएल, चाहक संग पानि मंगनी बँटिते अछि। पानि देलक।

कहलिऐ-

"चाहेटा पीब।"

पानि पीब चाह पिबए लगलौं कि तखने बुधन टोकलक-

"बहुत दिनक पछाइत देखै छी।"

बहुत दिन सुनिते बजलौं-

"अखन की दर चाह चलबै छह?"

कहलक-

"पाँच रुपैये।"

कहलिऐ-

"अहीसँ हिसाब जोड़ि लहक जे जखन एक रुपैये चाह बेचै छेलह, तहियेक भेँट छी।"

संजोग नीक रहल, एका-एकी गहिंकी झड़ि गेल। खाली दोकान देखि बुधन सेहो लगमे आबि बैसल। होइतो अहिना छै, किएक तँ लोके लग ने बैसबो करत आ बसबो करत। बुधन मण्डल

बाजल- “अखन केतए रहै छी, घरवाली मनगर रखने छी किने?”

धनियाक चटनी जकाँ बुधनक विचार चटगर लागल। ओंगरी चाटि-चाटि जहिना खेनिहार घरवारीकेँ देखबैत जे वौस अहाँ आगूमे देलौं से हम पेटेटामे नइ मनोकेँ चटिया चाट चटा रहल छी, तहिना कहलिऐ-

“सभ किछु ठीकठाक अछि। कलकत्तामे रहै छी।”

‘कलकत्ता’ सुनिते विह्वल होइत बुधन बाजल-

“तब ते बौआ, अहाँ राजधानियेमे रहै छी!”

बुधनक बात नीक जकाँ नइ बुझलौं। ‘राजधानी’ केकरा कहलक। फेर मनमे आएल जे विक्टोरिया समैयक तँ ने बात कहलक। गुनधुनाइत मनमे उठल- की राजधानी?

जहिना धारा-प्रवाह पार्लियामेन्टमे बजैत लोक कखनो रूपेकेँ रुपैआ बना दइए आ कखनो रुपैआकेँ रूपे बना दइए तहिना बुधन बाजल-

“बौआ, रूपेक तँ खेल अछि दुनियाँमे। अहीपर ने रजधानी राजधानी बनैए।”

बुधनक बात सुनि आरो मन घुरिया-फिरिया लगल। मनमे ईहो भेल जे जेतेकाल चाह पीबै छी तेतने काल ने दुनू गोरे एकठाम छी, एना जे मनकेँ वौआएब से नीक नहि। कहलिऐ-

“की रूपेक?”

हमर बात जेना बुधनकेँ नीक लगलै, बाजल-

“बौआ, गरीबक तँ राजधानी कलकत्ता छीहे। कम-सँ-कम पाइमे लोक ओतए बास कऽ सकैए, तँए कहलौं।”

बुधनक एकेटा बात मनकेँ सोलहन्नी हल्लुक बना देलक।

पुछलिऐ- “भाय परिवारमे के सभ छह?”

जेना बुधनक मनक टोइयेपर उत्तर राखल छेलै तहिना टोहिया कऽ बाजल-

“बौआ, गरीब लोकक जिनगी कोनो जिनगी छी जे परिवारक सेखी रहत। जहिना सर-समाजमे देखै छिऐ जे दियाद जकाँ बेटा बापोकेँ बुझैए, तखन मिलानसँ रहत केना। तही समाजमे ने हमहूँ छी। दुनू बेटा अपन-अपन बौहु लऽ लऽ भीन भऽ गेल, तैबीच घरोवाली मरिये गेली, खाली मुदा दोकान तँ बँचल रहल।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“तखन तँ जिनगी अपन हाथेमे रहि गेलह।”

हाथमे पाइ रहने जहिना मौगियाहोकेँ मन तिरपित रहैत, तहिना ने चिड़ै जकाँ परिवारो बनबैक लूरि रहने लोकोक मन तिरपित होइते छइ। तिरपित होइत बुधन बाजल-

“बौआ, कहुना भेलह तँ छोट भाए तुल भेलह, तोरा लग झूठ केना बाजब।”

कहि बुधन थकथका गेल। थकथकाइत बुधनकेँ देखि टोकारा दैत कहलिऐ-

“भाय, तखन तँ तूँ जे एते करैत ठाढ़ छह, से तोरे धन्यवाद दी।”

एक तँ बुधन दुनू परानी चाहेक दोकानक बीच तइमे बुधनक बधाइ सुनि पत्नी बधैया तालमे नजैर मिलौली। जे बुधन देखि गेल। तीनू गोरेक जिनगीक नजैर मिलानी होइते बुधन बधैत तालमे बाजल- “बौआ, बेटो आ पुतोहुओकेँ कहि देलिऐ जे अपन जिनगी सम्हार। जँ बहुए लऽ लऽ नचमेँ तँ नाच! हमहूँ बिआह कऽ कऽ देखा

देलिऐ।"

गपे-सप्पमे केना समय बीत गेल, से बुझबे ने केलौं। घड़ी देखलौं तँ निरमलीवाली गाड़ीक समय भऽ गेल। उठि कऽ ठाढ़ भेलौं तँ मोन पड़ल जे हराही पोखैर आ रेड़ियो स्टेशन तँ छूटि गेल। पहिनहि जकाँ हराहीक दशा अछि आकि किछ नीको भेल? तहिना रेड़ियोओ स्टेशनमे ओहिना अपन भाषा छोड़ि आने भाषाक रामायण चलैए आकि अपनोकेँ अपनौलक?

उठला पछाइत जँ हराही दिस आगू बढ़ितौं तँ गाड़ीए छूटि जाइत तँए बुधनेक चाह पीब घूरि कऽ मुसाफिर-खाना पहुँचलौं। तहीकाल दिल्ली-दरभंगाक गाड़ी सेहो पहुँचल। जहिना चढ़निहार तहिना उतरनिहारक भीड़ लगि गेल। मुदा रस्तासँ हटि कऽ जामीज बिछौने रही तँए रेड़ामे नइ पड़लौं। मनमे रहबे करए जे निरमली-दरभंगा छोटी लाइन छी, गाड़ियो छोटकीए छी। अहीठामसँ गाड़ीक इन्जिनो घुमत आ गार्डो-ड्राइवर बदलत, तँए समय लगबे करतै। मुदा बिच्चेमे गेटपर हल्ला भेल। हल्ला भेल जे एक गोरेकेँ ऊपरका जेबीमे दस हजार रुपैआ आ नोकरीक परिचय पत्र रहै, से कियो निकालि लेलकै। आब की पनरह साल पहिलुका दरभंगा छी, जे दसटा गनल पौकेटमार छल, जेकरा लोको चिन्है छेलै आ रेल-पुलिस सेहो चिन्है छेलै, तँए प्लेटफार्मपर देखिते दुनू सर्तक भऽ जाइ छल। आब से समय बदैल गेल। तँए बुझब आ चेतब तँ कठिन भइये गेल अछि। मुदा जेकर पॉकेट मराएल रहै से होशियार, होशियारीसँ बाजल-

"भाय, रुपैआ लेलह तँ लेलह मुदा परिचय-पत्र घुमा दएह, नइ तँ महिना दिन परेशान हुअ पड़त।"

पॉकेटमारो अपन जान जानि कऽ टौहकीमे केना फँसा लेत। परिचय पत्र देत आ रुपैआ लेत, से सम्भव अछि। दुनू दिसक माने

पुलिसक संग यात्रियोक घूसा-चमेटा के बाँटि लेतइ। हँ, ई सम्भव अछि जे जइ ऑफिसमे काज करैए, तइ ऑफिसक खिड़की देने साँझू पहर फेक औत। किए ओइ वेचाराकेँ परेशानी बढ़तै आ किए अपने बढ़तै। ओकरो जान बँचतै आ एकरो कमाइ हेतइ।

भीड़ छँटल, गाड़ीमे जा बैसलौं। मुदा गाड़ीक कोठरी खाली जकाँ बुझि पड़ल। खाली डिब्बा देखि बगलमे बैसल यात्रीकेँ पुछलिऐ-

“गाड़ीमे भीर कम बुझि पड़ैए?”

यात्री बाजल-

“अनेको रंगक सवारी बढ़ने गाड़ीक भीड़ कमि गेल। ट्रेनक यएह दशा छै जे दिनमे दुइए बेर चलैए। आब लोककेँ एते पलखैत छै जे चरि-चरि घन्टा बैसल रहत।”

अपन भोगल समय छल, की बैजतौं मुड़ी डोला बात मानि लेलौं। गाड़ी खुजल मुदा गाड़ीक रफ्तार तेज बुझि पड़ल। तेकर कारणो भेल जे कोयलाबला इंजन बदैल कऽ डीजलबला भऽ गेल अछि। मुदा डीजलबला इंजन भेनौं की हएत, स्टेशनक बीच दू-चारि बेर सिकैड़ खींच रोकल जाइते छइ। रोकलो केना ने जाए, स्टेशनसँ उतैर दस-बारह किलोमीटर पएरे चलबक तँ सुविधा भऽ जेतइ। खाएर जे भेल से भेल, तीन बजे तरगर राति कहियौ आकि तीन बजे बड़का भोर, अपना टीशनपर पहुँचलौं। ओना, स्टेशनमे बिजली लगि गेल अछि मुदा इजोतक पता नइ, प्लेटफार्मक पाछू, कतवाहिमे दसटा मघैया डेरा खसौने, बाँकी स्टेशन सून-मसान।

कोस भरि गाम अछि, एक तँ कातिकक कृष्णपक्ष तिरियोदशीक अन्हार, तैपर शीत-ओस तेना कऽ झँपने जे हाथोकेँ हाथ नइ देखि पबैत। जहिना हाथकेँ हाथ नइ देखि पबैत तहिना

पएरोकेँ पएर नइ देखि पबैत! जखन अपने देह अपने ने देखि पड़ैत तखन धरतीपर पएर रोपि डेग उठाएब धिया-पुताक खेल नइ ने छी।

ओना, तिरियोदशीक रातिक भोर भेने मेघोमे लाली पसरए लगल आ हँसुआ जकाँ चान सेहो उगि गेल। मुदा तैयो तँ अन्हार पसरले रहइ। पत्नी बजली-

“अनभुआर रस्ता अछि तँए कनी नीक जकाँ फरीच हुअ दिऔ, तखन रस्ता काटब।”

अपनो मन मानि गेल, ताबे टीशनक बगलक चाहो दोकान खुजि गेल, लोकक आवाजाही सेहो शुरू भेल। प्लेटफार्मेपर भोरुक काज शुरू केलौं। माने मुँह-कानमे पानि लेलौं।

सुर्ज नइ उगल छल, मुदा साफ भऽ गेल छेलै, भिनसुरका गाड़ी पकड़ए आनो-आनो गामक लोक आबए लगल, मन भेल जे सवारी कऽ लइ छी, मुदा फेर पैछला दस साल-पहिनेक रस्ता मोन पड़ल। केतौ रोडक पजेबा उखड़ल तँ केतौ रस्तेपर खेत पटबैबला पट बनल। एहेन रस्ताक राही-ले तँ पएरे चलब नीक। भाय, जिनगियो तँ सएह ने छी जे जहिना एक दिस राज-जोग तँ दोसर दिस वन-जोगक सुआद एके रंग बुझि पड़ैत। पएरे गाम विदा भेलौं।

दू सालक रौदियाह समय। ओना, उन्नैस साए सरसैठक रौदी जकाँ समय नइ छल, मुदा जिनगीक हिसाबसँ एके दुखमे सेहो कमी-बेसी भइये जाइए, तँए रौदी तँ छोट छल मुदा लोकक मन सरसैठियेक रौदीक जकाँ रौदियाह जरूर भऽ गेल अछि। कातिक मास रहितो माने जइ मासमे ओस-कण दुबिक टोइयापर चमकैत, असनान कएल जकाँ सूर्जक ताप रहैत, पानि पीअल पथिक जकाँ धरतीक मन प्रफुल्लित रहैत, धानक शीशपर ओसक टीका चढ़ल रहैत, जइसँ कैतकी जेठुआ जकाँ पथराएल माटि, सुखाएल सरोवर,

उजरल घर जकाँ गामक-गाम खेत-पथार देखि कऽ मन लहैस गेल। मनमे उठल- एहेन समयमे गामक दिवालीसँ छठि धरिक पाबैन केहेन हएत? जखन गामक पाबैनियेँ मरण-मुँह रहत तखन अपन पाबैन केहेन हएत? मन खसि पड़ल।

गाम पहुँचलौं। आइ अन्हारक चतुरदशी छी, काल्हि दिवाली हएत। पनरह कातिककेँ अमवसिया। अपन घर तँ ढहिये-ढनमना गेल छल, मुदा छप्पर ऊपरमे ठाढ़ छल। कुत्ता, बिलाइक धरमशाला जकाँ अँगना-घर भऽ गेल छल। मुदा जेना भदवरिया खढ़-पात अँगना-घरकेँ छाड़ने रहैए तेना नइ छल। ओना, रहैक जोगार कलकत्तेसँ केने आएल छी। दस फीटक प्लास्टिकबला टेन्ट, दूटा बचकानी आ दूटा सियानी कुरसी सेहो नेने आएल छी। कोनो कि गाममे रहैले आएल रही जे ठठगर घर आ बटगर जिनगीक जरूरत पड़त। ओना, समाज-ले दू किलो दार्जिलिंगक चाह पत्ती सेहो अनने रही। भाय, किछु तँ गाम छी किने, शहर-बजार थोड़े छी। एतए जँ मघैयो डोम आकि नटो-बखो आबि डेरा खसबैए, तेकरो देखैले गामक दसटा धिया-पुता पहुँचिये जाइए, तैठाम तँ हम गामेक दस बर्ख पहिलुका लोक छी। बीचमे जे जनमल हएत से भलेँ नइ चिन्हए, मुदा पहिलुका लोक नइ चिनहत से बात तँ नइए।

ओना, दियादियोक परिवार कम नइ अछि, झमटगर अछि। जइसँ केते विधो-बेवहार टुटि गेल। सालमे दस-बीस गोट बुढ़-पुरान मरबे करै छैथ। नवतुरिया सभ दिन अशौचैक केश-कट्टी करौने रहत से नीक थोड़े लगतै, तँए सराधक भोज तँ खेबे करत, मुरदा जाइर नहेबे करत, मुदा केश नइ कटाएत। जखन केश नइ कटाएत तखन नहेक कोन दोख छइ।

बारह बजेक पछाइत छीतन भाइक पत्नीकेँ प्रसव पीड़ा शुरू भेलैन। शुरूक डेढ़ दू घन्टा तँ कोनो हलचली परिवारमे नइ उठलैन,

पलहैन आबि प्रसवक पीड़ाकेँ टटोइल रहल छेली, अखन तक कोनो अशुभ नइ बुझि पाबि रहल छेलैन। भाय शुभेमे शुभो होइए आ अशुभो होइते-ए। सही-सलामत प्रसव पीड़ाक पछाइत शीशु-जन्म होइए, ई शुभ भेल, आ कोनो कुसंजोग भेने जखन वएह डॉक्टर-वैद, ओझा-गुनीक भाँजमे पड़ि जाइए तखन अशुभक संभावना सेहो जनमए लगैए।

संजोग नीक रहल, एक-पहर समय लगला पछाइत बालक शिशुक जन्म भेल। ओना, छीतन भाय तीन मास जेठ छैथ, लगेक दियादी माने सहोदरे पितिऔत सेहो छैथ। घराड़ी दुआरे पहिलुका घराड़ीपर सँ हटि दोसरठाम घर लऽ जा बसल छैथ। जहिना लगेक दियाद छैथ तहिना लगेक साढ़ू सेहो छैथ। दुनू गोरेक बिआह एके गामक एके परिवारमे जहिना गामक दियादीमे अछि तहिना अछि। मुदा जहिना छीतन भाय तीन मास भैयारीमे जेठ छैथ तहिना अपन पत्नी छीतन भाइक पत्नीसँ दू मासक जेठ छैथ। ओना, दुनू दिससँ जहिना घाटा छीतन भायकेँ छैन तहिना दुनू दिससँ नफगर छीहे, मुदा छी तँ एके परिवारमे, तँए घाटा-नफ्फा बरबैर बुझै छी।

जखन पत्नीक कानमे बहिनक प्रसव-समाचार पहुँचलैन तखने दुनू बच्चाक भार सुमझा बहिन लग चलि गेली। जे दू घन्टाक पछाइत आपस आबि बहिन-बेटाक जन्मक समाचार कानमे देली। तैबीच गामक चुहचुही दिस देखए लगलौं। अदहासँ बेसी गाछ-बिरीछ सुखियो गेल आ सुखियो रहल अछि! केतेक पतझाड़क अवस्थामे तँ केतेक निपुआंग सुखि गेल। जे आसीन-कातिक शारदीय मास कहबैए, से जेठुआ खढ़ मास जकाँ लगि रहल अछि। एक तँ उम्मसक समय, दोसर हवो एना गरमा गेल जेना साल भरिसँ पानि नइ पीने हुअए।

चारि बजि गेल। मनमे भेल जे एक चक्कर गाम घुमि ली। मुदा लगले मनकेँ मन मनाही केलक जे जखन दियादी परिवारमे बच्चा-जन्मक अशौच पसैर गेल अछि तखन बिना शुद्ध भेने गाम घुमब नीक नइ। तहूमे जखने गाम दिस विदा हएब तखने बाध-सँ-वोन धरि आ चास-सँ-बास धरि समाज भेटबे करता, तैठाम अशौचक अवस्थामे नीक नइ हएत। अखन तँ एतबे नीक हएत जे छीतन भाय ऐठाम पहुँच खाली जीगेसे नइ किछु काल ओगरवाहि कऽ दिऐन जे परिवारक लोककेँ कनी मदैत भेटैन।

गाममे आइ दिवाली छी, मुदा अपना दियादी-परिवार छोड़ि कऽ छुटैक कारण दियादीक अशौच अछि। भिनसुरका आठ बजेक समय। चाह पीब, पान खाइते नजैर गाम दिस टहैल गेल। दिवालीक दिन छी केते गोरे कोठेपर दीप सजौत, केते गोरे फुसि घरक दुआरे धरतीपर। कियो इनार-चापाकल-पोखरिक घाटपर दीप जरौत तँ कियो, घैल-घैलचीक बासपर। मुदा अपने केतए जराएब, प्लास्टिक टेन्टपर? जँ कहीं ऊपरेमे, छज्जीएपर, आकि निच्चे कील लग दीपक आगि पकैड़ लेत, तखन तँ नीचाँ-ऊपर दुनू चलि जाएत! भने बैटरीबला लाइट अनने छी, पाँचोकेँ पाँचो कोणपर लेस देबइ। दीपेटा तँ नइ, लक्ष्मी-पूजा सेहो तँ छी ने? से? हँ, दुनू लक्ष्मीक पूजा माने लक्ष्यक पूजा छी, मन-लक्ष्मी सेहो धन-लक्ष्मी सेहो..।

..अपना ऐछे कथी जे धन-लक्ष्मी पूजा करब? तखन तँ मन-लक्ष्मीक बुझल जाएत। जहिना दिनक लगले अस्त भेला पछाइत घर-दुआर, पोखैर-इनार लोक दीप सजबए लगैए तहिना ने दोसर पहर रातिमे कालीक पूजा सेहो करबे करत। से? जखने साँझक लक्ष्मी दिवा रातिक दीपक बाती बनि जरत तखने दिवालीक दीप प्रज्ज्वलित रहत।

अशौचक दुआरे जइ उदेससँ कलकत्ता छोड़ि एलौं, से पूर भेल की नइ भेल, मुदा समाजक दीप तँ अखनो वएह कहैए जे अखनो हम त्राहि-कृष्ण करै छी। जँ से नइ छी, तखन सामाजिक सरोकार केहेन अछि आ कोन दिस भागल जा रहल अछि? की ओइ भगबैमे हमहूँ छी की नइ?

मन मानि गेल जे जइ विचारसँ गाम आएल छी से जँ सोलहन्नी नइ तँ चौअन्नियोँ-अठन्नी पूर भेबे कएल। दिवालीसँ छठि धरि देखैले आएल छेलौं। आइ नवम दिनो छी, बेरुका गाड़ी पकैड़ लेब।



शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016

Notes